सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 349, नई दिल्ली । मंगलवार, 25 फरवरी 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अपने मिशन में सफल होने के लिए आपको अपने लक्ष्य के प्रति एक चित भाव से समर्पित होना पड़ेगा।

03 "आप" विधायकों ने सदन में नारेबाजी कर डॉ. अंबेडकर और शहीद भगत सिंह की फोटो दोबारा....

06 उन्नत तकनीक और भविष्य की खेती

08 आर्ट निर्भर भारत: कला और संगीत के उत्थान का अनूठा मंच

परिवहन आयुक्त द्वारा जल्द ही जारी होगा एक्सटेंशन पत्र, जाने किसको और क्यों ?

संजय बाटला

नई दिल्ली। पिछले कई महीनों से आप अलग अलग माध्यम से सुनते आ रहे होंगे की दिल्ली में 4 नए एटीएस की टैंडर प्रगति पर है और साथ ही पिछले कई सालों से झूलझूली वाहन जांच शाखा का टैंडर प्रगति में है। **कितनी प्रगति में यह आप भी जाने** पिछले कई सालों से लगातार किसी ना किसी बहाने से टैंडर रद्द दिखाया जाता रहा है और इस कारण से **झूलझूली के वाहन जांच शाखा में कार्यरत कंपनी का एग्रीमेंट खत्म होने के बाद भी फाइल में यह प्रस्तुत कर की अभी तक किसी अन्य कम्पनी को टैंडर / काम जारी नहीं हो पाया इसलिए इसी कंपनी को एक्सटेंशन जारी किया जाए"** और परिवहन आयुक्त टैंडर खत्म हुई कंपनी को एक्सटेंशन जारी कर देते हैं। **अब सवाल यह उठता है की जहां सरकारी जमीन पर कोई टैंडर नहीं ले पा रहा तो उस राज्य में अपनी जमीन वह भी कमर्शियल कैटेगरी और साथ ही डेढ़ एकड़ पर कैसे कोई टैंडर प्राप्त कर पाएगा** फिर दिखावे वाले अन्य चार एटीएस सैंटर क्या दिल्ली में संभव वह भी ऐसे परिवहन आयुक्त के होते। जो **सिर्फ एक कंपनी को फायदा पहुंचाने के उद्देश्य से ना सिर्फ बार बार एक्सटेंशन प्रदान करता आ रहा हैं अपितु क्षमता से अधिक वाहनों की जांच के आदेश भी कर फायदा पहुंचवा देता हैं। अब यह जांच का मुद्दा बन चुका हैं**

और दिल्ली सरकार को तत्काल प्रभाव से इस मुद्दे पर किसी निष्पक्ष एजैंसी (सीबीआई) से इसकी जांच करवानी चाहिए। इस जांच की आवश्यकता इसलिए भी है **क्योंकि बुराड़ी वाहन जांच शाखा में परिवहन विभाग के अपने परिसर में ही एटीएस की पैक कई नई मशीनें पड़ी सड़ रही हैं और उसको लगाने के लिए अनिवार्य स्थल पिट भी बिलकुल तैयार है और विभाग के पास इसके लिए अनिवार्य स्टाफ और अधिकारी भी विभाग में उपलब्ध हैं फिर बाहरी कंपनी को एक्सटेंशन देकर फायदा क्यों ?**

जनहित में **दिल्ली सरकार, मुख्य सचिव और उपराज्यपाल दिल्ली को तत्काल प्रभाव से परिवहन आयुक्त द्वारा जारी सभी गैर कानूनी आदेशों की निष्पक्ष जांच के आदेश जारी करने चाहिए।**

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

दिल्ली से नोएडा तक चलेगी वॉटर टैक्सी; नदी की सफाई पर भी जोर

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली के साथ अब NCR वालों के लिए भी खुशखबरी है। एनसीआर प्लानिंग बोर्ड यमुना नदी में वॉटर टैक्सी चलाने की योजना बना रहा है। दिल्ली से नोएडा तक चलने वाली इस वॉटर टैक्सी का रूट मदनपुर खादर से लेकर आईटीओ तक होगा। इस प्रोजेक्ट से नदी की सफाई भी होगी। इस आर्टिकल में पढ़ें पूरी खबर।

नई दिल्ली। एनसीआर प्लानिंग बोर्ड (एनसीआरपीबी) यमुना में वॉटर टैक्सी चलाने की योजना बना रहा है। बोर्ड ने यह प्रस्ताव एनसीआर के अंतर्गत आने वाले राज्यों के सचिवों से बैठक में रखा है। बोर्ड के अनुसार, दिल्ली से नोएडा तक चलने वाली इस वाटर टैक्सी का रूट मदनपुर खादर से लेकर आइटीओ तक होगा और उसी के अनुरूप वाटर टैक्सी स्टेशन बनाए जाएंगे।

एनसीआर प्लानिंग बोर्ड के अनुसार, दिल्ली के मदनपुर खादर, निजामुद्दीन, आइटीओ और फिल्म सिटी नोएडा तक वाटर टैक्सी के लिए स्टेशन बनाए जाएंगे। इसके लिए अंतर्देशीय जल परिवहन विभाग (आईडब्ल्यूएआई) को प्रस्ताव दिया गया है। इसके तहत यह वॉटर टैक्सी यमुना में 20-25 सवारियों को लेकर एक जगह से दूसरी जगह तक जाएगी।

वॉटर टैक्सी चलाने के लिए एक से 1.2 मीटर जल स्तर की जरूरत

बैठक के दौरान हुई चर्चा को लेकर एक अधिकारी ने बताया कि यमुना में वॉटर टैक्सी चलाने के लिए एक से 1.2 मीटर जल स्तर की जरूरत होगी। उन्होंने कहा कि दिल्ली में यमुना

नदी पर वॉटर टैक्सी के लिए ना सिर्फ रिवर फ्रंट बनवाने की जरूरत है, बल्कि परिवहन और टूरिज्म के लिए भी इसे सहज बनाने की जरूरत पड़ेगी।

अधिकारी ने बताया कि वॉटर टैक्सी शुरू करने से पहले दिल्ली से लेकर नोएडा तक पानी का सर्वेक्षण और उसके ट्रैफिक का अध्ययन करना होगा। बता दें कि दिल्ली में चुनावों के दौरान भाजपा ने यमुना नदी को साफ करने का वादा किया था। इस प्रोजेक्ट के प्रस्ताव को नदी को साफ करने के वादे की ओर पहले कदम की तरह देखा जा रहा है।

तत्कालीन आप सरकार से नहीं मिला था सहयोग

दिल्ली की यमुना नदी में वॉटर टैक्सी चलाने के प्रोजेक्ट से नदी की सफाई भी हो जाएगी। एनसीआरपीबी ने आईडब्ल्यूएआई से इस योजना की विस्तृत जानकारी मांगी हैं। साथ ही विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार करने के लिए भी कहा गया है।

यहां यह भी उल्लेखनीय है कि पूर्व में केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी और एलजी वीके सक्सेना भी इस तरह की पहल के लिए प्रयास कर चुके हैं, लेकिन तत्कालीन आप सरकार का सहयोग नहीं मिलने के कारण योजना आगे नहीं बढ़ सकी थी।

वहीं, चुनाव आचार संहिता लगने से पहले एलजी ने डीडीए (DDA) को यमुना पर रोप-वे, केबल-वे विकसित करने के लिए जगहों का सर्वे करने और इसे चिन्हित करने की प्रक्रिया शुरू करने का निर्देश दिया था। केबल कारों के माध्यम से यात्रियों को यमुना के एक ओर से दूसरी तरफ ले जाया जाएगा।

मोहल्ला क्लीनिक के बाद अब 'मोहल्ला बस' का नाम बदलने का कर रही विचार दिल्ली सरकार

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली की भाजपा सरकार मोहल्ला क्लीनिक के बाद अब मोहल्ला बसों का नाम बदलने पर विचार कर रही है। आप सरकार ने मोहल्ला बसों के नाम से छोटी बसें चलाने की योजना बनाई थी लेकिन सत्ता में आने के बाद भी ये बसें सड़कों पर नहीं उतर पाईं। अब भाजपा सरकार इन बसों का नाम बदलकर इन्हें सड़कों पर उतारने की तैयारी में है।

नई दिल्ली। मोहल्ला क्लीनिक का नाम बदलने के बाद दिल्ली की भाजपा सरकार मोहल्ला बसों का नाम बदलने पर विचार कर रही है। आप ने मोहल्ला बसों के नाम से दिल्ली में छोटी बसें चलाने की योजना बनाई थी, मगर आप सरकार इस योजना के तहत नई बसें सड़कों पर नहीं उतार पाई।

इस योजना के तहत 150 बसें आ चुकी हैं जो पिछले तीन महीने से कुशक नाला बस डिपो में खड़ी हैं। ये बसें दिल्ली विधानसभा चुनाव की अधिसूचना की घोषणा के पहले ही आ चुकी थीं, मगर उस समय की आप सरकार लाख कोशिशों के बाद भी इन्हें सड़कों पर नहीं उतार सकी, इसका एक कारण सत्ता में उस समय के नेताओं और अधिकारियों के बीच तालमेल ना होना भी रहा था।

यह सब चल रही रहा था कि तब तक दिल्ली में विधानसभा चुनाव की अधिसूचना लग गई थी। भाजपा के सत्ता में आ जाने से अब अब इनके संचालन का रास्ता साफ होने की उम्मीद है।दिल्ली सरकार से जुड़े आधिकारिक सूत्र ने कहा कि इन बसों का नाम जल्द ही तय कर लिया जाएगा।

लास्टमाइल कनेक्टिविटी के मामले में दिल्ली वालों को जल्द राहत मिलने जा रही है, क्योंकि दिल्ली की सड़कों पर 150 मोहल्ला बसें उतरेंगी। ये बसें कुशक नाला डिपो में खड़ी हैं। इस डिपो में नौ मीटर वाली लो फ्लोर इलेक्ट्रिक मोहल्ला बसों की पहली खेप आ चुकी है।

ऐसे भीड़भाड़ वाले इलाके जहां 12 मीटर की बड़ी बसें नहीं जा सकती हैं वहां ये मोहल्ला बसें चलेंगी। ये न केवल लोगों के समय और पैसे की बचत करेंगी, बल्कि उन्हें आटो रिक्शा लेने या अपने गंतव्य तक पहुंचने के लिए कई बस रूट बदलने की आवश्यकता को भी समाप्त कर देंगी।

वैसे ट्रांसपोर्ट की समस्या के लिए 2025 के आखिर तक दिल्ली की सड़कों पर 2,140 बसें उतरेंगी। ये सभी बसें पूरी तरह वातानुकूलित हैं। बस पैनिक बटन, सीसीटीवी और जीपीएस से लैस है। एक बार की चार्जिंग के साथ ये बसें 200 किमी तक चल सकती हैं।

मोहल्ला बसों की विशेषताएं

मोहल्ला बस में 196 किलोवाट की कुल क्षमता वाले छह बैटरी पैक हैं, जो 45 मिनट की चार्जिंग में 200 किमी तक चलती है। नौ मीटर की इन मोहल्ला बसों में 23 सीटें बैठने वाली और 13 यात्रियों के खड़े होने की क्षमता है। इन बसों का रंग हरा होगा। मोहल्ला बसों में 25% सीटें (6 सीटें) गुलाबी रंग की हैं, जो विशेष रूप से महिला यात्रियों के लिए आरक्षित हैं।

16 डिपो बन रहे

पूर्वी जोन
गाजीपुर डिपो में 60 बसें
ईस्ट विनोद नगर में 180 बसें
पश्चिम जोन
द्वारका मुख्य डिपो में 40 बसें
द्वारका सेक्टर-दो डिपो में 180 बसें
केशोपुर डिपो 180 बसें
पीरागढ़ी डिपो में 135 बसें
शादीपुर डिपो में 230 बसें
द्वारका सेक्टर नौ डिपो में 20 बसें
दक्षिण जोन
कुशक नाला डिपो में 350 बसें
अंबेडकर नगर डिपो में 180 बसें
उत्तरी जोन
मुंडका डिपो में 60 बसें
नांगलोई डीएमआरसी में 60 बसें
नांगलोई डीटीसी डिपो में 180 बसें
रिठाला डिपो में 70 बसें
कोहाट एन्क्लेव डिपो में 35 बसें
नरेला बस डिपो में 180 बसें

एमपी से महज 6-6 घंटों में दिल्ली, मुंबई पहुंचने का सपना अभी अधूरा, जानिए कब पूरा होगा एक्सप्रेस वे

परिवहन विशेष न्यूज

एमपी की राजधानी भोपाल में ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट का आयोजन किया जा रहा है। 24 और 25 फरवरी की इस दो दिवसीय समिट में भारत के साथ दुनियाभर के देशों के हजारों उद्योगपति और प्रतिनिधि शामिल हो रहे हैं। सोमवार को पीएम नरेंद्र मोदी ने समिट का शुभारंभ किया। इस मौके पर उन्होंने दिल्ली मुंबई एक्सप्रेस वे दिल्ली मुंबई एक्सप्रेस वे का खासतौर पर जिक्र किया। उन्होंने कहा कि देश के दो महानगरों को जोड़नेवाले इस एक्सप्रेस वे का खासा हिस्सा एमपी से गुजरता है। पीएम ने यहां लाजिस्टिक सेक्टर की ग्रोथ तय होने की बात भी कही। हालांकि दिल्ली मुंबई एक्सप्रेस वे दिल्ली मुंबई एक्सप्रेस वे का निर्माण पूरा होने में अभी लंबा वक्त है।

नई दिल्ली। दिल्ली मुंबई एक्सप्रेस वे दिल्ली मुंबई एक्सप्रेस वे एमपी के तीन जिलों से होकर गुजर रहा है। देश का यह सबसे लंबा एक्सप्रेस वे, मध्यप्रदेश के रतलाम, मंदसौर और झाबुआ जिलों को जोड़ रहा है। झाबुआ में एक्सप्रेस वे की लंबाई 50.5 किलोमीटर है जबकि रतलाम में 91.1 किलोमीटर है। मंदसौर जिले में दिल्ली मुंबई एक्सप्रेस वे 102.8 किलोमीटर लंबा है।

दिल्ली मुंबई एक्सप्रेस वे दिल्ली मुंबई एक्सप्रेस वे का निर्माण पूरा हो जाने के बाद दिल्ली से मुंबई का सफर 12 घंटे में तय होने का दावा किया जाता है। खास बात यह है कि एमपी के रतलाम से तो इस एक्सप्रेस वे से दिल्ली और मुंबई महज 6—6 घंटों में पहुंचा जा सकेगा। हालांकि दिल्ली मुंबई एक्सप्रेस वे दिल्ली मुंबई एक्सप्रेस वे का निर्माण पूरा होने में अभी लंबा वक्त है। इसके निर्माण की समय सीमा 2 साल और आगे बढ़ गई है।

दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस वे दिल्ली मुंबई एक्सप्रेस वे का एमपी का हिस्सा तो पूरा हो चुका है पर अन्य राज्यों में काम की गति धीमी है। एमपी के अलावा एक्सप्रेस वे दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र से गुजरेगा। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने हाल ही में NHAI अधिकारियों के साथ प्रोजेक्ट की समीक्षा की। उन्होंने एक्सप्रेस वे का निर्माण कार्य जल्द पूरा करने को कहा है।

बताया जा रहा है कि गुजरात में काम बहुत धीमा चल रहा है। यहां 87 किमी की लंबाई का एक्सप्रेस वे बनना है जिसे तीन हिस्सों में बनाया जा रहा है। इसमें 35 किमी के एक हिस्से में कोई काम नहीं हुआ है। गुजरात के दो अन्य हिस्सों में भी सिर्फ 7% और 35% ही निर्माण पूरा हो सका है।

एनएचएआई के स्थानीय अधिकारी इस मामले में चुप्पी साधे हैं पर सूत्र बताते हैं कि दिल्ली मुंबई एक्सप्रेस वे का काम 2027 के पहले पूरा होना संभव नहीं है। सूत्रों का कहना है कि हरियाणा में निर्माण कार्य करीब पूरा हो गया है। महाराष्ट्र में भी 2025 के अंत तक काम पूरा हो जाएगा। राजस्थान में मार्च 2026 तक निर्माण पूरा हो सकता है लेकिन गुजरात का 35 किलोमीटर वाला हिस्सा 2027 तक ही पूरा हो सकेगा।

बता दें कि 1382 किलोमीटर लंबा दिल्ली मुंबई एक्सप्रेस वे प्रोजेक्ट करीब एक लाख करोड़ रुपए का है। इसे मार्च 2024 में पूरा करने का लक्ष्य रखा गया था जिसे बाद में अक्टूबर 2025 कर दिया गया। अब दिल्ली मुंबई एक्सप्रेस वे का निर्माण पूरा होने में 2 साल और लगेंगे यानि 2027 तक ही यह तैयार होगा। इस प्रकार रतलाम से दिल्ली और मुंबई 6-6 घंटों में पहुंचने का सपना पूरा होने में भी अभी कम से कम 2 साल और लगेंगे।

दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस वे दिल्ली मुंबई एक्सप्रेस वे का एमपी का हिस्सा तो पूरा हो चुका है पर अन्य राज्यों में काम की गति धीमी है। एमपी के अलावा एक्सप्रेस वे दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र से गुजरेगा।

Stock Image

रेवती नक्षत्र में जन्मे जातक का स्वभाव, कैरियर, रोग और उपाय

ज्योतिषाचार्य पं योगेश पौराणिक

हमारे नक्षत्र मंडल का आखरी नक्षत्र रेवती है। यह 32 तारों का समूह है जो मृदंग की आकृति के समान दिखाई देता है। रेवती नक्षत्र का योग तारा मंद कांतिवृत के समीप होने से धुंधला दिखाई देता है। रेवती शब्द का अर्थ है धनाढ्य या प्रतिष्ठित। अष्ट लक्ष्मी में जो योग लक्ष्मी है उनका संबंध रेवती नक्षत्र से ही है। रेवती नक्षत्र के नक्षत्रपति बुध ग्रह तथा अधिपति देवता पूषा(पोषण करने वाला) है। रेवती एक सात्विक नक्षत्र है । तीसरे तृतीयांश का अंतिम नक्षत्र होने के कारण रेवती को गंड मूल संज्ञक नक्षत्र माना गया है।

स्वभाव : रेवती नक्षत्र में जन्मा जातक दृढ निश्चयी, आस्थावान, धैर्य धारण करने वाला, उत्साही, आशावान, सद्गुणी, परिश्रमी, अतिभावुक, सौम्य, विनम्र, मिलनसार तथा संवेदनशील होता है। विद्वानों ने इस नक्षत्र के जन्मे जातक को पुष्ट देह वाला, शूरवीर, धनी तथा भाग्यशाली बतलाया है।

कैरियर : रेवती नक्षत्र में जन्मे जातक कलाकार, अभिनेता, चित्रकार, बस सेवा, वायु सेना, ज्योतिषी, कथावाचक, प्रबंधक, सड़क निर्माण अधिकारी, जल सेना, जल व्यापार, ड्राइवर, सुरक्षा कर्मी, पुलिस, सेना, रत्न व्यापारी आदि के क्षेत्र में कैरियर बनाकर सफलता प्राप्त करते है।

रोग : रेवती नक्षत्र में जन्मे जातकों को जुखाम, सर्दी, खांसी, छाती से सम्बन्धित रोग, वायरल फीवर, जोड़ो में दर्द, वात पीड़ा, मतिभ्रम, बहरापन आदि रोगों से जूझना पड़ सकता है।

उपाय : रेवती नक्षत्र में जन्मे लोगो को सभी प्रकार के अनिष्टों से मुक्ति हेतु भगवान विष्णु की पूजा करना चाहिए तथा गुरुवार का वृहस्पति देव का व्रत करना इन्हे सर्वथा लाभकरी सिद्ध होता है। ऐं बीज मंत्र का जाप करना इनके लिए कल्याणकारी होता है। आसमानी नीला तथा हल्का पीला रंग इनके लिए भाग्यशाली सिद्ध होता है।

बुजुर्ग प्याज को फोड़ कर ही क्यों खाते थे ?

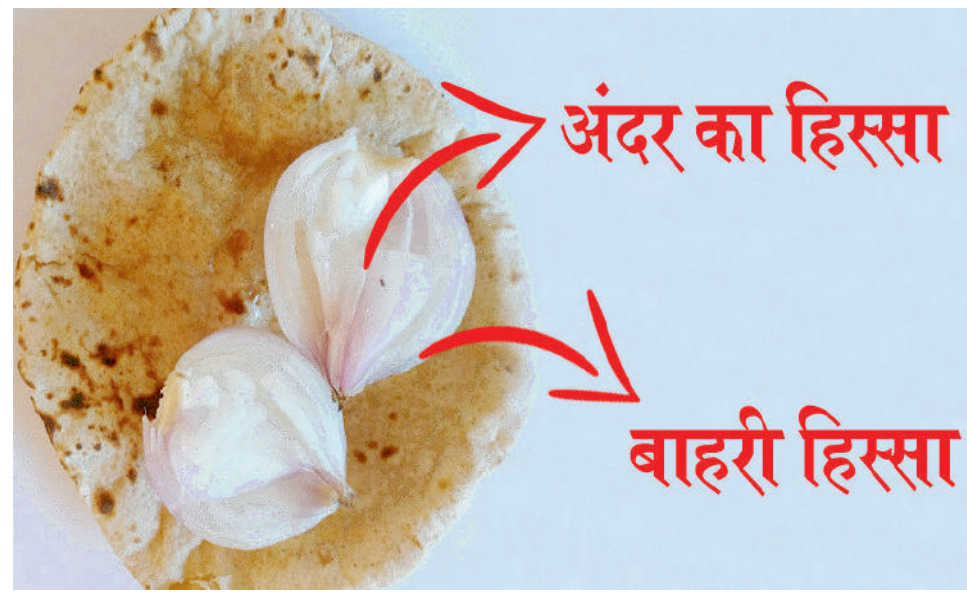

क्या आपने कभी खुद से सवाल किया है की हमारे बुजुर्ग प्याज को फोड़ कर ही क्यों खाते थे, काट कर क्यों नहीं खाते थे ? प्याज पिछले 5000 साल से भारत भर में व आजकल सारे विश्व में उगाया व खाया जाता है। दोस्तो प्याज के काटने पर जितनी तेजी से उस में पाये जाने वाले पदार्थ रासायनिक क्रिया करते हैं उतनी किसी अन्य खाद्य पदार्थ के नहीं करते। प्याज में सल्फर की मात्रा अधिक होती है अतः रासायनिक प्रक्रिया का जो अंतिम उत्पाद बनता है वो होता है सल्फ्युरिक अम्ल (H_2SO_4), यह अम्ल एक्वा रिजिया के बाद पाया जाने वाला सबसे शक्तिशाली अम्ल होता है जो सोने व प्लेटिनम को छोड़ किसी भी धातु के साथ क्रिया कर उसे नष्ट कर सकता है। दूसरी बात प्याज की हर परत पर ऊपर व नीचे एक झिल्ली होती है यो कि अपाच्य होती है। वह झिल्ली फोड़ने से ही अलग हो पाती है, काटने पर वह साथ में कट जाती है इसलिए प्याज को किसी भी धातु से काटना उचित नहीं है। खुद को आधुनिक दिखाने के लिए इसे काटकर नहीं फोड़ कर खाना चाहिए। आप भी आगे से ऐसा ही कीजिये। यह सल्फर युक्त पदार्थ गंठे (प्याज) की ऊपरी परतों में सबसे ज्यादा होता है तथा बीच में नाम मात्र का होता है। Wageningen विश्वविद्यालय, नीदरलैंड्स की खोज के अनुसार गंठे (प्याज) के बीच में पाये जाने वाला quercetin बहुत ही प्रभावी ऐंटिऑक्सिडेंट है जो कि जवानी को बरकरार रखता है।तथा विटामिन ई का मुख्य स्त्रोत है। वैसे तो यह पदार्थ चाय व सेब में भी पाया जाता है लेकिन गंठे (प्याज) के बीच में पाया जाने वाला पदार्थ चाय के पदार्थ से दो गुणा व सेब में पाये जाने वाले इसी पदार्थ से तीन गुणा जल्दी हजम होता है। 100 ग्राम गंठे (प्याज) में यह 22.40 से 51.82 मिलीग्राम तक होता है। Bern विश्वविद्यालय स्वीट्जरलैंड ने चूहों को प्रति दिन एक ग्राम प्याज खिलाया तो उन की हड्डी 17% तक मजबूत हो गई।प्याज का बीच वाला हिस्सा पेट का अल्सर व सभी प्रकार के हृदय रोगों को ठीक करती है तो प्याज को कभी भी काटकर सलाद बनाकर ना खाएं उसको मुक्का मारकर, या किसी चीज से फोड़कर खाए इससे आपको काफी हेल्थ बेनिफिट होंगे और आंसू भी नहीं आएंगे। हमारे बुजुर्ग प्याज को फोड़कर ही खाते थे या फिर खेत से डायरेक्ट हरे पत्ते वाला प्याज लेते थे और बिना फोड़े ही डायरेक्ट खाते थे, जैसे आप सेब और अमरूद खाते हैं।

गन्ना प्रकृति का अनमोल वरदान हैं। यदि वह ऑर्गेनिक हो

मिठाई खूब खाओ यदि वह खांड से बनी हो साथियों बरसात के बाद सर्द ऋतुओं में गन्ने की फसल की कटाई शुरु होती है और इसके रस से देसीखांड और गुड़ बनाया जाता है। दुर्भाग्य है धूर्त अंग्रेजो ने तरह तरह के कानूनों को बनाकर इसे कम और जहरीली चीनी को अधिक बढ़ावा दिया है और लोग आसानी से फंस चूके हैं।

आइए जानते हैं कुछ तथ्यों द्वारा और चीनी खाना छोड़कर खांड गुड़ शक्कर की तरफ बढ़े।हम ईश्वर के इन वरदानों को ख़राब करके बेमौसम में सेंवन करते हैं जो अमृत से ज़हर बन जाते हैं। जैसे गन्ना सर्दियों के मौसम में बिना कुछ मिलाकर खाने से अमृत का काम करता है उसको उबालकर खतरनाक तेजाब डालकर सफेद चीनी बनाने से ज़हर बन जाता है जो हमारी हड्डियों, लीवर, ह्रदय, आंखें, कलोम ग्रंथी, घुटनों को खत्म कर देता है। इसलिए मौसमी गन्ने का उपयोग बिना कुछ मिलाए ऐसे ही करें जैसे ईश्वर ने प्रदान किया है और उसके लाभ जाने।

1) आयरन व कार्बोहाइड्रेट की प्रचुर मात्रा होने के कारण गन्ने का रस तुरंत शक्ति व स्फूर्ति प्रदान करता है। इसमें ढेर सारे खनिज तत्व व ऑर्गेनिक एसिड होने के कारण इसका औषधीय महत्व भी है।

2) गन्ने का रस पेट, दिल, दिमाग, गुर्दे व आँखों के लिए विशेष लाभदायक है। लेकिन इसका रस पीते समय ध्यान रखें कि गन्ने का रस हमेशा ताजा व छना हुआ ही पीना चाहिए।

3) बुखार होने पर इसका सेवन करने से बुखार जल्दी उतर जाता है। लेकिन गन्ने का रस एकदम ताजा होना चाहिए, रखा हुआ नहीं।

4) एसीडिटी के कारण होने वाली जलन में भी गन्ने का रस लाभदायक होता है। इसमें नींबू, पुदीना और नमक ना मिलाएं। अदरक मिलाने से स्वाद में औरभी निखार आता है।

5) गन्ने के रस के सेवन से #पीलिया भी जल्दी ठीक हो जाता है। पीलिया के मरीज को खास तौर से गन्ने का रस पिलाया जाता है।

6) दुबले लोगों को भी गन्ने का रस काफी फायदा करता है। क्योंकि यह आपका वजन बढ़ाने में मदद करता है।

7) गन्ने को दांतों से चूसकर खाने से कमजोर दांत मजबूत होते हैं। यह दांतों को मजबूत करने का एक बेहतरीन माध्यम है।

चीनी खाने वाले से निवेदन है एक बार चीनी मिल के आसपास घूम आएं कितनी दुर्गंध आती है पता चल जाएगा। वही जहां ऑर्गेनिक गुड़ या खांड तैयार होती है दूर से ही सुगंध मन को आकर्षित कर लेती है और साल भर भी रखें खराब नहीं होगा ।

फूलों से ही क्यों करते हैं लोगों का स्वागत

वैज्ञानिक कहते हैं कि करीब बीस करोड़ साल पहले धरती पर पहला फूल उगा होगा। वर्तमान में फूलों की लगभग साढ़े तीन लाख किस्में है जिसे इंसान जानता है।ज्यादा भी हो सकती है। आज फूलों के इतने रंग और रूप है कि इंसान कल्पना भी नहीं कर सकता है। फूल को संस्कृत में 'पुष्प' और अंग्रेजी में 'फ्लावर' कहते हैं।

क्यों होते हैं फूल वैज्ञानिकों के अनुसार फूल का उद्देश्य किसी पौधे की अगली पीढ़ी को पैदा करना होता है। इसके लिए इन्हें जरूरत बाहरी दखल की होती है, जैसे कीड़े-मकोड़ों, तितलियों या फिर चमगादड़ों की, जो फूलों का रस पीने की चाहत में फूलों के पास आते हैं और इनके जरिए परागण होता है। यानी नर और मादा कणों का मेल होता है। बाद में जिनके विकास से फूल से फल और फल से बीज निकलते हैं। धरती पर फूल है तो सुंदरता, खुशबू और खुशहाली है।

फूलों का उपयोग यूरोप में अठारहवीं सदी से फूलों का उपयोग बहुत ज्यादा बढ़ा। जैसे जैसे शहरों में आबादी बढ़ती गई। वैसे-वैसे हर मौके को खूबसूरत बनाने के लिए फूलों की आवश्यकता भी बढ़ती गई।वैसे तो इससे पहले यूरोप में फूलों का प्रचलन था लेकिन उतना नहीं जितना की मध्यकाल और फिर आधुनिक काल में देखने को मिलता है। हालांकि एशिया की अनगिनत सभ्यताओं में फूलों के उपयोग का प्रचलन रहा है।उसमें भी विशेषकर वे क्षेत्र जहां जंगल और पहाड़ ज्यादा रहे हैं। एशिया में भी भारतीय उपमहाद्वीप में फूलों के उपयोग का विशेष प्रचलन में रहा है।किसी चर्च, मस्जिद या सिनेगॉग में कभी फूलों की माला ले जाने का प्रचलन या परंपरा नहीं रही लेकिन मंदिरों में फूल अर्पित करने की परंपरा बहुत पुरानी है। देवी या देवताओं को फूल माला अर्पित करने का प्रचलन भारतीय सभ्यता में ही रहा है जो कि अभी तक प्रयोग में है।जब मध्यकाल में अखंड भारत की भूमि पर सूफी संतों की दरगाह का निर्माण होने लगा तब मंदिरों के कारण ही वहां पर भी मजारों पर फूल या फूलों की माला अर्पित करने का प्रचलन चला। प्राचीन काल से ही भारत में फूलों को पूजा में अर्पित करने के अतिरिक्त, सजा-सजावट और श्रृंगार में भी उपयोग किया जाने लागा। महिलाएं अपने बालों में फूलों की वेणी बनाकर लगाती है।भारत में किसी भी विवाह आदि मंगल या मांगलिक कार्य में फूलों से घर, दुकान या मंडप, यज्ञ मंडप आदि को सजाने का प्रचलन भी प्राचीन काल से ही रहा है। शव यात्रा में फूलों का उपयोग भी बहुत काल से प्रचलन में रहा है।प्रभु श्रीराम के अयोध्या आगमन के समय उनका पुष्प वर्षा और दीप जलाकर स्वागत किया गया था। है। किसी वरिष्ठ अतिथि का नगरा गमन या राज अधिकारियों आदि का फूल की मालाओं से स्वागत करने का प्रचलन आज भी है। वैज्ञानिक कहते हैं कि करीब बीस करोड़ साल पहले धरती पर पहला फूल उगा होगा। वर्तमान में फूलों की लगभग साढ़े तीन लाख किस्में है जिसे इंसान जानता है।ज्यादा भी हो सकती है। आज फूलों के इतने रंग और रूप है कि इंसान कल्पना भी नहीं कर सकता है। फूल को संस्कृत में 'पुष्प' और अंग्रेजी में 'फ्लावर' कहते हैं।

पुष्प से ही क्यों स्वागत ? फूल या पुष्प का सुगंधित और सकारात्मक होना ही इसका महत्वपूर्ण कारण है ऐसा नहीं है। फूल कई मायनों में महत्वपूर्ण है। फूल इंसान की श्रद्धा और भावना का प्रतीक हैं। धार्मिक मान्यताओं में फूलों का प्रयोग पूजा और उपासना के लिए किया जाता है।मान्यता है कि इससे ईश्वर की कृपा बहुत जल्दी बरसती है। हिंदू धर्मग्रंथों में पुष्प के बारे में बताया गया है कि पुण्य को बढ़ाने, पापों को घटाने और फल को देने के कारण ही इसे पुष्प या फूल कहा जाता है।

पुण्य संवर्धनाच्चापी पापौघपरिहारत।
पुष्कलार्थप्रदानार्थं पुष्पमित्यभिधीयते।।

भारतीय लोग फूल माला से स्वागत करने के लिए पुरी दुनिया में प्रसिद्ध हैं। यहां जब भी कोई विदेशी अतिथि आता है तो हम उसका फूल की मालाओं से स्वागत करते हैं। उससे पुष्पगुच्छ देते हैं।हमें देखकर ही विदेशों में गुलदस्ता देने का प्रचलन चला। भारतीय विवाह में वरमाला नामक एक रस्म होती है जिसमें वर और वधु एक दूसरे को फूल की माला पहनाते हैं।फूलों से किसी का स्वागत करना उसके मान-सम्मान और व्यक्ति की आर्थिक क्षमता का प्रदर्शन करना होता हैं। इससे दोनों ही पक्ष सम्मानित होते हैं। फूल प्रकृति का सर्वोत्तम उपहार है।

वास्तुशास्त्र में महत्व वास्तुशास्त्र के अनुसार घर में बगीचा होना अनिवार्य बताया गया है। फूल सुगंध और सौंदर्य के प्रतीक हैं। घर के आगे गुड़हल, चांदनी, मीठा नीम, रातरानी, पारिजाद, मोगरा, वैजयंती, जूही, चंपा, चमेली, आदि सुगंधित फूल लगाने से हर तरह के वास्तु दोष दूर हो जाते हैं और सकारात्मक ऊर्जा बढ़ाने एवं खुशहाली में सहयोग मिलता हैं।

ज्योतिष में महत्व फूल बहुत ही शुभ और पवित्र होते हैं। ज्योतिष के जानकारों की मानें तो सुंदरता और सुगंध से भरपूर फूलों के उपयोग से आपकी हर मनोकामना पूरी हो सकती है। जिस घर में फूल होते हैं, नकारात्मक ऊर्जा वहां के इर्द-गिर्द भी नहीं भटक पाती है। फूलों के इस्तेमाल से आप अपने जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार बढ़ा सकते हैं। इसीलिए घर के आस-पास फुलवारी की परंपरा सदियों से चली आ रही है।

महाशिवरात्रि 26 फरवरी 2025- महाशिवरात्रि पर महाकुंभ में अमृत स्नान जैसे महासंयोग से दुनियाँ होगी खुशहाल

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर पूरी दुनियाँ 13 जनवरी से 26 फ़रवरी 2025 तक चल रहे इस अद्भुत महाकुंभ समागम जिसमें मेरा मानना है 26 फरवरी 2025 महाशिवरात्रि के दिन तक करीब 70 करोड़ से पर श्रद्धालुओं ने डुबकी लगा चुके होंगे श्रद्धालुओं ने डुबकी लगाई होनें की संभावना प्रबल है इसका मतलब है कि भारत की करीब 60 पेर्सेंट जनता ने त्रिवेणी संगम में डुबकी लगाई। संभावित रूप से अपने पापों का विसर्जन भी कर दिया है जिसका अंतिम अवसर दिनांक 26 फरवरी 2025 को है। हालांकि महाशिवरात्रि का महाकुंभ से महासंयोजन बन रहा है जिससे महाशिवरात्रि के दिन ही अंतिम स्नान कर महाकुंभ का समापन होगा। एक आध्यात्मिक जानकार के अनुसार त्रिवेणी में स्नान तो कभी भी कर सकते हैं परंतु महाकुंभ संयोग शिवरात्रि के संगम के दिन जैसा पुण्य नहीं मिलेगा, ऐसी मान्यता है।महाशिवरात्रि पर आर्टिकल लिखने के लिए मैं चार दिनों से रिसर्च कर रहा हूं तो मैंने पाया यह त्यौहार किसी एक राज्य या देश तक सीमित नहीं है, यह दक्षिण से पश्चिम व उत्तर से पूर्व तक राज्यों व विदेशों में भी मनाया जाता है, जिसकी चर्चा हम नीचे पैराग्राफ में करेंगे। चूँकि महाकुंभ पर महाशिवरात्रि एक महासंयोग है, इसदिन आसमान से सात ग्रह परेड करते दिखाई देंगे, जो अद्भुत दुर्लभ व भौगोलिक घटनाहै, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे महाशिवरात्रि 26 फरवरी 2025, महाशिवरात्रि पर महाकुंभ में अमृत स्नान जैसा महासंयोग है जिससे दुनियाँ खुशहाल होगी।

साथियों बात अगर हम महाशिवरात्रि महापर्व को जानने की करें तो, हिन्दुओं के लिए महाशिवरात्रि का पर्व बहुत महत्व रखता है, हिंदू पंचांग के अनुसार, फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को महाशिवरात्रि पड़ती है, इस साल यह पर्व 26 फरवरी 2025 को मनाया जाएगा।महाशिवरात्रि को शिव की महान रात के रूप में मनाया जाता है ऐसा माना जाता है कि इस दिन देवी पार्वती और भगवान शिव का विवाह हुआ था।महाशिवरात्रि का उपवास रखने की प्रथा काफी सालों से चली आ रही है। कुछ लोग इस व्रत के दौरान पूरा दिन अन्न और जल ग्रहण नहीं करते, वहीं कुछ भक्त फल, दूध और ड्राई फ्रूट्स का सेवन करते हैं। शिवरात्रि के दिन भगवान शिव के भक्त पूरे श्रद्धा भाव से भोले नाथ की पूजा अर्चना करते हैं। भोलेनाथ को इस दिन बेलपत्र दूध, फल और मिठाई अर्पित की जाती है।धार्मिक मान्यताओं के अनुसार महाशिवरात्रि का दिन भगवान शिव की पूजा के लिए विशेष माना जाता है। कहा जाता है कि इस एक दिन व्रत रखने से पूरे साल की गई शिव पूजा के समान फल की प्राप्ति होती है और सभी पापों से मुक्ति मिलती है।साल 2025 में महाकुंभ के साथ महाशिवरात्रि का विशेष योग बन रहा है। यह एक अद्भुत संयोग है जो 144 साल बाद आता है। महाकुंभ और महाशिवरात्रि दोनों ही हिंदू धर्म के महत्वपूर्ण त्योहार हैं। महाकुंभ में गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम पर स्नान करने का विशेष महत्व है। महाशिवरात्रि के दिन भगवान शिव की पूजा अर्चना की जाती है। 26 फरवरी 2025 को महाशिवरात्रि है और इसी दिन महाकुंभ का आखिरी स्नान भी होगा। इस दिन संगम तट पर विशाल स्नान और पूजा का आयोजन होगा।

साथियों बात अगर हम महाशिवरात्रि अनेक राज्यों व विदेशों में भी विधि विधान से मनाए जाने की करें तो महाशिवरात्रि तमिलनाडु के तिरुवन्नामलाई जिले में स्थित अन्नामलाईयर मंदिर में बड़े धूमधाम से मनाई जाती है। इस दिन पूजा की विशेष प्रक्रिया गिरिवलम या गिरि प्रदक्षिणा है, जो पहाड़ी की चोटी पर शिव के मंदिर के चारों ओर नंगे पैर 14 किलोमीटर की पैदल यात्रा हैभारत के प्रमुख ज्योतिर्लिंग शिव मंदिर, जैसे कि वाराणसी और सोमनाथ, महाशिवरात्रि पर विशेष रूप से दर्शनार्थ आते हैं। वे मेलों और विशेष आयोजनों के लिए भी स्थल के रूप में काम करते हैं। कर्नाटक में महाशिवरात्रि सबसे महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है जिसे बहुत भव्यता के साथ मनाया जाता है। उत्साही भक्त पूरी रात जागते हैं और अनुष्ठानों में भाग लेने के लिए मंदिरों में जाते हैं। धर्मस्थल, मुरुदेश्वर, गोकर्ण, नंजनगुड, माले मडेश्वर हिल्स, कडु मल्लेश्वर, कोटिलिंगेश्वर, मायलारालिंगेश्वर जैसे लोकप्रिय मंदिर स्थलों में राज्य और अन्य पड़ोसी राज्यों से भक्तों की भीड़ उमड़ती है।आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में, पंचरामस में विशेष पूजा आयोजित की जाती है - अमरावती के अमरारामम, भीमावरम के सोमारामम, द्रक्षारामम, समरलाकोटा के कुमारराम और पलाकोल्लू के क्षीराराम। शिवरात्रि के तुरंत बाद के दिनों को 12 ज्योतिर्लिंग स्थलों में से एक, श्रीशैलम में ब्रह्मोत्सवलु के रूप में मनाया जाता है। वारंगल में रुद्रेश्वर स्वामी के 1000 स्तंभों वाले मंदिर में महाशिवरात्रि उत्सव आयोजित किया जाता है । श्रीकालहस्ती, महानंदी, यागंती, अंतरवेदी, कट्टामांची, पट्टीसीमा, भैरवकोना, हनमकोंडा कीसगुट्टा वेमुलावाड़ा, पनागल, कोलानुपका सहित अन्य स्थानों पर विशेष पूजा के लिए भक्त उमड़ते हैं। शिवरात्रि यात्राएँ कंभलापल्ले के पास मल्लय्या गुट्टा, रेलवे कोडुरु के पास गुंडलकम्मा कोना, पेन्चलाकोना, भैरवकोना, उमा महेश्वरम सहित अन्य स्थानों पर आयोजित की जाती हैं। मंडी शहर में लगने वाला मंडी मेला महाशिवरात्रि समारोह के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध है। ऐसा माना जाता है कि क्षेत्र के सभी देवी-देवता, जिनकी संख्या 200 से अधिक है, महाशिवरात्रि के दिन यहां एकत्रित होते हैं।कश्मीर शैव धर्म में, महा शिवरात्रि कश्मीर के हिंदुओं द्वारा मनाई जाती है और इसे कश्मीरी में हेराथर कहा जाता है, यह शब्द संस्कृत शब्द हरारात्रि से लिया गया है जिसका अर्थ है हरा की रात (शिव का दूसरा नाम)। उदाहरण के लिए, समुदाय का सबसे महत्वपूर्ण त्यौहार माना जाने वाला शिवरात्रि, उनके द्वारा फाल्गुन (फरवरी-मार्च) के महीने के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी या तेरहवीं को मनाया जाता है, न कि देश के बाकी हिस्सों की तरह चतुर्दशी या चौदहवीं को।नेपाल- महा शिवरात्रि नेपाल में एक राष्ट्रीय अवकाश है और पूरे देश में मंदिरों में विशेष रूप से पशुपतिनाथ मंदिर में व्यापक रूप से मनाया जाता है।हजारों भक्त पास के प्रसिद्ध शिव शक्ति पीठम में भी जाते हैं। पूरे देश में पवित्र अनुष्ठान किए जाते हैं। महाशिवरात्रि को टुंडीखेल में सेना मंडप में आयोजित एक शानदार समारोह के बीच नेपाली सेना दिवस के रूप में मनाया जाता है। राजधानी काठमांडू में, सड़क अवरोध का प्रावधान है जहां बच्चे पैसे के बदले में लोगों या वाहन को गुजरने से रोकने के लिए रस्सियों और तारों का उपयोग करते हैं। शिव के उपासक पूरी रात जागते हैं और कुछ लोग मारिजुआना भी पीते हैं क्योंकि माना जाता है कि शिव एक शौकीन धूम्रपान करने वाले थे और इस दिन मारिजुआना धूम्रपान को 'शिवको प्रसाद' या 'शिव बूटी ' लेना कहा जाता।पाकिस्तान-एक प्रमुख मंदिर जहां शिवरात्रि मनाई जाती है वह कराची में श्री रत्नेश्वर महादेव मंदिर है जिसके शिवरात्रि उत्सव में 25,000 लोग शामिल होते हैं।शिवरात्रि की रात, कराची में हिंदू उपवास करते हैं और मंदिर जाते हैं। बाद में, चनेसर गोठ से भक्त शिव की मूर्ति को स्नान कराने के लिए पवित्र गंगा नदी से जल लेकर मंदिर आते हैं । पूजा सुबह 5 बजे तक की जाती है, उसके बाद आरती की जाती है। फिर भक्त फूल, अगरबत्ती, चावल, नारियल और एक दीया लेकर महिलाओं के साथ नंगे पांव समुद्र की ओर चलते हैं, जिसके बाद वे अपना उपवास तोड़ने के लिए स्वतंत्र होते हैं। वे बाद में नाश्ता करते हैं, जो मंदिर की रसोई में बनाया गया था।दक्षिण एशिया के बाहर-महा शिवरात्रि नेपाल और भारत के शैव हिंदू प्रवासियों के बीच मुख्य हिंदू त्योहार है। इंडो-कैरिबियन समुदायों में, हजारों हिंदू कई देशों के चार सौ से ज्यादा मंदिरों में खूबसूरत रात बिताते हैं, शिव को विशेष झाल (दूध और दही, फूल, गन्ना और मिठाई का प्रसाद) चढ़ाते हैं।मॉरीशस में, हिंदू गंगा तलाव, एक गड्ढा-झील की तीर्थयात्रा पर जाते हैं ।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे किमहाशिवरात्रि 26 फरवरी 2025-महाशिवरात्रि पर महाकुंभ में अमृत स्नान जैसे महासंयोग से दुनियाँ होगी खुशहाल। महाकुंभ पर महाशिवरात्रि एक महासयोंग इस दिन आसमान में सात ग्रह परेड करते दिखाई देंगे, जो अद्भुत दुर्लभ भौगोलिक घटना है।महाशिवरात्रि पर महाकुंभ संगम स्नान कई माइनों में अहम होने की मान्यता है, इस दिन सात ग्रहों के परेड से विश्व में शांति सद्भाव व खुशहाली होगी।

विधायक विजेंद्र गुप्ता चुने गए विधानसभा अध्यक्ष, दिल्ली विधानसभा का पहला दिन पर एक नजर

निर्वाचन के बाद अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता का पहला उद्बोधन सदन में हुआ। उन्होंने कहा कि सबको मिलकर दिल्ली के सर्वांगीण विकास के लिए कार्य करना है। सदन के सदस्यों को पूरे सामंजस्य के साथ कार्य करना चाहिए, तभी वे जनता के प्रति अपने दायित्वों का पूरी तरह निर्वहन करने में सक्षम होंगे।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष पद पर रोहिणी विधानसभा सीट से चुनाव जीतकर पहुंचे विजेंद्र गुप्ता को सदन ने चुना है। निर्वाचित विधायक के लिए एक प्रस्ताव पेश किया गया। पहला प्रस्ताव मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने और दूसरा कैबिनेट मंत्री रविंदर इंद्राज पेश किया। इन प्रस्तावों का समर्थन मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा और प्रवेश वर्मा ने किया, जिसे सदन ने ध्वनिमत से पारित कर दिया गया। अध्यक्ष पद का चुनाव ''प्रोटेम स्पीकर'' अरविंदर सिंह लवली ने कराया।

विजेंदर गुप्ता के स्पीकर चुने जाने के बाद सदन में बधाई भाषण देती मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता - फोटो : अमर उजाला

निर्वाचन के बाद अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता का पहला उद्बोधन सदन में हुआ। उन्होंने सदन के सभी सदस्यों का हार्दिक आभार व्यक्त किया। सत्ता बदलती रहती है लेकिन सदन की गरिमा, मूल्य और परंपराएं शाश्वत रहते हैं। अध्यक्ष के रूप में अपने कर्तव्यों का पूरी सत्यनिष्ठा से पालन करूंगा। सत्ता पक्ष व प्रतिपक्ष, दोनों पक्षों के सदस्य समान हैं। सदन के लोकतांत्रिक मूल्यों का संरक्षण करना प्राथमिकता रहेगी।

सबको मिलकर दिल्ली के सर्वांगीण विकास के लिए कार्य करना है। यही हम सबका संकल्प होना चाहिए। सदन के सदस्यों को पूरे सामंजस्य के साथ कार्य करना चाहिए, तभी वे जनता के प्रति अपने दायित्वों का पूरी तरह निर्वहन करने में सक्षम होंगे। सदन जनता की आशाओं का केंद्र बिंदु होता है। महत्वपूर्ण विषयों पर प्रश्न पूछने चाहिए और सदन में होने वाली विभिन्न चर्चाओं के दौरान अपने विचार प्रकट करने चाहिए।

सदन नियमों से चलता है

उन्होंने कहा कि सदन नियमों से चलता है। सब इन नियमों से बंधे हैं। इसलिए मेरा सभी सदस्यों से अनुरोध है कि कार्यवाही के दौरान सभी निर्धारित नियमों का पालन करें। निर्धारित नियमों से अलग किसी भी प्रकार के प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया जाएगा। ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि इतनी शक्ति, धैर्य और विवेक प्रदान करे कि हम आने वाले पांच वर्षों के दौरान दिल्ली की जनता की भलाई के लिए सार्थक योगदान दे सकें।

ऐतिहासिक है दिल्ली विधानसभा का सदन

दिल्ली विधानसभा का सदन ऐतिहासिक है। अध्यक्ष का पद लोकतांत्रिक मूल्यों और संसदीय परंपराओं का प्रतीक है। भारत के संसदीय इतिहास के पहले निर्वाचित अध्यक्ष विठ्ठल भाई पटेल ने ठीक 100 वर्ष पहले 1925 में इस आसन को सुशोभित किया था। इस सभागार में गोपाल कृष्ण गोखले, विठ्ठल भाई पटेल, पं. मदन मोहन मालवीय, सुंदर सिंह मजीठिया, पंडित मोतीलाल नेहरू, लाला लाजपत राय जैसे लोगों ने सुशोभित किया है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भी यहां दो बार आए थे। निर्वाचित प्रतिनिधियों का सदन बना तो यहां पर सरदार गुरमुख निहाल सिंह, जग प्रवेश चंद्र, लाल कृष्ण आडवाणी, मीर मुश्ताक अहमद, पुरुषोत्तम गोयल, चरती लाल गोयल, सुभाष चोपड़ा, अजय माकन, चौ. प्रेम सिंह, डा. योगानंद शास्त्री, एमएसधीर, राम निवास गोयल जैसे अनुभवी नेताओं ने इस आसन की शोभा

बढ़ाई है।

विधानसभा अध्यक्ष व ज्ञान बहुमूल्य साबित होगा-रेखा गुप्ता

विजेंद्र गुप्ता के अध्यक्ष चुने जाने के बाद मुख्यमंत्री और नेता प्रतिपक्ष नये विधानसभा अध्यक्ष को उनके आसन तक ले गए। विधानसभा अध्यक्ष को बधाई देते हुए मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि आपका अनुभव और ज्ञान विधानसभा के लिए बहुमूल्य साबित होगा। सदन के सदस्यों को बोलने और अपने विचार व्यक्त करने का अवसर मिलेगा। इस पद पर तक पहुंचने के लिए काफी संघर्ष किया है, लेकिन उम्मीद है कि भविष्य में ऐसा संघर्ष नहीं होगा। सदन का कुशलतापूर्वक नेतृत्व करेंगे।

मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने दी बधाई

मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने नये अध्यक्ष को बधाई दी। इसी के साथ उन्होंने आम आदमी पार्टी के मुखिया अरविंद केजरीवाल पर भी जोरदार हमला बोला। कहा कि यह समय का चक्कर है कि जो आपको सदन से उठाकर बाहर फेंकते थे आज इस विधानसभा के सदस्य तक नहीं बन सके। बधाई प्रस्ताव पर चर्चा के दौरान अध्यक्ष ने आम आदमी पार्टी के विधायक अनिल झा को भी बोलने का मौका दिया, लेकिन आप विधायकों के शोर में विपक्षी सदस्य कुछ भी नहीं बोल सके। इस पर नवनिर्वाचित अध्यक्ष ने तंज भी कसा। विजेंद्र गुप्ता दो बार विधानसभा नेता प्रतिपक्ष की जिम्मेदारी संभाल चुके है। पिछले अध्यक्ष के साथ उनका तीखा नोंक झोंक सदन में देखने को मिलता था। उन्हें बराबर मार्शल आउट कर दिया जाता था। कई बार सदन में बोलने के दौरान उनके माइक को बंद कर दिया जाता था।

विधानसभा में दिखी भाषाई विविधता की झलक

विधान सभा में सोमवार को विधायकों के शपथ लेने के दौरान देश की भाषाई विविधता की झलक दिखी। विधायकों ने हिंदी और अंग्रेजी के साथ संस्कृत, उर्दू, पंजाबी और मैथिली जैसी विभिन्न भाषाओं में भी शपथ ली। सभी विधायकों को प्रोटेम स्पीकर अरविंदर सिंह लवली ने एक-एक करके शपथ दिलाई। वहीं, सदन शुरू होने से पहले उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने राजनिवास में लवली को प्रोटेम स्पीकर के रूप में शपथ दिलाई थी।

कपिल मिश्रा ने संस्कृत में शपथ ली

सत्र की शुरुआत करते हुए अरविंदर सिंह लवली ने सुनिश्चित किया कि सभी सदस्य आधिकारिक शपथ प्रारूप का पालन करें। इस दौरान कुछ विधायकों को अपनी शपथ के प्रारूप में बदलाव करने की आवश्यकता भी पड़ी। उन्होंने सबसे पहले मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता का शपथ दिलाई। इसके बाद उनके मंत्रिमंडल के छह मंत्रियों ने भी शपथ ली। मुख्यमंत्री की तरह मंत्री प्रवेश वर्मा, आशीष सूद, पंकज सिंह व रविंद्र इंदराज ने भी हिंदी में शपथ ली, जबकि मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने पंजाबी और कपिल मिश्रा ने संस्कृत में शपथ ली।

शपथ ग्रहण समारोह के दौरान तीन बार विवाद हुआ

शपथ ग्रहण समारोह के दौरान तीन बार विवाद भी उत्पन्न हुआ। भाजपा विधायक तरविंदर मारवाह ने शपथ के बाद धार्मिक नारे लगाए। इस पर प्रोटेम स्पीकर अरविंदर सिंह लवली ने उन्हें टोका और याद दिलाया कि यह विधान सभा है। इसी तरह उन्होंने आप विधायक कुलदीप कुमार के शपथ लेने के बाद बोले गए जयघोष पर आपत्ति जताई। इसके बाद आप के राम सिंह नेताजी ने अपना नाम ''राम सिंह गुर्जर'' के रूप में लिया, जिसके बाद प्रोटेम स्पीकर ने उन्हें शपथ दोबारा पढ़ने को कहा। वहीं, भाजपा के पवन शर्मा व ओम प्रकाश शर्मा शपथ लेने के बाद रजिस्टर में हस्ताक्षर करना भूल गए। वे शपथ लेने के बाद विधायकों का अभिवादन करते हुए अपनी सीट की ओर जब बढ़ने लगे विधानसभा के अधिकारियों ने उनका ध्यान रजिस्टर में हस्ताक्षर करने की ओर दिलाया।

आप से भाजपा में आए सदस्यों के शपथ लेने के समय माहौल शांत सा रहा

आप से भाजपा में आए सदस्यों के शपथ लेने के समय सदन में माहौल काफी शांत सा रहा। कपिल मिश्रा, कैलाश गहलोत व करतार सिंह तंवर ने शपथ लेने पर अध्यक्ष का धन्यवाद करने के बाद आप विधायकों की ओर देखे बिना रजिस्टर पर हस्ताक्षर करने लग गए। इस दौरान आप विधायकों ने भी उनको बधाई देने के संबंध में कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।

विधायकों का शपथ लेने का ब्यौरा

. हिंदी: 50 विधायकों ने शपथ ली

. संस्कृत : कपिल मिश्रा, करनैल सिंह, प्रद्युम्न राजपूत, नीलम पहलवान, गजेंद्र यादव, संजय गोयल, जितेंद्र महाजन व अजय महावर।

. पंजाबी : मनजिंदर सिंह सिरसा व जरनैल सिंह।

. उर्दू : आले इकबाल, इमरान हुसैन, अमानतुल्लाह खान व जुबैर चौधरी।

. मैथिली : संजीव झा, चंदन चौधरी व अनिल झा।

. अंग्रेजी : पुर्नदीप सिंह साहनी व अजय दत्त।

नेता प्रतिपक्ष आतिशी के नेतृत्व में ''आप'' विधायकों ने सदन में नारेबाजी कर डॉ. अंबेडकर और शहीद भगत सिंह की फोटो दोबारा लगाने की मांग की

सुषमा रानी

नई दिल्ली, दिल्ली में सरकार बनते ही भाजपा ने अपना दलित और सिख विरोधी मानसिकता एक बार फिर देश के सामने जगजाहिर कर दिया है। आम आदमी पार्टी की सरकार के दौरान विधानसभा स्थित मुख्यमंत्री कार्यालय में लगाई गई बाबा साहब डॉ. अंबेडकर और शहीद भगत सिंह की फोटो को भाजपा ने हटा दिया है। यह मामला संज्ञान में आते ही आम आदमी पार्टी ने भाजपा के इस कदम का सख्त विरोध किया है। सोमवार को शुरू हुए विधानसभा सत्र के दौरान नेता प्रतिपक्ष आतिशी के नेतृत्व में ''आप'' विधायकों ने इस मुद्दे पर सदन के अंदर नारेबाजी कर जबरदस्त विरोध प्रदर्शन किया और डॉ. अंबेडकर और शहीद भगत सिंह की फोटो दोबारा लगाने की मांग की।

उधर, आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने भी विधानसभा स्थित मुख्यमंत्री कार्यालय से बाबा साहब डॉ. अंबेडकर और शहीद भगत सिंह की फोटो हटाने पर आपत्ति जताई है। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर कहा कि दिल्ली की नई भाजपा सरकार ने बाबा साहब की फोटो हटाकर प्रधानमंत्री मोदी की फोटो लगा दी। यह सही नहीं है। इससे बाबा साहब के करोड़ों अनुयायियों को ठेस पहुंची है। मेरी भाजपा से प्रार्थना है कि आप प्रधानमंत्री की फोटो लगा लीजिए, लेकिन बाबा साहब की फोटो तो मत हटाइए। उनकी फोटो लगी रहने दीजिए।

वहीं, इस मुद्दे पर प्रेसवार्ता कर ''आप'' की वरिष्ठ नेता एवं नेता प्रतिपक्ष आतिशी ने कहा कि भाजपा की दलित और सिख विरोधी मानसिकता जगजाहिर है। सब जानते हैं कि भाजपा एक दलित विरोधी पार्टी है। आज भाजपा ने अपनी दलित विरोधी मानसिकता का असली प्रमाण देश के सामने रखा है। अरविंद केजरीवाल के मार्गदर्शन में दिल्ली सरकार के हर कार्यालय में बाबा साहब डॉ. भीम राव अंबेडकर और शहीद भगत सिंह की फोटो लगाई थी। दिल्ली सरकार के हर कार्यालय में यह फोटो थी। जब मैं मुख्यमंत्री के तौर पर काम कर रही थी, उस समय दिल्ली विधानसभा के सीएम कार्यालय में भी बाबा साहब डॉ. भीम राव अंबेडकर और शहीद भगत सिंह की फोटो लगी थीं। लेकिन भाजपा ने अपनी असली दलित व सिख विरोधी मानसिकता दिखाते हुए दोनों फोटो सीएम कार्यालय से हटा दी है।

आतिशी ने विधानसभा में सीएम कार्यालय की तीन महीने पहले और वर्तमान की तस्वीरें मीडिया को दिखाते हुए कहा कि मेरे मुख्यमंत्री रहने के दौरान इस कार्यालय में बाबा साहब डॉ. भीम राव अंबेडकर और शहीद भगत सिंह की फोटो लगी थी, लेकिन भाजपा ने अपनी दलित और सिख विरोधी मानसिकता दिखाते हुए यह दोनों तस्वीरें कार्यालय

से हटा दी है। यह दिखाता है कि भाजपा एक दलित और सिख विरोधी पार्टी है। आज इन्होंने बाबा साहब भाम राव अंबेडकर और शहीद-ए- आजम भगत सिंह का अपमान किया है। बाबा साहब अंबेडकर वो व्ययक्ति हैं जिन्होंने इस देश को संविधान दिया, उन्होंने दलितों को बराबरी का अधिकार दिया। शहीद-ए-आजम भगत सिंह वह व्यक्ति हैं कि जिन्होंने 23 साल की उम्र में देश की आजादी के लिए फांसी पर चढ़कर अपनी जान कुर्बान कर दी। भाजपा ने दलित और सिख समुदाय का अपमान करते हुए दोनों तस्वीरें हटा दी हैं। आम आदमी पार्टी इस बात का पुर्जोर विरोध करती है। हम सड़क से लेकर सदन तक इसका विरोध करेंगे।

आतिशी ने बताया कि लंच ब्रेक के दौरान जब हम सीएम रेखा गुप्ता से मिलने के लिए उनके कार्यालय में गए, तब हमने देखा कि वहां से बाबा साहब अंबेडकर और भगत सिंह की तस्वीरें उतार दी गई हैं। यह बहुत शर्म की बात है कि बात है कि भाजपा ने सीएम कार्यालय से बाबा साहब डॉ. भीम राव अंबेडकर और भगत सिंह की तस्वीरें हटाकर प्रधानमंत्री मोदी की तस्वीरें हटा दी हैं। क्या प्रधानमंत्री मोदी बाबा साहब भीम राव अंबेडकर और भगत सिंह से बड़े हैं? क्या उनको इतना अहंकार हो गया है? जैसे ही भाजपा की सरकार की सरकार आई, उन्होंने सबसे पहले बाबा साहब और भगत सिहं की तस्वीर हटाकर उसकी जगह प्रधानमंत्री मोदी की तस्वीर लगा दी। यह बहुत दुख की बात है।

जब तक सदन में बाबा साहब और भगत सिंह की फोटो नहीं लगेगी, हमारा विरोध जारी रहेगा- कुलदीप कुमार

वहीं "आप" विधायक कुलदीप कुमार ने कहा कि यह सदन का पहला दिन है। यह सदन बाबा साहब के संविधान से चलता है। बड़े दुख की बात है कि भाजपा ने मुख्यमंत्री कार्यालय से बाबा साहब अंबेडकर और भगत सिहं की फोटो हटा दी। यह दिखाता है कि भाजपा बाबा साहब अंबेडकर और भगत सिंह के विचारों का कल भी विरोध करती थी और आज भी विरोध करती है। जिस तरह इन्होंने कार्यालय से बाबा साहब की फोटो हटाई है, कल को ये लोग उनकी प्रतिमा भी हटा देंगे। इस देश के दलित और सिख समाज के जो लोग बाबा साहब अंबेडकर और शहीद-ए-आजम भगत सिहं को मानते हैं, वह कभी इसे बर्दाश्त नहीं करेंगे। इसके लिए हमें सड़क पर प्रदर्शन करना पड़े या सदन में आवाज उठाना हो, हम करेंगे। जब तक सदन में बाबा साहब और भगत सिंह की फोटो नहीं लगाई जाएगी, तब तक हमारा विरोध जारी रहेगा और हम सदन नहीं चलने देंगे।

शहीद भगत सिंह को हर व्यक्ति अपना आदर्श मानता है, सदन से उनकी फोटो हटाना बहुत दुखद है- जरनैल सिंह

विधायक जरनैल सिंह ने कहा कि शहीद-ए-आजम भगत सिंह को देश का हर व्यक्ति अपना आदर्श मानता है। सदन से उनकी फोटो हटाना बहुत दुखदायक है। भाजपा ने दिल को पीड़ा देने वाला काम किया है। हमने विधानसभा अध्यक्ष से निवेदन किया कि वह प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति की फोटो लगाएं, हमें उससे कोई परेशानी नहीं है, लेकिन आप इनकी तुलना शहीद-ए-आजम भगत सिंह और बाबा साहब अंबेडकर से नहीं कर सकते। उन्होंने देश के लिए जो कुर्बानियां दी हैं, उसका कोई मुकाबला नहीं है। हम मांग करते हैं कि बाबा साहब अंबेडकर और भगत सिंह की फोटो दोबारा लगाई जाए।

कौशलजीज़ वर्सेज कौशल – एक दिल छू लेने वाली कहानी, जो हर परिवार से जुड़ती है

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। कुछ फ़िल्में अपनी भव्यता से नहीं, बल्कि सादगी और गहराई से दर्शकों के दिलों तक पहुँचती हैं। कौशलजीज़ vs कौशल ऐसी ही एक फ़िल्म है, जो रिश्तों, सपनों और परिवार के बदलते समीकरणों को खूबसूरती से उजागर करती है। सीमा देसाई के निर्देशन में बनी यह फ़िल्म छोटे शहरों की सच्ची भावनाओं और जीवन के उतार-चढ़ाव को संवेदनशीलता से पेश करती है।

कहानी जो दिलों को छू जाए

फ़िल्म की कहानी कानपुर के एक साधारण लेकिन प्यार से भरे परिवार की है। साहिल कौशल (आशुतोष राणा) एक ईमानदार एकाउंटेंट हैं, जो गुपचुप तौर पर कव्वाली गाने का सपना देखते हैं, जबकि उनकी पत्नी संगीता (शीबा चड्ढा) एक दिन परफ्यूमर बनने की इच्छा रखती हैं। वर्षों तक परिवार और जिम्मेदारियों को प्राथमिकता देने के बाद, एक दिन यह जोड़ी एक चौंकाने वाला फैसला लेती है, जिससे उनका बेटा युग (पवैल गुलाटी) और बेटी, जो एक एनजीओ में काम करती है, हैरान रह जाते हैं। यह फ़ैसला न सिर्फ उनके रिश्तों की नई परिभाषा गढ़ता है, बल्कि हर किरदार को अपनी ज़िंदगी के मायनों को दोबारा समझने पर मजबूर कर देता है।

कलाकारों की दमदार प्रस्तुतियां

फ़िल्म का सबसे बड़ा आकर्षण इसके कलाकार हैं। आशुतोष राणा और शीबा चड्ढा अपने किरदारों को इतनी सहजता और गहराई से निभाते हैं कि यह जोड़ी किसी भी आम ति-पत्नी की तरह लगती है। उनके बीच के छोटे-छोटे संवाद और इशारे भावनात्मक रूप से दर्शकों को जोड़ते हैं। पवैल गुलाटी, एक उलझन में फंसे बेटे के रूप में, प्रभावी प्रदर्शन देते हैं। वहीं, ईशा तलवार और दीक्षा जोशी अपने किरदारों में

सहज नजर आती हैं। फ़िल्म को और अधिक रोचक बनाते हैं बृजेंद्र काला, जो अपने चिर-परिचित अंदाज में हल्के-फुल्के संवादों से कहानी में गहराई और हास्य का संतुलन बनाए रखते हैं। साथ ही, ग्रूशा कपूर भी अपने दमदार अभिनय से फिल्म को और अधिक सजीव बना देती हैं।

भावनाओं और हास्य का खूबसूरत संगम

यह फ़िल्म भावनात्मक क्षणों को ज़रूरत से ज़्यादा गहन या बोझिल नहीं बनाती, बल्कि हल्के-फुल्के हास्य और पारिवारिक तकरार के साथ एक खूबसूरत सफ़र बुनती है। संवाद सीधे दिल तक पहुँचते हैं और ऐसी परिस्थितियाँ दिखाती हैं, जो हर भारतीय परिवार में कभी न कभी आई होती हैं।

संगीत और सिनेमैटोग्राफी की ख़ासियत

फ़िल्म की सिनेमैटोग्राफी छोटे शहर की आत्मा को खूबसूरती से उभारती है, जिससे माहौल और भी वास्तविक लगता है। वहीं, संगीत विशेष रूप से कव्वाली वाले हिस्से, कहानी में एक अनोखी गहराई जोड़ते हैं, जिससे दर्शकों को पात्रों की भावनाएं और नज़दीक से महसूस होती हैं।

अंतिम विचार

सीमा देसाई के निर्देशन में कौशलजीज़ vs कौशल एक खूबसूरती से गढ़ी गई, दिल को छू लेने वाली कहानी है। उनकी संवेदनशील निर्देशन शैली इस फिल्म को वास्तविक और प्रभावशाली बनाती है, जहां हर किरदार और हर सीन अपनी एक अलग पहचान छोड़ता है। कहानी को सादगी और गहराई के साथ पेश करने की उनकी काबिलियत इस फिल्म को खास बनाती है।

यह फिल्म अब JioHotstar पर उपलब्ध है, जहां आप इसे कभी भी देख सकते हैं। रिश्तों, सपनों और पारिवारिक भावनाओं से भरी इस फिल्म को हम 4 स्टार ☆ ☆ ☆ ☆ देते हैं!

अगर आपको दिल छू लेने वाली पारिवारिक कहानियां पसंद हैं, तो यह फिल्म जरूर देखें!

समय से हाउस टैक्स जमा करने पर 2025-26 में 100 गज के मकानों व आवासीय क्षेत्र की दुकानों का पूरा और 100 से 500 गज के मकानों का आधा हाउस टैक्स माफ होगा : संजय सिंह

मुख्य संवाददाता /सुषमा रानी

नई दिल्ली, दिल्ली नगर निगम की ''आप'' सरकार ने होली से पहले हाउस टैक्स को लेकर दिल्लीवालों को बहुत बडा तोहफा देने का एलान किया है। आम आदमी पार्टी की सरकार ने फैसला लिया है कि जो लोग तय समय सीमा के अंदर वित्तीय वर्ष 2024-25 का पूरा हाउस टैक्स जमा कर देंगे, उनका पिछला बकाया सारा हाउस टैक्स माफ कर दिया जाएगा। साथ ही, अगले वित्तीय वर्ष (2025-26) में 100 गज के मकानों और रिहायशी क्षेत्र में चल रही दुकानों का 100 फीसद और 100 से 500 गज के मकानों का 50 फीसद हाउस टैक्स माफ किया जाएगा। इसके अलावा, अभी तक दिल्ली के 1300 हाउसिंग अपार्टमेंट को हाउस टैक्स में कोई रियायत नहीं मिलती थी, लेकिन अब इनका भी अगले वित्तीय वर्ष में 25 फीसद हाउस टैक्स माफ कर दिया जाएगा। 25 फरवरी को होने वाले एमसीडी सदन में आम आदमी पार्टी की सरकार इस प्रस्ताव को पास कर देगी।

आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता व सांसद संजय सिंह, नेता दुर्गेश पाठक, मेयर महेश खींची और नेता सदन मुकेश गोयल सोमवार को पार्टी मुख्यालय में संयुक्त प्रेसवार्ता कर इस बड़े फैसले की जानकारी दी। संजय सिंह ने कहा कि आम आदमी पार्टी ने हमेशा से आम लोगों के फायदे और उनकी जिंदगी में सहूलियत देने के लिए काम किया है। इसी दिशा में एमसीडी एक बहुत बड़ा कदम उठा रही है। आम आदमी पार्टी ने एमसीडी के बारे में कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लिए हैं। इसके तहत जो लोग 2024-25 के हाउस टैक्स का भुगतान कर देंगे, उनका पिछला सारा बकाया हाउस टैक्स माफ कर दिया जाएगा। यह बहुत बड़ी घोषणा है कि 2024-25 के हाउस टैक्स का भुगतान करने पर उनके पुराने सारे हाउस टैक्स माफ कर दिए जाएंगे।

संजय सिंह ने बताया कि समय से हाउस टैक्स का भुगतान करने पर अगले वित्तीय वर्ष में 100 गज से 500 गज तक के भवन का हाउस टैक्स आधा किया जाएगा। वहीं, 100 गज से कम बने भवनों का हाउस टैक्स पूरी तरह से माफ कर दिया जाएगा। रिहायशी मकानों में जिनमें दुकानें चल रही हैं और उनके व्यावसायिक हाउस हैं, उनका हाउस टैक्स माफ किया जाएगा। दिल्ली के अंदर 1300 से ज्यादा मकान ऐसे हैं, जिनको हाउस टैक्स का फायदा नहीं मिलता है। उन्हें इसमें किसी तरह की भी छूट का फायदा नहीं मिलता है। इसलिए उनके बारे में भी महत्वपूर्ण निर्णय लिया जा रहा है कि दिल्ली के अंदर जो 1300 हाउसिंग अपार्टमेंट हैं, उनका 25 फीसद तक हाउस टैक्स माफ किया जाएगा।

वहीं, ''आप'' नेता दुर्गेश पाठक ने कहा कि डेढ़ साल पहले दिल्ली की एमसीडी में जब से आम आदमी पार्टी की सरकार बनी है, उससे बहुत अच्छे-अच्छे काम हो रहे हैं और कई सारी चीजें जमीन पर उतर रही हैं। एक सबसे बड़ी समस्या थी कि पहले एमसीडी कर्मचारियों को कभी समय पर वेतन नहीं मिलता था, आखिरी बार उन्हें 2008-2009 में समय पर वेतन मिला था। उन कर्मचारियों को आज महीने की पहली तारीख को वेतन मिलता है, क्योंकि अब एमसीडी की आर्थिक स्थिति बेहतर हो रही है। जहां पहले एमसीडी भ्रष्टाचार के चलते घाटे में रहती थी, लेकिन अब एमसीडी फायदे में आने लग गई है

दुर्गेश पाठक ने आगे कहा कि दिल्ली के अंदर 1300 हाउसिंग अपार्टमेंट हैं, उन्हें किसी भी हाउसिंग स्कीम का फायदा नहीं मिलता। इसलिए आम आदमी पार्टी की सरकार ने फैसला लिया है कि 1300 अपार्टमेंट में समय से हाउस टैक्स जमा करने वाले लोगों को हाउस टैक्स में 25 प्रतिशत का रिबेट मिलेगा। यह एक बहुत बड़ा निर्णय है। यह एमसीडी के अंदर एक बहुत बड़ा टैक्स सुधार है, जो भ्रष्टाचार की कमर तोड़ने का काम करेगा। इसके जरिए हम लोगों को टैक्स देने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं, क्योंकि इसकी आड़ में बड़ा भ्रष्टाचार चल रहा था। हम लोगों को प्रोत्साहित करेंगे कि वे इस स्कीम का फायदा लें। 25 फरवरी को एमसीडी सदन में हम इस प्रस्ताव को पास करके इसे जल्द दिल्ली में लागू करेंगे। दिल्ली के लोग 2025-26 वित्तीय वर्ष में इन सभी चीजों का फायदा उठा सकेंगे। साथ ही इसके लागू होने के बाद जो इसकी समय सीमा निर्धारित होगी, उसके तहत इसका लाभ लिया जा सकेगा।

मेयर महेश खिची ने बताया कि जो 2024-25 के वित्तीय सत्र का हाउस टैक्स भर देगा, उसका हम पुराना सारा बकाया हाउस टैक्स माफ कर देंगे। क्योंकि लोग इससे बहुत परेशान हैं, उनके 10-10 साल पुराने हाउस टैक्स पर पेनल्टी बढ़ती जा रही है। उन्हें हाउस टैक्स भरने में बहुत दिक्कत आ रही है। अधिकारी उन्हें बहुत तंग करते हैं। साथ ही 100 से 500 गज तक के सभी मकानों का हाउस टैक्स आधा कर दिया जाएगा। वहीं 100 गज तक के मकानों का हाउस टैक्स पूरी तरह से माफ कर दिया जाएगा। रिहायशी इलाकों में बनी दुकानों का कमर्शियल टैक्स भी माफ कर दिया जाएगा। इसके अलावा आज तक कभी दिल्ली के 1300 हाउसिंग अपार्टमेंट को हाउस टैक्स में छूट नहीं मिली, पहली बार हमारी सरकार उन्हें तोहफा देने जा रही है कि अगर वे समय से अपना हाउस टैक्स भरते हैं तो उन्हें भी 25 प्रतिशत की रियायत मिलेगी। अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व में ये सारे ऐतिहासिक फैसले लिए जा रहे हैं। दिल्लीवासियों को बधाई देता हूं। हम आपके हित और भलाई के लिए हमेशा तत्पर हैं और आगे भी इसी तरह सेवा करते रहेंगे।

उधर एमसीडी नेता सदन मुकेश गोयल ने कहा कि दिल्ली नगर निगम से भ्रष्टाचार को खत्म करने के हमारे सिद्धांत के तहत आज दिल्ली के लोगों को एक विशेष तोहफा देने जा रहे हैं। यह भ्रष्टाचार के ऊपर बहुत बड़ा कुठाराघात है। दिल्ली की जनता को बहुत फायदा मिलेगा। ''आप'' सरकार ने करीब एमसीडी में अब तक 8 हजार लोगों को पक्का किया है और 12 हजार और कच्चे कर्मचारियों को पक्का करने जा रही है। अब सभी कर्मचारियों को अब समय पर वेतन मिल रहा है। वहीं जिस तरह से आज हाउस टैक्स भ्रष्टाचार का सबसे बड़ा अड्डा बन गया है, जहां बकाया हाउस टैक्स के नाम पर अधिकारी और इंस्पेक्टर जनता को परेशान करते हैं, उनसे घूस मांगते हैं। इससे दिल्ली की जनता को छुटकारा मिले और साथ ही एमसीडी का राजस्व भी बढ़े, इसे देखते हुए एमसीडी में हमारी पार्टी के नेतृत्व ने फैसला लिया है कि 2024-25 सत्र में जो भी व्यक्ति अपना हाउस टैक्स दे देगा, उसका पिछला सारा बकाया हाउस टैक्स माफ कर दिया जाएगा।

रूह कंपाने वाला हादसा: ट्रक ने बाइक सवार दो लोगों को मारी टक्कर, फिर घसीटा, आग लगने से दोनों की हालत गंभीर

परिवहन विशेष न्यूज़

बुलंदशहर बाइक सवार सिकंदराबाद से बुलंदशहर की तरफ जा रहे थे। दरियापुर के पास अलीगढ़-गाजियाबाद हाईवे पर सिकंदराबाद की तरफ से ही अलीगढ़ जा रहा ट्रक बाइक के ऊपर चढ़ गया।उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले के देहात कोतवाली क्षेत्र में गांव दरियापुर के निकट सिकंदराबाद की ओर से आ रहे ट्रक ने आगे चल रही बाइक को अपनी चपेट में ले लिया। बाइक करीब 50 मीटर तक घिसटी और फिर उसमें आग लग गई। हादसे में बाइक सवार सोहनपाल आग से बुरी तरह झुलस गए। जबकि, उनका साथी राजकुमार गंभीर रूप से चोटिल हो गया। दोनों को हायर मेडिकल सेंटर रेफर किया गया है।कोतवाली देहात क्षेत्र के गांव काहिरा निवासी सोहनपाल और राजकुमार बाइक पर सवार होकर सोमवार शाम को सिकंदराबाद से बुलंदशहर की तरफ जा रहे थे। दरियापुर के पास अलीगढ़-गाजियाबाद हाईवे पर सिकंदराबाद की तरफ से ही अलीगढ़ जा रहा ट्रक बाइक के ऊपर चढ़ गया। ट्रक बाइक को रौंदते हुए 50 मीटर से अधिक घिसटाते हुए ले गया, जिससे बाइक बुरी तरह क्षतिग्रस्त हुई और उसमें आग लग गई। दुर्घटना में सोहनपाल आग से बुरी तरह झुलस गए और राजकुमार भी घायल हो गया। कोतवाली देहात पुलिस मौके पर पहुंची और घायलों को सरकारी एंबुलेंस से जिला अस्पताल पहुंचाया। चिकित्सकों ने बताया कि सोहनपाल की हालत नाजुक है। वह घायल भी है और आग से बुरी तरह झुलसा है। इसलिए उनको सफदरगंज दिल्ली रेफर कर दिया है और दूसरे घायल राजकुमार को हायर सेंटर रेफर किया गया है। कोतवाली प्रभारी देहात पीसी शर्मा ने बताया कि ट्रक को कब्जे में ले लिया है।

शिवरात्रि पर होगा चार पहर का पूजन, निकलेगी 350 कलश की यात्रा

नल्हड़ महादेव मंदिर में शुरू हुई तैयारी, बीजेपी के वरिष्ठ नेता अनुराग ठाकुर समेत कई वीआईपी हो सकते हैं शामिल

नूंह। पांडव कालीन नल्हड़ महादेव मंदिर में शिवरात्रि को लेकर तैयारियां शुरू हो गई हैं। 26 फरवरी को शिवरात्रि के मौके पर 350 कलश की यात्रा निकाली जाएगी। वहीं शाम के समय महादेव का चार पहर पूजन किया जाएगा। शिवरात्रि के अवसर पर नल्हड़ मंदिर में बीजेपी के वरिष्ठ नेता व सांसद अनुराग ठाकुर समेत कई हस्तियां पूजन में शामिल हो सकती हैं। वहीं, इस अवसर पर कई प्रदेशों से हजारों लोगों के आने की उम्मीद है।

नल्हड़ मंदिर कमेटी के प्रधान जीएस मलिक ने जानकारी देते हुए बताया कि हर वर्ष की तरह इस बार भी शिवरात्रि का पर्व धूमधाम से मनाया जाएगा। नूंह स्थित गोशाला से 350 कलश की यात्रा निकलेगी। इसमें 350 महिलाएं कलश उठाएंगी। कलश यात्रा नूंह शहर से होते हुए नल्हड़ मंदिर पहुंचेगी। यात्रा के दौरान जो भक्त पैदल नहीं चल सकते हैं उनके लिए बस की सुविधा होगी। वहीं, शाम के समय चार पहर का पूजन किया जाएगा। नल्हड़ मंदिर में सुबह से ही भंडारे का आयोजन किया जाएगा। बता दें कि शिवरात्रि पर हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश व दिल्ली समेत अन्य स्थानों से लोग नल्हड़ महादेव मंदिर में दर्शन के लिए पहुंचंगे। मंदिर कमेटी की ओर से पांच से सात हजार लोगों के लिए प्रसाद का इंतजाम किया जा रहा है।

अनुराग ठाकुर समेत कई वीआईपी हो सकते हैं शामिल

शिवरात्रि के पर्व पर मंदिर में काफी भीड़ रहने की उम्मीद है। इस दिन कई बड़े प्रशासनिक अधिकारी व जनप्रतिनिधियों के साथ अन्य वीआईपी भी मंदिर में दर्शन व पूजन के लिए आ सकते हैं। अभी तक बीजेपी के वरिष्ठ नेता व सांसद अनुराग ठाकुर के नलहड़ मंदिर में पूजा में शामिल होने की उम्मीद है। मंदिर कमेटी का कहना है कि जल्द ही उनके शामिल होने की पुष्टि की जाएगी।

इतिहास व मान्यता

:- मंदिर का संबंध राजा नल से जोड़ा जाता है, उन्होंने यहां भगवान शिव की आराधना की थी। माना जाता है कि यह मंदिर पांडव काल का है और इसका उल्लेख महाभारत से जुड़ा हुआ है। यहां स्थित शिवलिंग स्वयंभू माना जाता है। यह मंदिर शिव भक्तों के लिए विशेष रूप से महाशिवरात्रि पर आस्था का केंद्र होता है। मान्यता है कि यहां जल अर्पण करने से मनोकामनाएं पूरी होती हैं। मंदिर के पास कदम के पेड़ से लगातार स्वच्छ जल निकलता है। लोगों का मानना है कि यह पांडवों के समय से निकल रहा है। यहां पर भगवान कृष्ण व पांडव आए थे। उन्होंने यहां पर शिवलिंग पर पूजा भी की थी। यह मंदिर अपनी प्राकृतिक सुंदरता, धार्मिक महत्व और ऐतिहासिक विरासत के कारण प्रसिद्ध है।

एक दिवसीय अंतर-पीढ़ी संबंध प्रोत्साहन की 7वीं कार्यशाला का आयोजन

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा

भीलवाड़ा, उद्यमिता और कौशल विकास केंद्र संगम विश्वविद्यालय द्वारा भारत सरकार के राष्ट्रीय सामाजिक सुरक्षा संस्थान तथा सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के आर्थिक सहयोग से एक दिवसीय अंतर-पीढ़ी संबंध प्रोत्साहन कार्यशालाओं की श्रंखला के अंतर्गत 7वीं कार्यशाला का आयोजन बीते हुये कल के ज्ञान को आने वाले कल के साथ जोड़ने की प्रतिज्ञा विषय पर किया गया । कार्यशाला के आरंभ में डॉ. मनोज कुमावत ने बदलते परिवेश में विभिन्न आयुवर्ग के लोगों के मध्य सम्बन्धों को प्रभावित करने वाली चुनौतियों और उनके प्रभावों को रेखांकित किया । मुख्य अतिथि कुलपति प्रोफेसर करुणेश सक्सेना ने अपने वक्तव्य में कहा कि जिस तरह गर्मी के मौसम में व्यक्ति को छाया और पानी की आवश्यकता होती है। वैसा ही महत्व युवाओं के लिए उनके बुजुर्गों का है जो अपने अनुभव की छाया और ज्ञान की शीतलता से उनके जीवन को ओजपूर्ण बनाते हैं । प्रथम सत्र में युवाओं के सृजनात्मक पक्ष को उजागर करने के लिए कला एवं मानविकी संकाय से अदिति नरेडिया ने चित्रकला के महत्व से युवाओं को अवगत कराया और उन्हे अपने विचारों को उड़ान देने के लिए चित्रकला प्रतियोगिता में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया। द्वितीय सत्र में विधि विभाग के डॉ. गौरव सक्सेना ने अपने सत्रीय वक्तव्य में कहा कि पुरखों की संपप्ति के बांटबारे और उससे उत्पन्न विवादों को विधि द्वारा सुलझाया जा सकता है जिससे पारिवारिक संबंधों का अनुरक्षण भी होता है । इसके पश्चात उन्होने मूट कोर्ट वाद-प्रतिवाद प्रतियोगिता के लिए विधि विभाग के प्रतिभागियों की दो टीमों का परिचय कराते हुये इसके महत्व को रोचक ढंग से प्रस्तुत किया । कार्यशाला में आये युवाओं का सम्मान प्रशस्ति पत्र देकर किया गया। इस अवसर पर विभिन्न संकायों के डॉ ओमप्रकाश, डा जोरावर सिंह, डॉ. संजय कुमार, डॉ. रामेश्वर रायकवार आदि उपस्थित रहे । कार्यशाला के अंत में डॉ. तनुजा सिंह ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

29 लाख की लागत से वसुंधरा जोन में बनाए जाएंगे पांच कूड़ा घर

परिवहन विशेष न्यूज़

वसुंधरा। वसुंधरा जोन की सड़कों पर कूड़ा न फैले इसलिए नगर निगम वसुंधरा जोन में पांच अलग-अलग जगहों पर कूड़ा घर बनवाएगा। यहां करीब 29 लाख की लागत से कूड़ा घर बनाए जाएंगे।वसुंधरा जोन के निर्माण विभाग के अवर अभियंता संजय गंगवार ने बताया कि यह कूड़ा घर वसुंधरा जोन के अलग-अलग इलाकों में बनाए जाने हैं। उन्होंने बताया कि यह कूड़ाघर साहिबाबाद सब्जी मंडी, साहिबाबाद डिपो, एलिवेटेड रोड नहर के नीचे और इंदिरापुरम थाने के पास बनाए जाएंगे। उन्होंने बताया कि यहां पर दिनभर जो भी कूड़ा जमा होगा उसे समयानुसार निगम की कूड़ा गाड़ी आकर वहां से कूड़ा ले जाया करेगी। दरअसल, यह ऐसी जगह हैं जहां पहले से ही लोग कूड़ा डालते रहे हैं। कूड़ा घर न होने के बावजूद यहां कूड़े का ढेर लगा रहता है और आए दिन यहां कूड़े में आग लगा दी जाती है। अब कूड़ा घर बनने से कूड़ा सड़क पर नहीं फैलेगा।

गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय के नए कुलपति बने प्रो राणा प्रताप सिंह, प्रतिष्ठित कैंसर वैज्ञानिक के नाम से मशहूर

परिवहन विशेष न्यूज़

प्रो. राणा ने जेएनयू से कैंसर बायोलॉजी में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की है। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय के इविंग क्रिश्चियन कॉलेज से बीएससी और जेएनयू से एमएससी किया है। वे कोलोराडो विश्वविद्यालय में शोधकर्ता और सहायक प्रोफेसर के रूप में भी कार्य कर चुके हैं।

गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय के नए कुलपति प्रो. राणा प्रताप सिंह होंगे। कुलाधिपति योगी आदित्यनाथ ओर से उनकी नियुक्ति का आदेश जारी किया गया है। उनका कार्यकाल तीन वर्ष का होगा। प्रो. राणा प्रतिष्ठित कैंसर वैज्ञानिक के नाम से मशहूर हैं।

प्रो. राणा प्रताप सिंह वर्तमान में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली में स्कूल ऑफ लाइफ साइंसेज में प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हैं। वे शिक्षा और अनुसंधान में काफी अनुभवी हैं। उन्होंने भारत में कई नए विभागों, स्कूलों और शोध केंद्रों की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनका कैंसर रिसर्च में बड़ा नाम है। उनका शोध स्टेम सेल, ऑर्गेनोइड्स, डीएनए रिपेयर मैकेनिज्म और माइक्रोग्रैविटी के रेडियोबायोलॉजी पर प्रभाव जैसे विषयों पर केंद्रित है। उनके 100 से अधिक शोधपत्र नेचर, ऑक्सफोर्ड एकेडमिक, हॉवर्ड कैटलिस्ट और अमेरिकन एसोसिएशन फॉर कैंसर रिसर्च जर्नल जैसी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं।

प्रो. राणा ने जेएनयू से कैंसर बायोलॉजी में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की है। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय के इविंग क्रिश्चियन कॉलेज से बीएससी और जेएनयू से एमएससी किया है। वे कोलोराडो विश्वविद्यालय में शोधकर्ता और सहायक प्रोफेसर के रूप में भी कार्य कर चुके हैं। 27 जनवरी से खाली पड़े पद को ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के सीईओ एनजी रवि संभाल रहे थे।

विकसित हो भीड़ नियंत्रण का प्रभावी तंत्र

रमेश सर्राफ धमोरा

देश में हम आए दिन भीड़ में भगदड़ मचने से कई लोगों के मरने की खबरें पढ़ते रहते हैं। हाल ही में महाकुंभ स्नान के दौरान प्रयागराज में भीड़ में भगदड़ के चलते 37 लोगों को जान गंवानी पड़ी थी। इस घटना के कुछ दिनों बाद ही नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर महाकुंभ जाने वालों की भीड़ में अचानक भगदड़ मचने से 18 लोगों की मौत हो गई थी। यह दोनों ही दुर्घटना बहुत दुर्भाग्यपूर्ण व दुखद है।

देश में भगदड़ में मरने वालों की सूची बहुत लंबी है। सभी को पता है कि जहां बड़ी संख्या में लोगों की भीड़ एकत्रित होगी वहां कभी भी भगदड़ मचने की स्थिति पैदा हो सकती है। मगर अभी तक ऐसी कोई व्यवस्था नहीं बन पाई है जिससे भगदड़ की स्थिति ही उत्पन्न नहीं होने पाए। सरकारी भी भगदड़ होने के बाद उसको रोकने के ढोल पीट कर कुछ समय बाद शांत बैठ जाती है। मगर ऐसा कोई स्थाई तंत्र विकसित नहीं किया जाता है। जिससे भगदड़ की स्थिति होने से पहले ही सुरक्षा कर्मियों को अलर्ट मिले और वह उन पर नियंत्रण कर सके।

भगदड़ भीड़ प्रबंधन की असफलता की स्थिति में पैदा हुई मानव निर्मित आपदा है। भगदड़ प्रायः भीड़ भरे इलाको में किसी अफवाह के कारण भी पैदा हो सकती है। इसके अलावा प्राकृतिक आपदाएं एवं प्रशासनिक अव्यवस्था के कारण भी यह आपदा पैदा होती है। इसमें संपत्ति से अधिक जान की क्षति होने की संभावना रहती है। भीड़ दुर्घटनाओं में होने वाली मौतों के वैश्विक डेटाबेस के मुताबिक सन 2000 के बाद से भारत में 50 से ज्यादा विनाशकारी सामूहिक समारोहों में दो हजार से ज्यादा लोगों की जान चली गई है। इन दुर्घटना को देखते हुए प्रभावी भीड़ प्रबंधन तंत्र विकसित करने की बहुत जरूरत महसूस की जा रही है। खासकर कुंभ जैसे बड़े आयोजनों में इसकी काफी जरूरत महसूस होती है।

भगदड़ बेहद खतरनाक और घातक स्थिति होती है। किसी भी जगह पर जब भीड़ उसकी क्षमता से अधिक हो जाती है और लोगों के पास निकलने का रास्ता नहीं होता है। भीड़ की वजह से लोगों को पैर रखने की जगह नहीं मिलती है। ऐसी स्थिति में किसी तरह की अफवाह या दुर्घटना होने पर भीड़ बेकाबू हो जाती है। इसे भीड़ में हलचल भी कहा जाता है। इसकी वजह से ही भगदड़ की स्थिति बनती है। इसी तरह भीड़ में हलचल का मतलब भीड़ का बेतरतीब तरीके से एक से ज्यादा दिशाओं में एक ही समय में आगे बढ़ना है। ऐसे में लोगों को चलने के लिए जगह कम होती है वो एक-दूसरे के बीच दब जाते हैं। जब लोग एक-दूसरे से बहुत नजदीक होते हैं तो 'फोर्सेज का ट्रांसमिशन' यानी बल का संचरण हो सकता है। इस फोर्स ट्रांसमिशन को आपने भी कभी न कभी तब महसूस किया होगा जब आप एक बहुत भीड़-भाड़ वाली किसी लाइन में खड़े हुए होंगे। जब पीछे से अचानक धक्का लगता है तो व्यक्ति खुद भी उस धक्के को अपने से आगे खड़े व्यक्ति को ट्रांसफर कर देते हैं। ऐसे में अपना संतुलन बनाए रखना और अपने पैरों पर खड़े रहना लोगों के लिए बहुत मुश्किल हो जाता है।

ये पहली बार नहीं था जब किसी धार्मिक कार्यक्रम के दौरान भगदड़ मची हो। इसके पहले भी समय-समय पर भगदड़ मचने की खबरें सामने आती रही हैं। इन घटनाओं में कई लोगों की जान भी चली गई। 27 अगस्त 2003 महाराष्ट्र के नासिक जिले में कुंभ मेले में स्नान के दौरान भगदड़ मचने से 39 लोगों की मौत हो गई थी। 25 जनवरी 2005 को महाराष्ट्र के सतारा जिले में मंधारदेवी मंदिर में भगदड़ मच गई थी। जिसमें 340 से ज्यादा श्रद्धालु कुचले गए थे। 3 अगस्त 2008 हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर जिले में नैना देवी मंदिर में मची भगदड़ में 162 लोगों की मौत हो गई थी। 30 सितंबर 2008 राजस्थान के जोधपुर शहर में चामुंडा देवी मंदिर में मची भगदड़ में लगभग 250 श्रद्धालुओं की मौत हो गई थी। 4 मार्च 2010 को उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले में कृपालु महाराज के राम जानकी मंदिर में भगदड़ में 63 लोगों की मौत हो गई थी. 14 जनवरी 2011 को केरल के इडुक्की जिले के पुलमेडु में सबरीमाला मंदिर में एक जीप की टक्कर से मची भगदड़ में 104 श्रद्धालुओं की मौत हो गई थी। 8 नवंबर 2011 को हरिद्वार में गंगा नदी के किनारे हर की पौड़ी घाट पर मची भगदड़ में लगभग 20 लोगों की मौत हो गई थी। 19 नवंबर 2012 को पटना में गंगा नदी पर छठ पूजा के दौरान एक अस्थायी पुल के ढह जाने से भगदड़ मच गई थी जिसमें 20 लोगों की मौत हो गयी थी।

औपचारिक और बेहतर कर्ज से किसानों की बढ़ती उत्पादकता

भारत सरकार के आंकड़ों के अनुसार, देश की कुल जनसंख्या का 46.1 प्रतिशत हिस्सा खेती-किसानी और उससे जुड़े कार्यों से अपनी रोजी-रोटी चलाता है। हालांकि कुछ जानकारों का मानना है कि यह संख्या और भी ज्यादा हो सकती है।

साल 2025-26 के बजट में किसान क्रेडिट कार्ड पर किसानों को मिलने वाले तीन लाख रूपए के कर्ज को बढ़ाकर पांच लाख कर दी गई है। इसका जिक्र करते हुए केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने हाल ही में एक्स पर लिखा है कि इससे सब्जी-फल, हॉर्टिकल्चर की खेती करने वाले किसानों को विशेष रूप से लाभ होगा। अब वे खेती में ज्यादा पैसे लगा सकते हैं, ये उत्पादन की लागत घटाने के उपाय हैं। हालांकि किसान संगठनों को लगता है कि इसका जितना फायदा सोचा जा रहा है, उतना नहीं होने वाला है। किसान संगठनों की मांग है कि किसान क्रेडिट की सीमा बढ़ाने के साथ ही किसानों पर बकाया कर्जों को अगर माफ कर दिया जाए तो किसान जहां ज्यादा खुशहाल होंगे।

भारत सरकार के आंकड़ों के अनुसार, देश की कुल जनसंख्या का 46.1 प्रतिशत हिस्सा खेती-किसानी और उससे जुड़े कार्यों से अपनी रोजी-रोटी चलाता है। हालांकि कुछ जानकारों का मानना है कि यह संख्या और भी ज्यादा हो सकती है। सरकार के ही आंकड़ों के अनुसार देश के 12 करोड़ किसान परिवार सीमांत हैं। इनमें करीब 35 प्रतिशत की जोत 0.4 हेक्टेयर से कम है, जबकि 69 प्रतिशत किसानों के पास एक हेक्टेयर से कम जमीन है। आंकड़ों के अनुसार देश के 82 प्रतिशत किसान छोटे या सीमांत हैं। जिनकी जोत 0.4 हेक्टेयर से कम है, उनकी खेती से सालाना आमदनी आठ हजार रूपए के आसपास है। जाहिर है कि देश के किसानों के बड़े हिस्से के पास बिक्री के लिए उपज ही नहीं होती। खेती के जरिए वे जो अन्न या सब्जी उपजाते हैं, उनका इस्तेमाल अपने खाने-पीने में ही करते हैं। नरेंद्र मोदी सरकार ने 2014 में सत्ता संभालते ही किसानों की आय 2022 तक दोगुना करने का वादा किया था। उसके लिए जो कदम उठाए गए, उसी कड़ी में किसान क्रेडिट कार्ड की शुरूआत भी थी। इसके फायदे हुए भी हैं। लेकिन जो लक्ष्य रखा गया था, उसे पाना अब भी कठिन चुनौती बना हुआ है।

शिवराज सिंह चौहान का कहना ठीक है कि किसान क्रेडिट कार्ड की सीमा बढ़ाने का फायदा किसानों को होगा। इसकी तस्दीक हाल ही में राष्ट्रीय स्तर पर हुए कृषि सर्वेक्षण से जुड़े घरेलू स्तर के आंकड़ों का आकलन भी बताता है। घरेलू स्तर के आंकड़ों के जरिए कृषि में उत्पादकता और उसके जोखिम के साथ ही कृषि ऋण के प्रभाव का आकलन भी किया गया था। इस आकलन के नतीजे बताते हैं कि अगर किसानों को समय पर उचित कर्ज मिलता है तो उससे उसकी उत्पादकता में 24 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी दिखने लगती है। इससे किसानों को होने वाले नुकसान का जोखिम 16 फीसद तक कम हो जाता है।

महाजनी सभ्यता और अनौपचारिक कर्ज व्यवस्था के जोखिम और उससे उपजे खराब हालात से जूझते किसानों की दयनीय और मार्मिक कहानियों से भारतीय साहित्य भरा पड़ा है। हिंदी कथा सम्राट प्रेमचंद का मशहूर उपन्यास गोदान ऐसी ही कथाभूमि पर रचा गया गया है। उसे कृषक के दारूण जीवन की महागाथा कहा जाता ही है। बहरहाल यह अध्ययन मानता है कि किसानों को अगर औपचारिक क्षेत्र का ऋण मिलता है तो उसकी उपज और उसकी जिंदगी पर उस कर्ज का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है, जबकि अनौपचारिक यानी महाजनी कर्ज व्यवस्था का किसानों के जीवन पर नकारात्मक प्रभाव अधिक होता है। साफ है कि किसानों को अगर सही तरीके से औपचारिक कर्ज सही वक्त पर दीर्घकालिक अवधि के लिए मिले तो उसकी जिंदगी में महत्वपूर्ण बदलाव आ सकता है। कुछ अन्य अध्ययन भी बताते हैं कि अगर किसानों को समय पर दीर्घकालिक और औपचारिक कर्ज मिलता है तो उसकी खेती को जरूरतों को पूरा करने में उसे मदद मिलती है। इससे उसकी उत्पादकता बढ़ने की गुंजाइश बढ़ जाती है। किसान की उपज बढ़ जाती है, फसल तैयार भी हो जाती है, लेकिन उसे बेचने के लिए सही बाजार तक पहुंच के लिए रकम नहीं होती तो उसे अपनी फसल और उपज औने-पौने दामों में बेचनी

पड़ती है। लेकिन अगर किसान को सही तरीके से औपचारिक कर्ज मिलता है तो उस पर तात्कालिक आर्थिक दबाव नहीं रहता और फ़सल के बाद के खर्चों को पूरा करने में उसे मदद मिलती है। अगर किसानों के पास कुछ पैसे रहते हैं तो उस पर घरेलू जरूरतों का दबाव नहीं झेलना पड़ता और उसे अपने घरेलू खर्चों को पूरा करने में जहां सहायता मिलती है, वहीं इसके लिए उसे अपनी उपज सेंतमेत में बेचने को मजबूर नहीं होना पड़ता। इस कर्ज से किसान अपने कृषि उपकरणों और दूसरी अवसंरचनाओं को आसानी से रखरखाव कर सकता है। अध्ययन बताते हैं कि समय बद्ध और सहूलियत भरे अधिक कर्ज के जरिए किसानों को पशुपालन, डेयरी, मत्स्य पालन जैसे कृषि आधारित और सहयोगी कामों को आगे बढ़ाने में मदद होती है। इस पूरी प्रक्रिया का असर यह होता है कि किसान की आर्थिक सुरक्षा मज़बूत हो जाती है। तब वह बाजार और अपने उपज की वाजिब कीमत का इंतजार भी कर सकता है। आर्थिक सहूलियत रहने से समय पर वह जरूरी खाद और दवाओं को खरीदकर उनका खेती में इस्तेमाल कर सकता है। इसके साथ ही वह दूसरे खर्चों का दबाव भी नहीं महसूस कर सकता है।

बीती 31 जनवरी को को संसद में पेश आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार देश में मार्च 2024 तक 7.75 करोड़ किसान क्रेडिट कार्ड जारी किए जा चुके थे। इनके जरिए किसानों को 9.81 लाख करोड़ रुपये की राशि दी जा चुकी है। यह रिपोर्ट भी कहती है कि छोटे और सीमांत किसानों को लाभ देने के चलते खेती की उत्पादकता और किसानों की आय बढ़ाने में मदद मिल रही है। इस रिपोर्ट के अनुसार, देश के 5.9 करोड़ किसानों को किसान क्रेडिट योजना का फायदा उठा रहे हैं। किसानों की उत्पादकता बढ़ाने को ही ध्यान में रखते हुए बैंकों को स्पष्ट निर्देश है कि अपने कर्ज का कम से कम 40 प्रतिशत हिस्सा कृषि और छोटे किसानों को दें। इसके जरिए कोशिश की जा रही है कि छोटे और सीमांत किसानों को आसानी से औपचारिक कर्ज तो मिल ही सके, उन्हें महंगी दर पर अवशोषक अंदाज में मिलने वाली निजी कर्ज राशि पर निर्भरता ना रहे। आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार, अब साहूकार जैसे गैर-बैंकिंग कर्जदाताओं पर किसानों की निर्भरता घटकर 1950 के 90 फीसद की तुलना में 2022 में सिर्फ 25 फीसद रह गई। साफ है कि अब ज्यादातर किसान बैंक और संस्थागत स्रोतों से कर्ज ले रहे हैं, जिससे उनकी आर्थिक ताकत और उत्पादकता बढ़ रही है।

आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार, 2014-15 से 2024-25 तक कृषि क्षेत्र के कर्ज में 12.98 प्रतिशत की सालाना बढ़ोतरी हुई है। इसी सर्वेक्षण के मुताबिक, साल 2014-15 में जहां किसानों को 8.45 लाख करोड़ रुपये का कर्ज दिया गया था, वहीं 2023-24 में यह रकम बढ़कर 25.48 लाख करोड़ रुपये हो गई। इसके अनुसार, छोटे और सीमांत किसानों को मिलने वाले कर्ज में तेजी से बढ़ोतरी हुई है। साल 2014-15 में छोटे किसानों को जहां 3.46 लाख करोड़ रुपये मिले थे, वह 2023-24 में बढ़कर 14.39 लाख करोड़ रुपये हो गया। सरकार का मानना है कि छोटे किसानों को बैंकों से ज्यादा कर्ज मिल रहा है और इससे वे अपनी खेती तो सुधार रहे ही हैं, अपनी आर्थिक स्थिति भी बेहतर कर रहे हैं। बहरहाल कृषि पर निगाह रखने वाले स्वतंत्र विचारक भी मानते हैं कि किसानों के लिए अल्पकालिक की तुलना में दीर्घकालिक ऋण अधिक प्रभावी है। इसीलिए जानकार मानते हैं कि मौजूदा जलवायु परिवर्तन से आसन्न संकट के दौर में किसानों को मौसम के साथ अनुकूलन और उस लिहाज से अपनी खेती को ढालने के लिए ऐसी कृषि केंद्रित वित्त योजनाओं की जरूरत ज्यादा है। हालांकि इसका एक दूसरा पहलू भी है। कुछ लोगों का मानना है कि किसान कर्ज के बोझ से दबा हुआ है। बजट पर चर्चा के दौरान संसद में राजस्थान के सांसद हनुमान बेनीवाल का यह कहना कि बकाया कृषि कर्ज की रकम अब 32 लाख करोड़ रुपये से अधिक हो गई है। यह रकम 18.74 करोड़ से अधिक किसानों पर बोझ बन गई है। इसलिए सरकार को इस ओर भी ध्यान देना चाहिए।

- उमेश चतुर्वेदी

एडवांस्ड ड्राइवर असिस्टेंस सिस्टम सेफ्टी फीचर के साथ भारत में मिलती हैं ये पांच सबसे सस्ती कारें और एसयूवी, कीमत 10 लाख रुपये से शुरू

परिवहन विशेष न्यूज

सस्ती एडीएएस कारें भारतीय बाजार में कई बेहतरीन फीचर वाली Cars and SUVs को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। लेकिन कई कारों में सुरक्षा के लिए पर ADAS जैसे बेहतरीन सेफ्टी फीचर को भी ऑफर जाता है। ऐसी कौन सी पांच सबसे सस्ती कार और एसयूवी हैं जिनमें इस फीचर को ऑफर किया जाता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में कई बेहतरीन फीचर्स के साथ कारों को ऑफर किया जाता है। इन फीचर्स के साथ ही सेफ्टी फीचर के तौर पर ADAS को भी दिया जाता है। ऐसी कौन सी पांच Cars and SUVs हैं जिनको 15 लाख रुपये से कम कीमत पर खरीदा जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

ADAS के साथ मिलती है सुरक्षा

दुनियाभर में हर रोज बड़ी संख्या में सड़क हादसे होते हैं, जिनमें कई लोग घायल हो जाते हैं। जिसे देखते हुए वाहन निर्माताओं की ओर से लगातार सुरक्षा बढ़ाने पर काम किया जा रहा है। इसी क्रम में कारों में ADAS को दिया जा रहा है। इस सेफ्टी फीचर के कारण हादसे कम करने में मदद मिलती है और ज्यादा बेहतर सुरक्षा मिलती है। हालांकि नीचे बताई कारों के कुछ वेरिएंट्स में ही इस सेफ्टी फीचर को दिया जाता है।

Honda Amaze 2024

जापानी वाहन निर्माता Honda की ओर से Amaze को कॉम्पैक्ट सेडान कार के तौर पर लाया जाता है। इस सेगमेंट में अमेज इकलौती गाड़ी है जिसमें ADAS जैसे सेफ्टी फीचर को ऑफर किया जाता है। इसकी एक्स शोरूम कीमत 8.10 लाख रुपये से शुरू हो जाती है। लेकिन इसके ZX वेरिएंट में इस फीचर को दिया जाता है, जिसकी एक्स शोरूम कीमत 9.99 लाख रुपये है।

Kia Sonet

किआ की ओर से भी ADAS जैसे सेफ्टी फीचर के साथ Sonet को ऑफर किया जाता है। कंपनी की इस गाड़ी में Level-1 ADAS को दिया जाता है। इसकी एक्स शोरूम कीमत आठ लाख रुपये से शुरू हो जाती है। लेकिन इसके GTX+ वेरिएंट में ADAS को दिया जाता है उसकी एक्स शोरूम कीमत 14.80 लाख रुपये है।

Hyundai Venue

हुंडई की ओर से भी सब फोर मीटर एसयूवी के तौर पर लाई जाने वाली वेन्यू में भी ADAS जैसे सेफ्टी फीचर को दिया जाता है। इस गाड़ी को 7.95 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत से खरीदा जा सकता है। हुंडई की ओर से SX(O) वेरिएंट में यह सेफ्टी फीचर दिया जाता है, जिसकी एक्स शोरूम कीमत 12.53 लाख रुपये है।

Mahindra XUV 3XO

महिंद्रा की ओर से भी XUV 3XO को ADAS के साथ ऑफर किया जाता है। इस गाड़ी में Level-2 ADAS को दिया जाता है। कंपनी की ओर से इस गाड़ी की एक्स शोरूम कीमत 7.99 लाख रुपये से शुरू की जाती है। इसके AX5L वेरिएंट से इस सेफ्टी फीचर को दिया जाता है। जिसकी एक्स शोरूम कीमत 12.44 लाख रुपये से शुरू होती है।

MG Astor

ब्रिटिश वाहन निर्माता एमजी मोटर्स की ओर से भी ADAS जैसे सेफ्टी फीचर के साथ MG Astor को भारतीय बाजार में बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। कंपनी की इस एसयूवी की शुरुआती एक्स शोरूम कीमत 9.99 लाख रुपये है। एसयूवी के Savvy Pro वेरिएंट में ADAS को दिया जाता है। जिसकी एक्स शोरूम कीमत 17.45 लाख रुपये से शुरू होती है।

मारुति एस-प्रेसो को खरीदना हो गया महंगा, फ़रवरी 2025 में कितनी बढ़ गई कीमत, पढ़ें खबर

परिवहन विशेष न्यूज

मारुति एस प्रेसो की कीमत में बढ़ोतरी 2025 मारुति की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों को ऑफर किया जाता है। कंपनी की ओर से हैचबैक सेगमेंट में ऑफर की जाने वाली S-Presso की कीमतों में बढ़ोतरी कर दी है। मारुति की एस-प्रेसो के किन वेरिएंट्स की कीमत बढ़ाई गई हैं। कितने रुपये की बढ़ोतरी के बाद अब किस कीमत पर इसे ऑफर किया जा रहा है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। देश की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Maruti Suzuki की ओर से अपनी कारों की कीमतों में बढ़ोतरी की गई है। अब कंपनी की हैचबैक कार S-Presso की कीमतों में भी बढ़ोतरी हो गई है। मारुति की इस गाड़ी की कीमत में कितनी बढ़ोतरी हुई है। किन वेरिएंट्स की कीमतों को बढ़ाया (Maruti S Presso Price Hike 2025) गया है। अब किस कीमत पर इसे खरीदा जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Maruti S-Presso को खरीदना हुआ महंगा

मारुति की ओर से ऑफर की जाने वाली हैचबैक कार एस-प्रेसो को खरीदना महंगा हो गया है। कंपनी की ओर से February 2025 में कीमत बढ़ाई गई है। इसके पहले दिसंबर 2024 में ही कंपनी ने अपने उत्पादों की कीमत बढ़ाने की जानकारी दे दी थी।

कितनी महंगी हुई गाड़ी

जानकारी के मुताबिक सभी वेरिएंट्स के दामों में बढ़ोतरी नहीं की गई है। लेकिन जिन वेरिएंट्स की कीमत को बढ़ाया गया है, उनको खरीदना अब पांच हजार रुपये तक महंगा हो गया है।

किन वेरिएंट्स की बढ़ी कीमत

Maruti S-Presso की कीमत में पांच हजार रुपये बढ़ाए गए हैं। यह बढ़ोतरी VXI (O) AMT और VXI (O)+ AMT वेरिएंट्स में ही की गई है। इनके अलावा किसी भी वेरिएंट की कीमत में कोई बदलाव नहीं किया गया है।

February 2025 car prices

Maruti S-Presso की एक्स शोरूम कीमत की शुरुआत 4.26 लाख रुपये से होती है और इसके टॉप वेरिएंट को 6.11 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर खरीदा जा सकता है। कीमत में बढ़ोतरी के बाद अब VXI (O) AMT वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 5.71 लाख रुपये और VXI (O)+ AMT वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत छह लाख रुपये हो गई है।

कितना दमदार इंजन

मारुति अपनी एस-प्रेसो कार को 998 सीसी की क्षमता के K10C इंजन के साथ लाती है। जिससे इसे 49 किलोवाट की पावर और 89 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। इसमें 5स्पीड मैनुअल और एजीएस ट्रांसमिशन के विकल्प को दिया जाता है।

Maruti S-Presso features

मारुति एस-प्रेसो में एसी, हीटर, पावर स्टेयरिंग, की-लैस एंट्री, आईएसएस, पावर विंडो, 17.78 सेमी इंफोटेनमेंट सिस्टम, एपल कार प्ले, एंड्राइड ऑटो, एबीएस, ईएसपी, ड्यूल एयरबैग, हिल होल्ड असिस्ट, पार्किंग सेंसर, सीट बेल्ट रिमाइंडर, स्पीड अलर्ट सिस्टम जैसे फीचर्स को दिया जाता है।

किनसे है मुकाबला

कंपनी की ओर से एस-प्रेसो को हैचबैक सेगमेंट में लाया जाता है। इस सेगमेंट में Maruti S-Presso का सीधा मुकाबला Renault Kwid, Maruti Alto K10, Maruti Wagon R, Tata Tiago जैसी कारों के साथ होता है।

स्कोडा कोडिएक भारतीय बाजार में जल्द होगी लॉन्च, दमदार इंजन और बेहतरीन फीचर्स के साथ देगी टोयोटा, एमजी को चुनौती

परिवहन विशेष न्यूज

स्कोडा कोडियाक एसयूवी लॉन्च यूरोप की वाहन निर्माता Skoda की ओर से भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। कंपनी की ओर से जल्द ही नई गाड़ी को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। कंपनी की ओर से कब तक और किस सेगमेंट में नई गाड़ी लाई जा सकती है। किस तरह के फीचर्स को इसमें दिया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। चेक रिपब्लिक की वाहन निर्माता Skoda की ओर से भारत में सेडान से लेकर एसयूवी सेगमेंट के वाहनों की बिक्री की जाती है। कंपनी की ओर से जल्द ही नई एसयूवी को भारत लाने की तैयारी की जा रही है। किस सेगमेंट किस तरह के फीचर्स और इंजन के साथ इसे लाया जाएगा। कब तक एसयूवी को लॉन्च (Skoda Kodiaq SUV Launch) किया जाएगा। बाजार में मौजूद किस कंपनी की किस एसयूवी को स्कोडा की नई एसयूवी से चुनौती मिलेगी। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Skoda लाएगी नई SUV

स्कोडा की ओर से भारत में नई एसयूवी को लाने की तैयारी की जा रही है। कंपनी की ओर से जल्द ही नई एसयूवी के तौर पर Skoda Kodiaq को लॉन्च किया जा सकता है।

कब तक हो सकती है लॉन्च

रिपोर्ट्स के मुताबिक कंपनी की योजना अप्रैल 2025 में नई एसयूवी के तौर पर Skoda Kodiaq को लॉन्च करने की है। हालांकि अभी औपचारिक तौर पर इसकी घोषणा होना बाकी है।

क्या होगी खासियत

कंपनी की ओर से नई एसयूवी में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जाएगा। इसमें ब्लैक आउट फ्रंट ग्रिल के अलावा नए डिजाइन वाले अलॉय व्हील्स, साइड क्लैडिंग, एलईडी डीआरएल और स्लीक हेडलाइट्स को दिया जाएगा। रियर में सी शेप में एलईडी लाइट्स को दिया जाएगा। इंटीरियर में भी ब्लैक थीम को रखा जाएगा और 13 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम के साथ ही 10 इंच का डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर दिया जाएगा। इसके साथ ही सेफ्टी के लिए भी कई बेहतरीन फीचर्स के साथ ADAS को भी दिया जा सकता है।

कितना दमदार इंजन

रिपोर्ट्स के मुताबिक एसयूवी में पहले की तरह ही दो लीटर की क्षमता का टर्बो इंजन दिया जाएगा। जिससे 190 हॉर्स पावर के साथ 320 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलेगा। इसमें 7स्पीड डीसीटी ट्रांसमिशन के साथ 4X4 को भी दिया जाएगा।

किनसे होगा मुकाबला

स्कोडा की नई एसयूवी के तौर पर आने वाली कोडियाक को डी सेगमेंट एसयूवी के तौर पर लाया जाएगा। इस सेगमेंट में इसका

सीधा मुकाबला Toyota Fortuner और MG Gloster जैसी एसयूवी के साथ होगा।

कितनी होगी कीमत

लॉन्च के समय ही एसयूवी की सही कीमत की जानकारी दी जाएगी। लेकिन उम्मीद की जा रही है कि Skoda Kodiaq को 40 लाख रुपये के आस-पास की एक्स शोरूम कीमत पर लॉन्च किया जा सकता है। खास बात यह है कि कंपनी की ओर से इस एसयूवी को जनवरी 2025 में आयोजित किए गए Auto Expo में शोकेस किया गया था।

महिंद्रा स्कॉर्पियो एन का बढ़ा भौकाल, लॉन्च हुआ कार्बन संस्करण, जानें कितनी है कीमत और क्या है खासियत

परिवहन विशेष न्यूज

महिंद्रा स्कॉर्पियो एन कार्बन संस्करण महिंद्रा की ओर से भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में एसयूवी की बिक्री की जाती है। कंपनी की ओर से मिड साइज एसयूवी के तौर पर ऑफर की जाने वाली Mahindra Scorpio N को Carbon Edition के साथ लॉन्च कर दिया गया है। कंपनी की ओर से इसमें क्या खासियत दी गई हैं। किस कीमत पर इसे खरीदा जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में एसयूवी सेगमेंट के वाहनों को काफी ज्यादा पसंद किया जाता है। कंपनी की ओर से ऑफर की जाने वाली Mid Size SUV Mahindra Scorpio N के Carbon Edition को लॉन्च कर दिया गया है। इसमें किस तरह की खासियतों को दिया गया है। किस कीमत पर इसे लॉन्च किया गया है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

लॉन्च हुआ Mahindra Scorpio N का Carbon Edition

महिंद्रा की ओर से Scorpio N के Carbon Edition को भारत में लॉन्च कर दिया गया है। कंपनी की ओर से सामान्य वर्जन के मुकाबले कार्बन एडिशन को फुल ब्लैक थीम पर लाया गया है। एसयूवी के नए एडिशन को सिर्फ टॉप वेरिएंट Z8 और Z8L में ही दिया गया है।

क्या है खासियत

महिंद्रा की ओर से स्कॉर्पियो एन के ब्लैक एडिशन में कार्बन थीम को एक्सटीरियर के साथ ही इंटीरियर में भी दिया गया है। एक्सटीरियर में एसयूवी में 18 इंच पियानो ब्लैक अलॉय व्हील्स, डार्क गेलवेनो फिनिश रूफ रेल, हेडलैंप, टेल लैंप और डोर हैंडल में स्मोक्ड क्रोम फिनिश को दिया गया है। इसके साथ ही इंटीरियर में ड्यूल टोन थीम की जगह सिर्फ ब्लैक थीम को ऑफर किया गया है।

कितना दमदार इंजन

कंपनी की ओर से Scorpio N Carbon Edition के इंजन में किसी भी तरह का बदलाव नहीं किया गया है। एसयूवी में दो लीटर की क्षमता का पेट्रोल और 2.2 लीटर की क्षमता के डीजल इंजन का ही उपयोग किया गया है। इसके साथ ही एसयूवी के ब्लैक एडिशन में मैनुअल और ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन के विकल्प को दिया गया है। एसयूवी के कार्बन एडिशन में भी 4WD के विकल्प को दिया गया है।

कैसे हैं फीचर्स

Mahindra Scorpio N के Carbon Edition में कंपनी की ओर से ईएससी, हिल होल्ड, एबीएस, ईबीडी, डीडीडी, पार्किंग सेंसर, एयरबैग, टीपीएमएस, चारों पहियों में डिस्क ब्रेक, ई-कॉल, आइसोफिक्स चाइल्ड एंकरेज, फ्रंट वेंटिलेटिड सीट्स, इंजन स्टार्ट/स्टॉप, ड्यूल जोन एसी, एड्रेनॉक्स, 12 स्पीकर के साथ ऑडियो सिस्टम, 17.78 सेमी डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, इंफोटेनमेंट सिस्टम, एंड्राइड ऑटो, एपल कार प्ले, वायरलेस चार्जिंग, स्टेयरिंग कंट्रोल्स, फ्रंट और रियर कैमरा, चार्जिंग पोर्ट, पुश बटन स्टार्ट, सनरूफ, एलईडी लाइट्स, हाई ग्लॉस सेंटर कंसोल जैसे फीचर्स को दिया गया है।

कितनी है कीमत

महिंद्रा स्कॉर्पियो के कार्बन एडिशन की एक्स शोरूम कीमत 19.19 लाख रुपये रखी गई है। इस एडिशन के टॉप वेरिएंट को 24.89 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर लॉन्च किया गया है।

किनसे होगा मुकाबला

Mahindra Scorpio N के Carbon Edition का बाजार में सीधा मुकाबला Tata Safari Stealth Edition और MG Hector Black Storm Edition के साथ होगा।

उन्नत तकनीक और भविष्य की खेती

विजय गर्ग

पीढ़ियों से, भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था की रीढ़ रही है, जो आबादी के एक बड़े हिस्से को रोजगार प्रदान करती है। हालांकि, यह एक ऐसा क्षेत्र है जो कई चुनौतियों से ग्रस्त है। जैसे, अप्रत्याशित मानसून खंडित जीत और कीमतों में उतार-चढ़ाव इन मुद्दों ने कृषि संकट और बेहतर अवसरों की तलाश में शहरी क्षेत्रों 1 में पलायन में योगदान दिया है। इस परिदृश्य में एआइ की शुरुआत इन चुनौतियों समाधान करने, उत्पादकता बढ़ाने और इस प्रक्रिया में कृषि कार्य के लिए एक नई पीढ़ी बनाने का एक अनूठा अवसर प्रस्तुत करती है।

कृत्रिम मेधा यानी एआइ का बढ़ता उपयोग और इसका प्रभाव आज चर्चित मुद्दा है प्रधानमंत्री ने भी कुछ दिनों पहले पेरिस में आयोजित 'एआइ सिक्योरिटी समिट' के दौरान सार्वजनिक, निजी और शैक्षणिक हितधारकों से एक विश्वसनीय एआइ पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के लिए मिल कर काम करने का आह्वान किया था। इसमें कोई दो राय नहीं कि एआइ हमारे काम करने के तरीके को बदल देगा। विश्व आर्थिक मंच का अनुमान अनुमान कि एआइ 2027 तक विश्व स्तर पर आठ करोड़ तीस लाख नौकरियों को खत्म कर देगा। एआइएमफ की रपट की मानें तो एआइ के कारण दुनियाभर में लगभग 40 फीसद नौकरियां प्रभावित होंगी। अगर हम भारत के संदर्भ में बात करें, तो हमारा देश, जो कृषि परंपराओं से जुड़ा हुआ है, आज एक तकनीकी क्रांति के कगार पर खड़ा है भारत अपनी विशाल आबादी और विविध अर्थव्यवस्था के कारण अद्वितीय चुनौतियों का सामना कर रहा है। अगर ठीक से प्रबंधित किया जाए, तो एआइ में उत्पादकता, दक्षता और रोजगार बढ़ाते हुए इन चुनौतियों से लड़ने की अपार क्षमता है।

ऐसे समय में जब सबसे ज्यादा चर्चा विनिर्माण और सेवा क्षेत्र सहित अन्य क्षेत्रों पर स्वचालन (आटोमेशन) और एआइ के प्रभाव पर केंद्रित है, तब कृषि क्षेत्र रहा तकनीकी परिवर्तन न केवल उत्पादकता, बल्कि रोजगार के अवसर पैदा करने की अपार क्षमता रखता है। भारत एकमात्र ऐसा देश है जो प्रति हेक्टेयर उत्पादन अन्य देशों की तुलना में कम होने के बावजूद, पूरी दुनिया को खाद्यान्न संकट से बाहर निकालने की क्षमता रखता है। नीति निर्धारकों को यहां यह ध्यान रखना आवश्यक है भारत में रोजगार का भविष्य केवल प्रौद्योगिकी के विघटनकारी प्रभावों को कम करने पर निर्भर नहीं है, बल्कि रणनीतिक से विकास रास्ते बनाने के लिए कृषि जैसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में इसकी शक्ति का उपयोग करने पर निर्भर करने पर निर्भर है।

पीढ़ियों से, भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था की रीढ़ रही है, जो आबादी के एक बड़े हिस्से को रोजगार प्रदान करती है। हालांकि, यह एक ऐसा क्षेत्र है जो कई चुनौतियों से ग्रस्त है। जैसे, अप्रत्याशित मानसून खंडित जीत और कीमतों में उतार-चढ़ाव इन मुद्दों ने कृषि संकट और बेहतर अवसरों की तलाश में शहरी क्षेत्रों 1 में पलायन में योगदान दिया है। इस परिदृश्य में एआइ की शुरुआत इन चुनौतियों समाधान करने, उत्पादकता बढ़ाने और इस प्रक्रिया में कृषि कार्य के लिए एक नई पीढ़ी बनाने का एक अनूठा अवसर प्रस्तुत करती है।

यह स्वाभाविक है कि स्वचालन से बड़े पैमाने पर नौकरियां खत्म हो N जाएंगी, लेकिन, भारतीय कृषि के संदर्भ में, एआइ से मानव क्षमता बढ़ने की अधिक संभावना है, न कि उन्हें पूरी तरह से बदलने की संभावनाओं पर अगर विचार करें, तो एआइ- संचालित सेंसर मिट्टी के स्वास्थ्य की निगरानी, मौसम की अधिक सटीकता से भविष्यवाणी और सिंचाई के समय को अनुकूलित कर सकते हैं, जिससे बढ़ी हुई पैदावार और संसाधनों की बर्बादी में कमी हो सकती है एआइ से लैस ड्रोन विशाल खेतों का सर्वेक्षण कर सकते हैं और कीटों या बीमारियों से प्रभावित क्षेत्रों की पहचान कर सकते हैं। यहां तक कि लक्षित उपचार भी दे सकते हैं, जिससे व्यापक कीटनाशक अनुप्रयोग की आवश्यकता कम हो जाती है। ये प्रौद्योगिकियां मानव भागीदारी की आवश्यकता को खत्म नहीं करतीं, बल्कि काम की प्रकृति को बदल देती हैं।

कृषि में एआइ के एकीकरण से विभिन्न क्षेत्रों में कुशल पेशेवरों की मांग पैदा होगी। हमें कृषि इंजीनियरों की आवश्यकता है, जो एआइ-संचालित मशीनरी और सिंचाई प्रणालियों को डिजाइन करें और बनाए रख सकें। हमें डेटा वैज्ञानिकों की आवश्यकता है, जो इन प्रणालियों द्वारा उत्पन्न विशाल डेटा का विशेषण कर सकें। हमें कृषि कार्यकर्ताओं की भी आवश्यकता है, जो प्रौद्योगिकी और किसानों के बीच की खाई को पाट सकें, जटिल डेटा को व्यावहारिक सलाह में बदल सकें। हमें साफ्टवेयर डेवलपर की आवश्यकता है, जो विशिष्ट कृषि आवश्यकताओं के लिए एआइ ऐप बना सकें। हमें ड्रोन पायलटों की आवश्यकता है जो इन महत्त्वपूर्ण उपकरणों का संचालन और रखरखाव कर सकें। संभावनाएं विशाल और विविध हैं।

इसके अलावा, कृषि में में एआइ का अनुप्रयोग सहायक उद्योगों के विकास को प्रोत्साहित कर सकता है, जिससे रोजगार के अवसरों का और विस्तार हो सकता है। किसानों को सीधे बाजारों से जोड़ने के लिए एआइ-संचालित मंचों श्रृंखला प्रबंधन और ई-कामर्स में नई भूमिकाएं के विकास से रसद, आपूर्ति पैदा हो सकती हैं। हालांकि, इस । क्षमता को साकार करने के लिए सभी हितधारकों को ठोस प्रयास करने की का प्रयास आवश्यकता है सक्षम वातावरण बनाने में सरकार की की भी बड़ी। भूमिका है। । इसमें कृषि एआइ में अनुसंधान और विकास में किसानों को इन तकनीकों को अपनाने के लिए सबसिडी और प्रोत्साहन प्रदान करना तथा कार्यबल को आवश्यक कौशल से लैस प्रशिक्षण कार्यक्रम विकसित करना शामिल है। 'एग्रीटेक' कंपनियों के लिए निजी क्षेत्र को भी इसमें भूमिका निभानी होगी। 'एग्री- छोटे किसानों की जरूरतों के अनुरूप किफायती और सुलभ एआइ समाधान विकसित करने की आवश्यकता है। उन्हें यह सुनिश्चित करने के लिए किसानों और विश्वविद्यालयों के साथ मिल के साथ मिल कर काम करने की कृषि जरूरत है कि ये प्रौद्योगिकियां उपयोगकर्ता के अनुकूल और प्रभावी हों कई किसानों, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, इंटरनेट और डिजिटल साक्षरता तक पहुंच की कमी है। ग्रामीण ब्राडबैंड बुनियादी ढांचे और डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों में निवेश के के माध्यम से इस अंतर को पाटना यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है कि कृषि में एआइ के लाभ सभी किसानों तक पहुंचें। इसमें न केवल प्रौद्योगिकी तक पहुंच प्रदान करना शामिल है, बल्कि किसानों को इसका प्रभावी ढंग से उपयोग करने के तरीके के बारे में प्रशिक्षित शिक्षित करना भी शामिल है।

तकनीकी पहलुओं से परे, इस परिवर्तन के सामाजिक और आर्थिक सामात निहितार्थी को संबोधित करना भी महत्त्वपूर्ण है। यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि छोटे सीमांत किसान इस तकनीकी क्रांति में पीछे न रहें। सामूहिक खेती का समर्थन करने, ऋण और बीमा तक पहुंच प्रदान करने और बाजार संबंधों को बढ़ावा देने। देने वाली नीतियां छोटे किसानों को एआइ-संचालित कृषि से लाभान्वित होने में मदद कर सकती हैं। इसके अलावा, उन लोगों के लिए सामाजिक सुरक्षा जाल बनाना आवश्यक है, जो एआई के कारण हाशिए पर जा सकते हैं, भले ही हम नई नौकरियां पैदा करें। भारतीय कृषि में कृत्रिम मेधा का भविष्य किसानों को रोबोट से बदलने बारे में नहीं है, बल्कि उन्हें उन उपकरणों और ज्ञान के साथ सशक्त बनाने बारे में है, जिनकी उन्हें तेजी से बदलती दुनिया में पनपने के लिए आवश्यकता है। एआइ को अपना कर और अपने कार्यबल के कौशल में निवेश कर, हम भारतीय कृषि को अधिक उत्पादक, टिकाऊ और न्यायसंगत क्षेत्र में बदल सकते हैं। कृषि क्षेत्र में एक नई पीढ़ी बना सकते हैं। सभी के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित कर सकते हैं। यह परिवर्तन सिर्फ फसलें उगाने के बारे में नहीं है, यह भारत के लिए एक उज्जवल भविष्य की खेती करने के बारे में है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार मलोट पंजाब

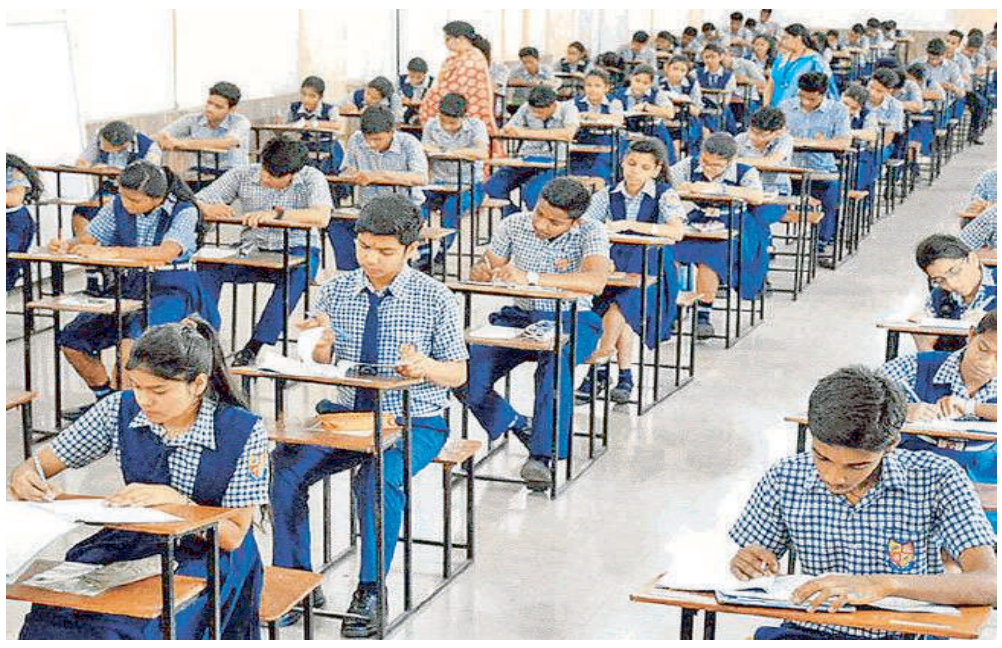

शिक्षा प्रणाली की परीक्षा

विजय गर्ग

हाल में जारी इंडियाज ग्रेजुएट स्किल इंडेक्स-2025 की रिपोर्ट चिंतित करने वाली है। इसकी मानें तो भारतीय स्नातकों को कौशल की कमी के चलते नौकरी नहीं मिल रही है। सरकारी रिपोर्ट हों या निजी सर्वेक्षण, हर जगह एक ही कहानी सामने आती है- डिग्रीधारी बेरोजगारों की संख्या बढ़ती जा रही है। एक तरफ देश में स्किल इंडिया और आत्मनिर्भर भारत जैसे अभियान चलाए जा रहे हैं और दूसरी तरफ 57.4 प्रतिशत ग्रेजुएट बेरोजगारी की मार झेल रहे हैं? क्या हमारी शिक्षा प्रणाली युवाओं को सिर्फ डिग्री लेने की मशीन बना रही है? स्कूल और कालेजों में घंटों बैठकर किताबी ज्ञान रटने वाले छात्र जब नौकरी के लिए इंटरव्यू देने जाते हैं, तो उन्हें यह कहकर बाहर कर दिया जाता है कि उनमें व्यावहारिक कौशल की कमी है। क्या शिक्षा सिर्फ परीक्षाओं में अच्छे अंक लाने तक ही सीमित हो गई है? रिपोर्ट बताती है कि करियर में सफलता के लिए 55.1 प्रतिशत संचार कौशल, 54.6 प्रतिशत क्रिटिकल थिंकिंग और 54.2 प्रतिशत विश्लेषणात्मक क्षमता की आवश्यकता होती है, लेकिन क्या हमारी शिक्षा प्रणाली इन कौशलों को विकसित करने पर ध्यान दे रही है ?

रोजगार पैदा करने के लिए सिर्फ योजनाएं बनाना काफी नहीं, बल्कि शिक्षा व्यवस्था को मौलिक रूप से बदलने की जरूरत है। क्यों न हमारी शिक्षा प्रणाली को इस तरह से विकसित किया जाए कि हर छात्र को नौकरी के लिए मोहताज न होना पड़े, बल्कि वह अपने कौशल के दम पर खुद रोजगार पैदा कर सके। क्या शिक्षा सिर्फ एक कागजी प्रमाणपत्र बनकर रह गई है या वास्तव में जीवन संवारने का जरिया है ? समस्या सिर्फ नीति निर्धारकों की नहीं, बल्कि समाज की मानसिकता की भी है। अभिभावक आज भी बच्चों को डाक्टर, इंजीनियर या सरकारी नौकरी

की दौड़ में धकेल रहे हैं, बिना यह सोचे कि उनकी वास्तविक रुचि और क्षमता क्या है । क्या हर किसी को नौकरी की तलाश में भटकना चाहिए या उसे अपने भीतर के हुनर को पहचानने का अवसर मिलना चाहिए?

तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देने की बात होती है, लेकिन व्यावसायिक शिक्षा का भी उतना ही महत्व दिया जाना चाहिए। एक बढ़ई, एक प्लंबर, एक इलेक्ट्रीशियन का काम भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि एक इंजीनियर या डाक्टर का, लेकिन क्या समाज उन्हें समान सम्मान देता है ? शायद नहीं। यह मानसिकता भी बदलनी होगी। आज जरूरत है कि शिक्षा को सिर्फ डिग्री और अंकों की दौड़ से निकालकर व्यावहारिक ज्ञान और उद्यमिता से जोड़ा जाए। हर छात्र में कोई न कोई प्रतिभा होती है, जरूरत है उसे सही दिशा देने की। अगर हम शिक्षा को केवल नौकरी पाने का जरिया बनाएंगे, तो बेरोजगारी की समस्या बनी ही रहेगी। शिक्षा का असली उद्देश्य आत्मनिर्भरता और नवाचार को बढ़ावा देना होना चाहिए।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार मलोट पंजाब

मनुष्य बनाम मशीन

विजय गर्ग

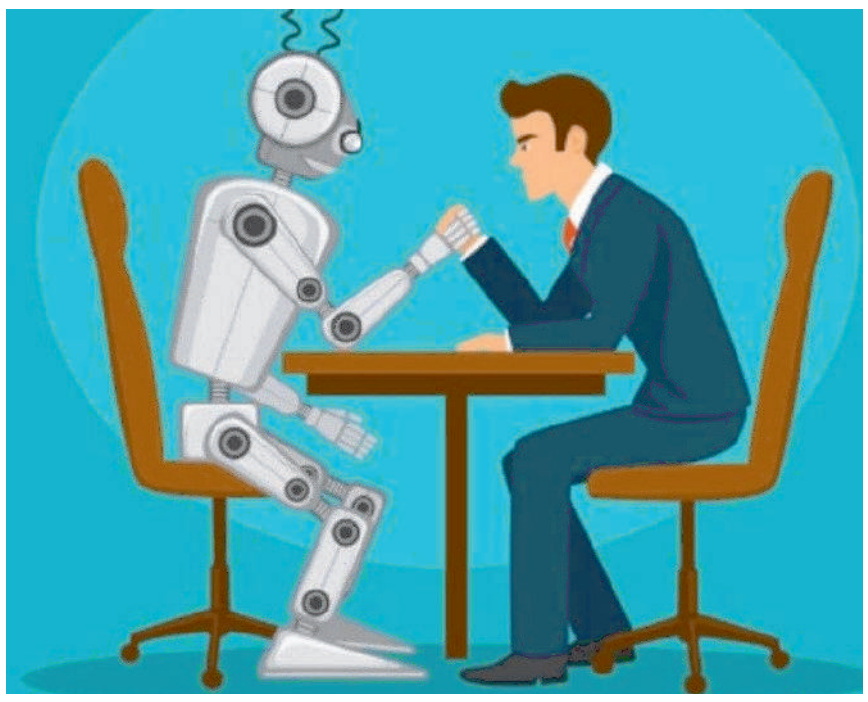

यह सही है कि किसी भी देश की उन्नति में एक बड़ा हाथ उस देश के पूंजीपतियों का होता है, लेकिन देश को सफलतापूर्वक चलाने में और भी कई लोगों का हाथ और महत्त्वपूर्ण साथ होता है। मसलन, हमारे देश के किसान, हमारी सेना के जवान आदि । देश चलना बहुत बड़ी बात है, लेकिन रोजगार देने से संबंधित बात को हम आसान शब्दों में समझने की कोशिश करें तो कुछ इस तरह से देखा जा सकता है। यह हम सब भलीभांति जानते हैं कि जैसे-जैसे भौतिक जीवन शैली आगे बढ़ रही है, वैसे-वैसे हमारा संबंध मशीनों से और अधिक जुड़ता जा रहा है। आने वाले समय में रोबोटिक दुनिया का ही चलन आने वाला है। इसकी शुरुआत बहुत पहले ही हो चुकी थी, लेकिन टीवी के लोग इतना आदि नहीं थे, जितना आज के समय में हो चले हैं। आज की पीढ़ी शारीरिक श्रम नहीं करना चाहती। सभी बस यही चाहते है कि उनके मुंह से बात निकले और वह झट से पूरी हो जाए।' चाहे वह कमरे की बत्तियां जलाना - बुझाना हो या संगीत बदलना या फिर समय क्या हुआ है, यह जानना ही क्यों न हो । हर चीज बस किसी 'अलेक्सा' से कहो और जान लो..! भले ही परिणामवश अपने शरीर में जंग क्यों न लग जाए। इस बात से आजकल किसी को कोई फर्क ही नहीं पड़ता ।

हालांकि इसमें भी सारा खेल धन का है। जो जितना धनाढ्य है, उतना अधिक मशीनों से घिरा हुआ और बीमार भी है। विशेष रूप से मानसिक तौर पर क्योंकि मशीनों के इस मायाजाल ने मनुष्य को इतना अकेला कर दिया है कि उसके सामाजिक और आपसी रिश्ते समाप्त हो गए हैं और हर किसी को इस तरह का अकेलापन खाए जा रहा है। बस उसी कमी को फिर पूरा कर रही हैं कृत्रिम बुद्धिमता जैसी मशीनें । मजे की बात यह है कि चाहे कुछ भी हो जाए, हैं तो ये मशीनें ही ! इन्हें कोई भी काम करने के लिए एक निश्चित 'कमांड' की आवश्यकता होती है और अगर वह न मिला तो यह बोला गया काम ही नहीं कर पाती । जबकि यही काम अगर बोलकर किसी व्यक्ति से करवाना हो तो वह गलत बोलने पर भी समझ जाता है कि आप आखिर कहना क्या चाहते हैं, लेकिन यह मशीन नहीं समझ पाती। इतनी सी यह बात आज की युवा पीढ़ी नहीं समझ पाती। फिर जब परेशानियां आती हैं तो लोग ज्योतिषियों के यहां चक्कर काटते फिरते हैं।

यों देखा जाए तो हम भला किसी को कुछ देने वाले कौन होते हैं । देता तो वह ईश्वर ही है हम तो केवल माध्यम ही होते हैं । फिर भी अगर हम किसी को रोजगार दे पाए तो यह वर्तमान हालात और समय को देखते हुए इससे बड़ा पुण्य शायद ही कुछ और होगा।

अफसोस कि हम अपनी सुख-सुविधा के लिए लोगों से उनका वह काम भी छीन रहे हैं। ऐसा सिर्फ उच्च मध्यम वर्गीय परिवार के लोग ही कर रहे हैं। बड़े-बड़े नेता, अभिनेता या पूंजीपति नहीं कर रहे। हम ही लोग हैं जो अपने घर काम करने आने वाली सहयोगी को हटाकर बर्तन साफ करने के लिए 'डिशवाशर, झाड़ू-पोंछे के लिए 'वैक्यूम क्लीनर', कपड़े धोने के लिए 'वाशिंग मशीन' और अब

> ऐसा सिर्फ उच्च मध्यम वर्गीय परिवार के लोग ही कर रहे हैं। बड़े-बड़े नेता, अभिनेता या पूंजीपति नहीं कर रहे। हम ही लोग हैं जो अपने घर काम करने आने वाली सहयोगी को हटाकर बर्तन साफ करने के लिए 'डिशवाशर, झाड़ू-पोंछे के लिए 'वैक्यूम क्लीनर', कपड़े धोने के लिए 'वाशिंग मशीन' और अब खाना बनाने के लिए भी न जाने कितनी मशीनों का उपयोग कर रहे हैं ।

खाना बनाने के लिए भी न जाने कितनी मशीनों का उपयोग कर रहे हैं ।

समय के साथ चलना बुरी बात नहीं है। समय के साथ न चलें, तो समय हमें पीछे छोड़कर खुद आगे निकल जाएगा और हम वहीं खड़े बस सब का मुंह ताकते रह जाएंगे । ऐसे में सोचा जा सकता है कि परिवार कैसे चलेगा, इनके बच्चों का भविष्य क्या होगा । इनसे मिलने वाली इंसानियत का क्या होगा। आज जब हमारे घर में अधिक मेहमान आ जाते हैं, तब थोड़े-से अधिक पैसों के लालच में ही सही, लोग हमारे कंधे से कंधा मिलाकर साथ खड़े होकर हमारा काम आसान करते हुए बहुत हद तक कहीं न कहीं हमारी लाज बचा रहे होते हैं । ऐसे ' में इन्हें हटाकर मशीनों पर निर्भर होना उचित नहीं लगता । इस तरह पहले ही तेजी से बढ़ रही बेरोजगारी और गरीबी को बढ़ाने में हम लोग ही सबसे बड़ा कारण बन रहे हैं। दूसरी बात, लोग भी इस बात को समझना नहीं चाहते कि जहां वे काम कर रहे हैं, वहां अब तक ऐसा कोई बदलाव नहीं आया है तो उसमें इनकी ही भलाई है। यह अभी भी उन्हीं पुरानी बातों और मामलों को लेकर आपस में ही लड़ने-मरने को तैयार हैं कि मैं ऐसा नहीं करूंगी... मैं वैसा नहीं करूंगी आदि। उन्हें लगता है एक घर छूट भी गया तो कोई बात नहीं कहीं और काम मिल जाएगा। वे नहीं जानते कि अब बहुत जल्द जब एक दूसरे की देखा-देखी में सब भेड़चाल चलेंगे। तब सबसे अधिक नुकसान इन्हीं लोगों का होगा और केवल इसी क्षेत्र में नहीं, बल्कि हर क्षेत्र में। अब तो लिखने- पढ़ने के लिए भी लोगों के पास कृत्रिम मेधा का सहारा है। दिमागी रूप से किया जाने वाला काम भी अब कुछ ही सालों में जाता रहेगा। फिर कहां जाएंगे वे कर्मचारी जो अब तक अपने दिमाग की कमाई खा रहे थे। सबसे अधिक खतरा चिकित्सा के क्षेत्र पर लगता है। हालांकि वहां भी अब धीरे- धीरे मशीनों पर निर्भरता की शुरुआत हो चली है । इस मशीनी ने बेरोजगारी बढ़ाने में एक बड़ा योगदान दिया है

परीक्षा के दौरान एक छात्र की मन की स्थिति

विजय गर्ग

परीक्षा बहुत शब्द छात्रों के सबसे अधिक स्टोइक के माध्यम से चिंता का एक लहर भेज सकता है। यह एक सार्वभौमिक अनुभव है: एक कक्षा का शांत हम, एक दिल की धड़कन की तरह गुदगुदी घड़ी गूंज, और उम्मीद का वजन नीचे दबाने का वजन। लेकिन वास्तव में सतह के नीचे क्या चल रहा है? इन निर्णायक क्षणों के दौरान एक छात्र की मन की स्थिति क्या है? उम्मीदों का तूफान कई छात्रों के लिए, परीक्षाएं केवल ज्ञान के परीक्षण नहीं हैं-उन्हें उन क्षणों को परिभाषित करने के रूप में देखा जाता है जो उनके भविष्य के पाठ्यक्रम को चार्ट कर सकते हैं। पारिवारिक अपेक्षाएं, सामाजिक दबाव, और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाएं एक साथ घूमती हैं, जिससे तनाव का एक आदर्श तूफान पैदा होता है। यह अनगिनत रास्तों के साथ एक चौराहे पर खड़ा है, हर एक अनिश्चितता में क्लोकेड। निराशाजनक प्रियजनों या अपने स्वयं के मानकों को पूरा नहीं करने का डर भारी पड़ सकता है। आत्मविश्वास और संदेह के बीच लड़ाई छात्र के दिमाग के अंदर, एक मूक लड़ाई आत्म-आश्वासन और आत्म-संदेह के बीच बढ़ती है। एक पल, विश्वास का एक उछाल है- ₹मुझे यह मिला है। मैंने कड़ी मेहनत की।" अगला, संदेह में रेंगता है- "क्या होगा अगर मैं खाली हूं? क्या होगा अगर प्रश्न मेरी अपेक्षा से अलग हैं?" यह आंतरिक टग-ऑफ-वॉर मानसिक रूप से थकाऊ हो सकता है, ऊर्जा को निकाला जा सकता है जो अन्यथा ध्यान और स्पष्टता में प्रसारित किया जा सकता है। व्यक्ति का अलगाव साथियों से घिरे होने के बावजूद, परीक्षा का अनुभव गहराई से व्यक्तिगत है। प्रत्येक छात्र अपने स्वयं के डर और आशाओं से जूझता है, अक्सर अपने संघर्ष में अलग-थलग महसूस करता है। यह एक एकल नाविक होने के नाविक है, जो तड़का हुआ समुद्र को नेविगेट कर रहा है, जो क्षितिज पर अन्य जहाजों के बारे में जानता है, लेकिन अंततः अकेले स्टीयरिंग करता है। अलगाव की यह भावना तनाव को बढ़ा सकती है, जिससे चुनौतियां दुर्गम लगती हैं।

नकल तंत्र और लचीलापन फिर भी, उथल-पुथल के बीच, छात्र उल्लेखनीय लचीलापन प्रदर्शित करते हैं। वे नकल की रणनीतियों का विकास करते हैं: स्थिर नसों के लिए गहरी साँसें, नोटबुक में सक्रिबल्ड सकारात्मक पुष्टि, या भाग्यशाली आकर्षण को जेब में टक किया गया। मैरी क्यूरी की कहानी पर विचार करें, जो अपार व्यक्तिगत और सामाजिक चुनौतियों का सामना करने के बावजूद, अटूट दृढ़ संकल्प के साथ अपनी पढ़ाई में बनी रही। उसने एक बार कहा था, "जीवन हम में से किसी के लिए भी आसान नहीं है। लेकिन उस का क्या? हमें अपने आप में दृढ़ता और सभी आत्मविश्वास से ऊपर होना चाहिए।" उसके शब्द अपने स्वयं के बाधाओं को दूर करने के लिए प्रयास करने वाले छात्रों के साथ गूंजते हैं। संतुलन की खोज मामले का क्रूक्स संतुलन है। आत्म-देखभाल के साथ महत्वाकांक्षा, वास्तविकता के साथ अपेक्षाएं और आराम के साथ तैयारी। छात्र अकादमिक उपलब्धि के साथ मानसिक स्वास्थ्य के महत्व को तेजी से पहचान रहे हैं। शैक्षणिक संस्थान भी अपने पाठ्यक्रम में कल्याण कार्यक्रमों और तनाव प्रबंधन कार्यशालाओं को एकीकृत करते हुए पकड़ने लगे हैं। ग्रेड से परे देख रहे हैं शायद यह पुनर्विचार करने का समय है कि हम परीक्षाओं को पूरी तरह से कैसे देखते हैं। यदि हम विशुद्ध रूप से ग्रेड से समग्र विकास और सीखने के लिए ध्यान केंद्रित कर सकते हैं, तो हम कुछ अपार दबाव वाले छात्रों को महसूस कर सकते हैं। आखिरकार, एक परीक्षा समय में सिर्फ एक स्नैपशॉट है, न कि किसी की क्षमताओं या क्षमता का पूर्ण चित्र। यहां तक कि अल्बर्ट आइंस्टीन को पारंपरिक स्कूली शिक्षा में चुनौतियों का सामना करना पड़ा, एक बार एक प्रवेश द्वार परीक्षा में विफल रहा। फिर भी, विज्ञान में उनका योगदान इस विचार के लिए एक वसीयतनामा है कि मानकीकृत परीक्षण हमें परिभाषित नहीं करते हैं। अंतिम विचार परीक्षाओं के दौरान एक छात्र की मन की स्थिति भावनाओं-फ़ीयर, होप, चिंता और दृढ़ संकल्प की एक जटिल टेपेस्ट्री है जो एक साथ बुनी गई है। इन्हें पहचानना और संबोधित करनाभावनाएं महत्वपूर्ण है, न केवल अकादमिक सफलता के लिए, बल्कि लचीला, आत्म-जागरूक व्यक्तियों की एक पीढ़ी को बढ़ावा देने के लिए। आगे बढ़ते हुए इन उच्च दबाव के समय के दौरान हम छात्रों को कैसे समर्थन कर सकते हैं, इस बारे में बातचीत जारी रखना महत्वपूर्ण है। क्या मेंटरशिप कार्यक्रम अनुभव और अपेक्षा के बीच अंतर को पाटने में मदद कर सकते हैं? व्यक्तिगत सहायता प्रदान करने में प्रौद्योगिकी क्या भूमिका निभा सकती है? जैसा कि हम इन सवालों का पता लगाते हैं, हम उन नवाचारों के लिए दरवाजे खोलते हैं जो शैक्षिक परिदृश्य को बदल सकते हैं। इसके अलावा, यह समझना कि सीखना एक आजीवन यात्रा है, जो परीक्षा ले जाने वाले वजन को कम कर सकती है। छात्रों को असफलताओं को असफलताओं के रूप में देखने के लिए प्रोत्साहित करना, लेकिन विकास के अवसर के रूप में सभी अंतर बना सकते हैं। शायद स्कूल ऐतिहासिक आंकड़ों की कहानियों को शामिल कर सकते हैं, जिन्होंने अकादमिक संघर्षों का सामना किया, फिर भी महानता प्राप्त करने के लिए आगे बढ़े, छात्रों को याद दिलाया कि परीक्षा उनकी कहानी में सिर्फ एक अध्याय है। आखिरकार, शिक्षा केवल गंतव्य के बारे में नहीं है-यह यात्रा और अनगिनत अनुभवों के बारे में है जो हम बनते हैं। हमारे दृष्टिकोण को स्थानांतरित करने और हमारे छात्रों को समग्र रूप से समर्थन करने से, हम उन्हें आत्मविश्वास के साथ परीक्षा भूलभुलैया को नेविगेट करने में मदद कर सकते हैं और दूसरी तरफ मजबूत उभर सकते हैं। यह एक बच्चे के समग्र विकास को प्राप्त करने का एकमात्र तरीका है जो एनईपी 2020 का अंतिम लक्ष्य है।

एयर इंडिया यात्रियों के लिए गुड न्यूज! 60 नए ट्रैवल रूट खुले, कई यूरोपीय शहरों का सफर होगा आसान

परिवहन विशेष न्यूज

एयर इंडिया ने घोषणा की कि उसने ऑस्ट्रियन एयरलाइंस के साथ एक नया कोड शेयरिंग समझौता किया है। साथ ही लुफ्थांसा और स्विस एयरलाइंस के साथ मौजूदा समझौतों का विस्तार किया गया है। इस समझौते का फायदा यात्रियों को यह होगा कि वे एयर इंडिया की फ्लाइट बुक कराकर भी इन विदेशी एयरलाइंस के रूट्स का लाभ उठा सकेंगे। इससे यूरोप और अन्य इंटरनेशनल डेस्टिनेशन तक सफर आसान हो जाएगा।

नई दिल्ली। एयर इंडिया ने विदेश में घूमने-फिरने के शौकीनों के लिए बड़ी घोषणा की है। अब एयर इंडिया के यात्रियों को 12 भारतीय शहरों और 26 यूरोपीय शहरों के बीच यात्रा करने की नई सुविधा मिलेगी। इसके लिए एयर इंडिया ने जर्मन एयरलाइन लुफ्थांसा, ऑस्ट्रियन एयरलाइंस और स्विस इंटरनेशनल एयरलाइंस के साथ कोड शेयरिंग समझौते को विस्तार दिया है। इससे यात्रियों को अधिक कनेक्टिविटी और आसान ट्रांसफर की सुविधा मिलेगी।

एयर इंडिया की नई अंतरराष्ट्रीय साझेदारी

एयर इंडिया ने घोषणा की कि उसने ऑस्ट्रियन एयरलाइंस के साथ एक नया कोड शेयरिंग समझौता किया है। साथ ही, लुफ्थांसा और स्विस एयरलाइंस के साथ मौजूदा समझौतों का विस्तार किया गया है। इस समझौते का फायदा यात्रियों को यह होगा कि वे एयर इंडिया की फ्लाइट बुक कराकर भी इन विदेशी एयरलाइंस के रूट्स का लाभ उठा सकेंगे। इससे यूरोप और अन्य इंटरनेशनल डेस्टिनेशन तक सफर और भी आसान हो जाएगा।

इस नए करार के बाद, एयर इंडिया, लुफ्थांसा और स्विस एयरलाइंस के बीच कोड शेयरिंग रूट्स की संख्या 55 से बढ़कर लगभग 100 हो गई है।

कौन-कौन से नए रूट्स होंगे कवर?

नए कोड शेयरिंग समझौते के तहत यात्रियों को भारत के 12 प्रमुख शहरों और यूरोप के 26 शहरों के लिए यात्रा करने की सुविधा मिलेगी।

भारतीय शहर: दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु, हैदराबाद, चेन्नई, कोलकाता, अहमदाबाद, पुणे, कोच्चि, त्रिवेंद्रम, लखनऊ, जयपुर।

यूरोपीय शहर: वियना, ज्यूरिख, फ्रैंकफर्ट, म्यूनिख, बर्लिन, डसेलडॉर्फ, स्टटगार्ट, जिनेवा, ब्रुसेल्स, प्राग, वाशिंगटन डीसी, टोरंटो आदि।

एयर इंडिया की इंटरनेशनल फ्लाइट्स होंगी डबल

एयर इंडिया ने अगले तीन वर्षों में अपनी अंतरराष्ट्रीय उड़ानों को दोगुना करने की योजना बनाई है। अभी एयर इंडिया सालाना 313 इंटरनेशनल फ्लाइट ऑपरेट करती है। इसे जल्द ही दोगुना किया जाएगा, ताकि लंबी दूरी के अंतरराष्ट्रीय मार्केट में एयर इंडिया की मौजूदगी मजबूत हो सके।

एयर इंडिया के सीसीओ (Chief Commercial Officer) निपुण अग्रवाल ने कहा, 'इस साझेदारी से हमारे ग्राहकों को लुफ्थांसा ग्रुप की फ्लाइट्स पर यूरोप में पहले से ज्यादा डेस्टिनेशंस पर ट्रैवल करने की सुविधा मिलेगी।'

अंतरराष्ट्रीय बाजार में दबदबा बढ़ाने की कोशिश

भारत से विदेश यात्रा करने वाले यात्रियों की संख्या लगातार बढ़ रही है। इसी को देखते हुए भारतीय विमानन कंपनियां भी अपने अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क का विस्तार कर रही हैं।

भारतीय एयरलाइंस का अंतरराष्ट्रीय हवाई यात्रा में हिस्सा अब 46 फीसदी हो गया है।

जनवरी-सितंबर 2024 में भारतीय एयरलाइंस ने 2.4 करोड़ यात्रियों को सफर कराया।

एयर इंडिया (टाटा ग्रुप) का एविएशन मार्केट में हिस्सेदारी 28 फीसदी है।

75 से ज्यादा विदेशी एयरलाइंस भी भारत से यात्रियों को ट्रांसपोर्ट कर रही हैं।

यात्रियों को कैसे होगा फायदा?

अधिक कनेक्टिविटी: नए कोड शेयरिंग समझौते के तहत, यात्रियों को ज्यादा विकल्प मिलेंगे।

बेहतर ट्रांजिट सुविधा: इंटरनेशनल ट्रांसफर अब अधिक आसान और सुविधाजनक होगा।

समय की बचत: ज्यादा डायरेक्ट और कनेक्टिंग फ्लाइट ऑप्शंस मिलेंगे।

सस्ती टिकट दरें: कोड शेयरिंग के चलते टिकट्स की कीमतों में प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी, जिससे यात्रियों को फायदा मिलेगा।

निवेश के लिए युवाओं की पहली पसंद बन रहा शेयर बाजार, क्या है इसकी वजह?

नई दिल्ली। भारत में 35 साल से कम उम्र के 45 फीसदी युवा निवेश के लिए शेयर बाजार (Stock Market Investment) को प्राथमिकता दे रहे हैं। रिसर्च फर्म 1Lattice और StockGro की लेटेस्ट रिपोर्ट के मुताबिक, युवाओं का इक्विटी निवेश (Equity Investment) की ओर रुझान बढ़ने का मुख्य कारण वित्तीय जागरूकता (Financial Awareness), टेक्नोलॉजी की मदद से बेहतर निवेश विकल्प और लॉन्ग-टर्म वेल्थ क्रिएशन (Long-term Wealth Creation) का लक्ष्य है।

इक्विटी इन्वेस्टमेंट पर क्यों फोकस कर रहे हैं युवा?

रिपोर्ट के अनुसार, 81% उत्तरदाताओं ने शेयर बाजार में निवेश कर रखा है, जो दर्शाता है कि युवा पारंपरिक बचत योजनाओं से हटकर सीधे इक्विटी मार्केट (Direct Equity Market) में निवेश कर रहे हैं। हालांकि, 42% गैर-निवेशकों को लगता है कि उनके पास निवेश शुरू करने के लिए जरूरी जानकारी की कमी है, जबकि 44% निवेशक स्टेप-बाय-स्टेप गाइडेंस चाहते हैं।

डिजिटल प्लेटफॉर्म और AI से निवेश सीखना आसान

डिजिटल निवेश प्लेटफॉर्म की बढ़ती लोकप्रियता के चलते 68% निवेशक डिजिटल माध्यमों का उपयोग कर ट्रेडिंग और निवेश सीखना पसंद कर रहे हैं। इसके अलावा, 38% लोग ऑनलाइन वीडियो कोर्स के जरिए निवेश की जानकारी लेना पसंद करते हैं।

AI-बेस्ड इन्वेस्टमेंट रिकमेंडेशन (AI-based Investment Recommendations), रियल-टाइम डेटा (Real-time Data) और वर्चुअल ट्रेडिंग एक्सपीरियंस (Virtual Trading Experience) जैसी सुविधाओं ने निवेश को अधिक आसान बना दिया है। करीब 50% नए निवेशक रियल मनी लगाने से पहले वर्चुअल मनी से अभ्यास करते हैं।

बाजार में अस्थिरता को लेकर निवेशकों की चिंता

हालांकि, 51% निवेशक संभावित बाजार गिरावट (Market Volatility) को लेकर चिंतित हैं। पिछले कुछ महीनों में सेंसेक्स और निफ्टी करीब 15 फीसदी तक गिर चुके हैं। इससे निवेशकों की चिंता बढ़ रही है। हालांकि, उन्हें उम्मीद भी है कि मार्केट में जल्द रिकवरी होगी।

रिपोर्ट बताती है कि डिजिटल निवेश प्लेटफॉर्म (Digital Investment Platforms) छोटे शहरों तक अपनी पहुंच बना रहे हैं, जिससे अधिक लोग वित्तीय साक्षरता हासिल कर रहे हैं।

बिना गारंटी के 3 लाख का लोन, सिर्फ 5% देना होगा ब्याज; जानें लाभ उठाने का पूरा प्रोसेस

tपरिवहन विशेष न्यूज

पीएम विश्वकर्मा योजना छोटे शिल्पकारों और कारीगरों को आर्थिक सहायता और प्रशिक्षण उपलब्ध कराती है। इसके तहत 5% ब्याज दर पर 3 लाख रुपये तक का बिना गारंटी लोन मिलता है। योजना में मुफ्त स्किल ट्रेनिंग 500 रुपये प्रतिदिन स्टाइपेंड 15000 रुपये टूल किट सहायता और डिजिटल ट्रांजैक्शन पर इनाम शामिल है। पात्रता के लिए पारंपरिक व्यवसाय से जुड़ा होना जरूरी है।

नई दिल्ली। देश के कई छोटे कारोबारी और शिल्पकार अपने कामकाज को बढ़ाना चाहते हैं। लेकिन, उनके सामने पूंजी की समस्या आ जाती है। उनकी मदद के लिए केंद्र सरकार की एक खास स्कीम है, प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना (PM Vishwakarma Yojana)। इसमें सिर्फ 5 फीसदी की ब्याज दर पर 3 लाख रुपये तक का लोन मिल जाता है। इसके लिए आपको कुछ गिरवी रखने की जरूरत भी नहीं होती है।

क्या है पीएम विश्वकर्मा योजना

पीएम विश्वकर्मा योजना केंद्र सरकार की एक महत्वाकांक्षी योजना है। इसका मकसद छोटे शिल्पकारों और कारीगरों को आर्थिक सहायता और प्रशिक्षण देना है। इसकी शुरुआत 1 फरवरी 2023 को हुई थी। इस योजना के तहत मुफ्त में स्किल ट्रेनिंग और रोजगार के लिए सस्ती ब्याज पर लोन दिया जाता है। इसमें प्रशिक्षण के दौरान रोजाना 500 रुपये दिए जाते हैं। साथ ही, टूल किट खरीदने के लिए 15,000 रुपये की रकम बैंक ट्रांसफर के जरिए दी जाती है। यह योजना सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय (MSME) चला रहा है।

3 लाख रुपये तक का आसान लोन

पीएम विश्वकर्मा योजना में लाभार्थियों को कुल तीन लाख रुपये का कर्ज मिलता है। यह रकम दो चरण में दी जाती है। पहले चरण में 1 लाख रुपये तक का लोन मिलता है, जिसकी अवधि 18 महीने होगी। दूसरे चरण में 2 लाख रुपये तक का लोन, जिसकी अवधि 30 महीने होगी। इस लोन पर सिर्फ 5% की रियायती ब्याज दर लागू होगी।

किन व्यवसायों से जुड़े लोग पात्र हैं?

प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना के तहत 18 पारंपरिक व्यवसायों से जुड़े लोग आवेदन कर सकते हैं, जैसेः

- बढ़ई, नाव बनाने वाले
- लोहार, ताला बनाने वाले
- खिलौना बनाने वाले, कुम्हार
- जूता बनाने वाले, टोकरी/चटाई/झाड़ू बनाने वाले
- सुनार, मूर्तिकार
- राजमिस्त्री, मछली पकड़ने वाले
- धोबी, दर्जी, नाई

योजना के लिए पात्रता (Eligibility)

- आवेदक सूचीबद्ध 18 पारंपरिक व्यवसायों में से किसी एक से जुड़ा होना चाहिए।
- आवेदक 18 वर्ष या उससे अधिक का होना चाहिए।
- वह पहले से PMEGP, PM Swanidhi, Mudra Loan जैसी अन्य योजनाओं का लाभार्थी नहीं होना चाहिए।
- सरकारी कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्य इस योजना के लिए पात्र नहीं होंगे।

PM Vishwakarma Yojana के लिए आवेदन कैसे करें?

- इस योजना का लाभ लेने के लिए pmvishwakarma.gov.in पर ऑनलाइन आवेदन करें।
- आधार कार्ड वेरिफिकेशन और ई-केवाईसी (e-KYC) पूरा करें।
- संबंधित सीएससी (CSC) सेंटर से सत्यापन कराएं।

'टिप्पणी की जरूरत नहीं', स्मॉल और मिडकैप शेयरों में गिरावट पर बोलीं सेबी चीफ

स्मॉल व मिडकैप के शेयर मंदी के दौर में हैं। कई शेयर करीब 50 फीसदी तक गिर चुके हैं। कुछ शेयरों में लगातार लोअर सर्किट भी लग रहा है। इससे निवेशकों को काफी नुकसान उठाना पड़ रहा है। हालांकि एक्सपर्ट का कहना है कि स्मॉलकैप और मिडकैप शेयरों का वैल्यूएशन काफी अधिक है जिसके चलते उनमें करेक्शन हो रहा है।

नई दिल्ली। भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) की चेयरपर्सन माधबी पुरी बुच का कहना है कि कैपिटल मार्केट रेगुलेटर को स्मॉल और मिडकैप के शेयरों में हालिया गिरावट पर टिप्पणी करने की कोई जरूरत नहीं है। बुच ने पिछले साल मार्च में स्मॉल और मिड कैप शेयरों पर अपने बयान का हवाला दिया। उस वक्त सेबी प्रमुख ने कहा था कि स्मॉल और मिड कैप शेयरों का मूल्यांकन काफी अधिक है और यह चिंता की बात है।

बुच ने सोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया (AMFI) के एक कार्यक्रम में कहा, 'सेबी ने जब स्मॉल और मिड कैप शेयरों पर टिप्पणी की जरूरत महसूस की थी, तब उसने अपनी चिंता जाहिर की थी।' उन्होंने कहा, 'मिडकैप और स्मॉलकैप के बारे में मेरा मानना है कि एक समय ऐसा आया जब नियामक को इस बारे में टिप्पणी करने की जरूरत महसूस हुई और टिप्पणी की गई। आज, नियामक को अतिरिक्त टिप्पणी करने की कोई जरूरत महसूस नहीं हो रही है।'

स्मॉल व मिडकैप के शेयर मंदी के दौर में हैं। कई शेयर करीब 50 फीसदी तक गिर चुके हैं। कुछ शेयरों में लगातार लोअर सर्किट भी लग रहा है। इससे निवेशकों को काफी नुकसान उठाना पड़ रहा है। हालांकि, एक्सपर्ट का कहना है कि स्मॉलकैप और मिडकैप शेयरों का वैल्यूएशन काफी अधिक है, जिसके चलते उनमें करेक्शन हो रहा है।

AMFI और SEBI का नए निवेशकों पर फोकस

भारतीय म्यूचुअल फंड उद्योग को और अधिक समावेशी और मजबूत बनाने के लिए एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया (AMFI) ने तीन नई पहल की शुरुआत की है- ₹छोटी SIP₹, ₹तरुण योजना₹ और ₹MITRA (Mutual Fund Investment Tracing and Retrieval Assistant)₹।

SEBI की चेयरपर्सन माधबी पुरी बुच का कहना है कि वित्तीय समावेशन और निवेशकों की सुरक्षा से ही पूंजी बाजार मजबूत बनेगा। वहीं, AMFI के चेयरमैन नवनीत मुनोट ने इन पहलों को भारत की आर्थिक वृद्धि में भागीदारी बढ़ाने का महत्वपूर्ण माध्यम बताया। सेबी चीफ बुच ने यह भी कहा कि नियामक द्वारा फंड हाउस के लिए हाल ही में शुरू की गई 250 रुपये की सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (SIP) को अनिवार्य बनाने का कोई इरादा नहीं है।

महंगी होने लगी चीनी, गन्ना उत्पादन घटने का दिख रहा असर

परिवहन विशेष न्यूज

गन्ने के अभाव में कुल चीनी उत्पादन में लगभग 12 से 14 प्रतिशत की कमी का अनुमान किया जा रहा है। पिछले वर्ष 319 लाख टन चीनी का उत्पादन हुआ था। इस वर्ष अभी 270 लाख टन चीनी उत्पादन की उम्मीद है। इस आंकड़ें के और भी नीचे जाने की बात कही जा रही है। चीनी उत्पादन में जब इतनी बड़ी गिरावट आएगी तो मूल्य पर असर पड़ना तय है।

नई दिल्ली। गन्ने का कम उत्पादन, रिकवरी दर में गिरावट, निर्यात की अनुमति और एथनाल में अत्यधिक इस्तेमाल के चलते चीनी की कीमतें चढ़ने लगी हैं। आकलन है कि उपभोक्ताओं की जेब पर भी बोझ पड़ना तय है। घरेलू मार्केट में अभी से ऐसा दिखने भी लगा है। पिछले एक महीने के दौरान चीनी की कीमतों में लगभग दो प्रतिशत की तेजी आई है। आगे भी राहत की उम्मीद नहीं है।

गन्ने के अभाव में मध्य फरवरी में 77 चीनी मिलें बंद हो चुकी हैं। चीनी उत्पादन में अब तक लगभग 50 लाख टन से अधिक की कमी होने का अनुमान है। ऑल इंडिया शुगर ट्रेड एसोसिएशन को इससे भी ज्यादा कमी होने की आशंका है।

चीनी मिलों के धड़ाधड़ गिर रहे शटर

नेशनल फेडरेशन ऑफ को-ऑपरेटिव शुगर फैक्ट्रीज लिमिटेड (एनएफसीएसएफ) की रिपोर्ट में दिसंबर में ही आशंका जताई गई थी कि चीनी मिलों को गन्ने के संकट का सामना करना पड़ सकता है। प्रमुख गन्ना उत्पादक राज्यों में महाराष्ट्र की 30 और कर्नाटक की 34 चीनी मिलें 15 फरवरी के पहले ही बंद हो गई हैं।

तमिलनाडु में भी चार चीनी मिलों को बंद कर दिया गया है। इसी तरह उत्तर प्रदेश, तेलंगाना, उत्तराखंड एवं गुजरात में भी चीनी मिलों के शटर धड़ाधड़ गिरने लगे हैं, जबकि सामान्य तौर पर चीनी मिलें मार्च-अप्रैल तक चलती हैं।

गन्ने के अभाव में कुल चीनी उत्पादन में लगभग 12 से 14 प्रतिशत की कमी का अनुमान किया जा रहा है। पिछले वर्ष 319 लाख टन चीनी का उत्पादन हुआ था, किंतु इस वर्ष अभी तक 270 लाख टन चीनी उत्पादन की उम्मीद है। इस आंकड़ें के और भी नीचे जाने की बात कही जा रही है। चीनी उत्पादन में जब इतनी बड़ी गिरावट आएगी तो मूल्य पर असर पड़ना तय है।

खराब फसल का चीनी रिकवरी दर पर असर

चीनी उत्पादन में कमी का एक और बड़ा कारण रिकवरी दर में गिरावट को माना जा रहा है। गन्ने की खराब फसल का असर चीनी रिकवरी दर पर पड़ा है। पिछले वर्ष फरवरी तक 9.87 प्रतिशत औसत रिकवरी दर थी, जो इस बार सिर्फ 9.09 प्रतिशत रह गई है।

बेमौसम बारिश के चलते सबसे अधिक असर कर्नाटक और महाराष्ट्र पर पड़ा है। कर्नाटक में रिकवरी दर 9.75 प्रतिशत से गिरकर 8.50 प्रतिशत पर आ गई है। इसी तरह उत्तर प्रदेश में पिछले वर्ष 10.20 प्रतिशत रिकवरी दर थी जो इस बार 9.30 प्रतिशत पर आ गई है।

ट्रंप के टैरिफ वॉर से बेहाल होंगे एशियाई देश; भारत, कोरिया और थाइलैंड पर ज्यादा होगा असर

एसएंडपी ग्लोबल की रिपोर्ट के अनुसार अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप (Donald Trump) के टैरिफ वॉर (Tariff War) से एशिया-प्रशांत देशों को भारी नुकसान हो सकता है। भारत (India) दक्षिण कोरिया (South Korea) और थाईलैंड (Thailand) पर इसका अधिक असर पड़ेगा। अमेरिका पहले ही चीन (China) से आयातित वस्तुओं पर 10% अतिरिक्त शुल्क (10% Additional Tariff) और इस्पात-एल्युमिनियम पर 25% शुल्क (25% Tariff on Steel Aluminium) लगा चुका है।

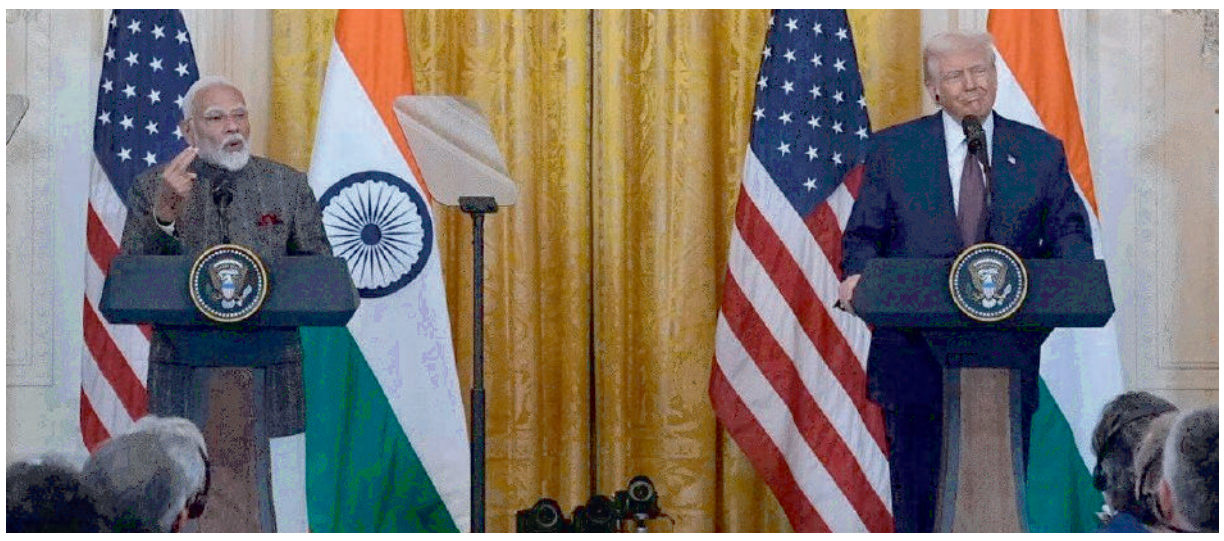

नई दिल्ली। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के कार्यकाल में कई एशिया-प्रशांत अर्थव्यवस्थाओं को भारी टैरिफ का सामना करना पड़ सकता है। अगर ऐसा होता है तो इसका सबसे अधिक असर भारत, दक्षिण कोरिया और थाईलैंड पर होगा।

रेटिंग एजेंसी एसएंडपी ग्लोबल ने सोमवार को अपनी रिपोर्ट 'अमेरिकी व्यापार शुल्क से एशिया-प्रशांत अर्थव्यवस्थाओं पर असर पड़ने की संभावना' में कहा कि वियतनाम, ताइवान, थाईलैंड और दक्षिण कोरिया जैसी अर्थव्यवस्थाओं का अमेरिका के प्रति आर्थिक जोखिम अपेक्षाकृत अधिक है। इसका अर्थ है कि अगर शुल्क लगाया गया तो इनपर इसका सबसे बड़ा आर्थिक प्रभाव होगा।

भारत और जापान पर कम होगा असर?

एसएंडपी ने कहा, 'भारत और जापान की अर्थव्यवस्थाएं घरेलू रूप से चालित हैं, जिससे इन शुल्क का असर उन पर कुछ कम होगा।' अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा है कि वह भारत सहित अपने व्यापारिक साझेदारों पर जवाबी शुल्क लगाएंगे। नया अमेरिकी प्रशासन पहले ही चीन से आयात पर अतिरिक्त 10 प्रतिशत शुल्क और इस्पात तथा एल्युमिनियम पर 25 प्रतिशत शुल्क लागू कर चुका है।

एसएंडपी ने कहा, 'अनिश्चितता बहुत अधिक है, क्योंकि अमेरिकी प्रशासन ने साझेदार अर्थव्यवस्थाओं पर व्यापार शुल्क लगाने में काफी बेबाकी दिखाई है। द्विपक्षीय वार्ता भी परिणामों को प्रभावित कर सकती है। हालांकि, एशिया-प्रशांत क्षेत्र की कई अर्थव्यवस्थाएं इसके दायरे में हैं और आर्थिक गतिविधियों के लिए जोखिम मंडरा रहा है।'

अमेरिकी उत्पादों पर अधिक शुल्क

रेटिंग एजेंसी ने कहा कि एशिया-प्रशांत क्षेत्र के कुछ देश अमेरिकी उत्पादों पर अमेरिका द्वारा उनके उत्पादों पर लगाए गए शुल्कों की तुलना में काफी अधिक शुल्क लगाते हैं। उन अर्थव्यवस्थाओं पर 'जवाबी शुल्क कार्रवाई' के लिए संभावित जांच की जाएगी।

इसने कहा, 'इस पर नजर रखना मुश्किल है, क्योंकि यह स्पष्ट नहीं है कि अमेरिकी प्रशासन शुल्क की तुलना किस स्तर पर करेगा। परिणाम बहुत भिन्न हो सकते हैं, जो लागू किए गए विवरण के स्तर पर निर्भर करेगा।' अपनी रिपोर्ट में एसएंडपी ने एशिया-प्रशांत अर्थव्यवस्थाओं में अमेरिकी उत्पादों पर भारित औसत शुल्क दरों; उन्हीं अर्थव्यवस्थाओं से आयात पर अमेरिकी शुल्क तथा दोनों के बीच अंतर पर गौर किया।

टैरिफ पर भारत का रुख क्या है?

उच्चपदस्थ सूत्रों का कहना है कि भारत के हक में अच्छी बात यह है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने पिछले एक माह में सिर्फ भारत के साथ द्विपक्षीय व्यापार समझौते (बीटीए) की बात की है। यह भारत के प्रति अमेरिका का सकारात्मक रुख है। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ ट्रंप ने दोनों देशों के बीच व्यापार को 500 अरब डॉलर तक ले जाने की घोषणा की। अभी यह व्यापार 190 अरब डॉलर का है।

उनका कहना है कि भारतीय विदेश व्यापार में पारदर्शिता होने से अमेरिका की शुल्क नीति से भारत कम प्रभावित होगा। हालांकि अभी अमेरिका की पारस्परिक शुल्क नीति और व्यापार को लेकर रोजाना आ रहे बयानों से भारत पर पड़ने वाले असर को लेकर कुछ भी स्पष्ट नहीं है।

आर्ट निर्भर भारत: कला और संगीत के उत्थान का अनूठा मंच

भारत की पारंपरिक और समकालीन कला को एक नई पहचान देने के लिए 'आर्ट निर्भर भारत' एक प्रभावशाली पहल के रूप में उभर रहा है। यह मंच न केवल कलाकारों को उनकी उत्कृष्टता प्रदर्शित करने का अवसर देता है, बल्कि उनकी मेहनत, रचनात्मकता और संघर्ष की कहानियों को भी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत करता है।

सूरजकुंड मेला: कला और शिल्प के सम्मान का पर्व

7 फरवरी से 23 फरवरी 2025 तक आयोजित सूरजकुंड अंतरराष्ट्रीय मेला कला, शिल्प और संस्कृति प्रेमियों के लिए एक अद्भुत मंच साबित हुआ। मेले के अंतिम दिन, सूरजकुंड प्रशासन विभाग द्वारा राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के बेहतरीन शिल्पकारों को सम्मानित किया गया। इस विशेष अवसर पर प्रदान किए गए प्रमाणपत्रों को डॉ. अंकुर शरण द्वारा लिखा गया, जो 'आर्ट निर्भर भारत' अभियान के अंतर्गत देश के युवा कलाकारों को प्रेरित करने का कार्य कर रहे हैं।

डॉ. अंकुर शरण न केवल रेड क्रॉस फरीदाबाद से जुड़े हैं, बल्कि फरीदाबाद प्रशासन विभाग भी उनकी सेवाओं का उपयोग प्रमाणपत्र लेखन, कला पहल और जागरूकता अभियानों के लिए करता है। उनका यह प्रयास न केवल कलाकारों को पहचान दिलाता है, बल्कि देश की सांस्कृतिक विरासत को भी मजबूत करता है।

कलाकारों की कहानियों को मिलेगी नई पहचान

आर्ट निर्भर भारत के तहत इन सम्मानित कलाकारों की कहानियों को आगामी संस्करण में प्रकाशित किया जाएगा, जिससे उनकी जीवन यात्रा और रचनात्मकता देश के युवाओं तक पहुंच सके। इस पहल के माध्यम से आम लोगों की असामान्य कला को वैश्विक मंच तक पहुँचाने का लक्ष्य है। यह आवश्यक है कि समाज उन कलाकारों की संघर्ष और सफलता की कहानियों को जाने, जिन्होंने अपनी कला के बल पर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर पहचान बनाई।

अंकुर शरण और उनकी टीम का समर्पण

डॉ. अंकुर शरण, जो स्वयं एक कला प्रेमी हैं, इस मिशन में पूरी निष्ठा से जुटे हुए हैं। वे अपनी टीम के साथ मिलकर युवा कलाकारों को नई संभावनाओं से जोड़ने और उन्हें सशक्त बनाने के लिए विभिन्न मंचों पर कार्य कर रहे हैं। उनका उद्देश्य है कि कला केवल एक शौक न रहकर, आजीविका का भी एक मजबूत साधन बने।

युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत बनेगी यह पहल

यह पहल देश के युवाओं के लिए एक प्रेरणास्रोत होगी, जिससे वे समझ सकेंगे कि कला केवल आत्म-संतोष का साधन नहीं, बल्कि समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का भी एक सशक्त माध्यम हो सकती है। 'आर्ट निर्भर भारत' के माध्यम से कलाकारों की रचनात्मकता को नई उड़ान मिलेगी और वे वैश्विक मंच पर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा सकेंगे।

यह अभियान केवल एक सम्मान समारोह तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि यह एक निरंतर चलने वाली यात्रा होगी, जो कला और संस्कृति को जीवंत बनाए रखेगी और भारत को एक सशक्त सांस्कृतिक महाशक्ति के रूप में स्थापित करेगी।

वर्ल्ड एनजीओ डे पर विशेष पहल

27 फरवरी को विश्व एनजीओ दिवस के अवसर पर, ग्लोबल कन्फेडरेशन ऑफ एनजीओज के प्रबंधन ट्रस्टी के रूप में डॉ. अंकुर शरण ने प्रमुख एनजीओ के साथ मिलकर उनकी कहानियों और कला रूपों को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता जताई है। यह पहल समाज के उन अनसंग हीरोज को सामने लाने का प्रयास है, जिन्होंने अपनी कला और सेवा से राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई है।

भुवनेश्वर में प्रवेश और निकास द्वार पर लगेंगे एआई कैमरे, अपराधियों की होगी पहचान

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर : राजधानी की सुरक्षा एआई कैमरे करेंगे। ये कैमरे भुवनेश्वर के प्रवेश और निकास मार्गों पर लगाए जाएंगे। एआई कैमरे दया ब्रिज, एयरफील्ड पुलिस स्टेशन के पास सुंदरपाड़ा-जटनी रोड, पत्रापड़ा चौक, चंदका चौक, नंदनकानन-बारंग चौक, हंसपाल चौक और पुरी बाईपास पर साईं मंदिर चौक पर लगाए जाएंगे।पुलिस कमिश्नर एस. देवदत्त सिंह ने यह जानकारी दी है। जानकारी के अनुसार, भुवनेश्वर में अब 1800 सीसीटीवी कैमरे लगा दिए गए हैं। जनसंख्या वृद्धि के कारण अब अपराध रोकने के लिए कैमरों की कमी हो गई है। इसलिए, अपराध संभावित क्षेत्रों, यातायात चौराहों, दुर्घटना संभावित सड़कों, एटीएम स्थानों और चोरी-डकैती वाले क्षेत्रों में एआई कैमरे लगाने की योजना बनाई जा रही है। ताकि अपराधी को आसानी से पकड़ा जा सके। इसलिए, अधिक एआई कैमरों का प्रस्ताव किया गया है। सरकार को एक निविदा प्रस्तुत की गई है। प्रौद्योगिकी के माध्यम से अधिक सेवाएं प्रदान करने में एआई कैमरे महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

ये कैसी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता ?

इन दिनों देश में कामेडी(हास्य) के नाम पर फूहड़ता और अश्लील सामग्री पेश करने की लगातार बढ़ रही प्रवृत्ति को लेकर बहस छिड़ी हुई है। वास्तव में डिजिटल प्लेटफॉर्मों के नियमन हेतु सख्ती बहुत ही जरूरी और आवश्यक हो गई है। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज डिजिटल प्लेटफॉर्मों के नियमन पर सख्ती नहीं होने के कारण आज कोई भी डिजिटल प्लेटफॉर्मों का ग़लत इस्तेमाल कर बैठते हैं।अभिव्यक्ति की आजादी की आड़ में सार्वजनिक मंच या ओटीटी प्लेटफार्म्स के जरिए आज बहुतायत में ऐसी फूहड़, अश्लील,अमानक व उल्टी-सीधी कोई भी

सामग्री परोसी जा रही है, जो हमारे समाज के नैतिक मूल्यों, आदर्शों, हमारी पारिवारिक मान्यताओं पर सीधे प्रहार करती है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि पिछले दिनों एक विवादास्पद मामले में माननीय सुप्रीम कोर्ट की सख्ती के बाद हमारे देश के केंद्रीय सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने संबंधित कानूनों के अनुपालन की जरूरत महसूस करते हुए ओटीटी प्लेटफॉर्म्स के लिये एक एडवाइजरी जारी की है, जो कि बहुत अच्छी बात है, क्योंकि आज के इस आधुनिक युग में हम लगातार हमारे पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्यों को भूलकर पाश्चात्य संस्कृति की ओर बढ़ते नजर आते हैं। हमारे संस्कृति, संस्कारों, नैतिक मूल्यों का आज पतन होता चला जा रहा है और कहना ग़लत नहीं होगा कि आज हम पाश्चात्य संस्कृति में रच-बस गए से प्रतीत होते हैं।आज सोशल नेटवर्किंग साइट्स, यू-ट्यूब पर आजादी का अतिक्रमण देखने को मिल रहा है, जो हमारे देश की संस्कृति तो कतई नहीं है। यह काबिले-तारीफ है कि भारत के सूचना व प्रसारण मंत्रालय ने ओटीटी प्लेटफॉर्म हेतु एडवाइजरी जारी करते हुए संबंधित कानून के सभी प्रावधानों के अनुपालन सुनिश्चित किए जाने की बात कही है। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज इंटरनेट और सोशल मीडिया के इस दौर में अभिव्यक्ति की आजादी की सीमाओं के निर्धारण की नितांत आवश्यकता है। भारत विश्व का एक ऐसा देश रहा है जहां हमेशा-हमेशा से अभिव्यक्ति की आजादी का सम्मान किया गया है। कहना ग़लत नहीं होगा कि समय-समय पर माननीय सुप्रीम कोर्ट समेत देश के कई उच्च न्यायालयों ने अभिव्यक्ति की आजादी को अक्षुण्ण बनाये रखने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। हाल ही में इंडिया गॉट टेलेंट कार्यक्रम में यूट्यूबर-पॉडकास्टर रणवीर इलाहाबादिया की ओर से जो अमर्यादित टिप्पणी की गई उसको लेकर देशभर में बवाल मचा। पाठक जानते होंगे कि यह मामला इतना गरमाया कि यह सर्वोच्च न्यायालय तक जा पहुंचा। कहना ग़लत नहीं होगा कि रणवीर को गिरफ्तारी से अंतरिम राहत देते हुए शीर्ष अदालत ने जो टिप्पणियां की हैं, उसके गहरे मायने हैं। अदालत ने उनसे पूछा कि 'आपने अपने कार्यक्रम में जो कुछ बोला, वह यदि अश्लीलता नहीं है, तो फिर उसके मापदंड क्या हैं ?' न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने कहा कि 'रणवीर और उनके साथियों ने जैसी विकृत मानसिकता का प्रदर्शन किया और जो शब्द उन्होंने चुने, उनसे माता-पिता, बहनें-बेटियां व भाई शर्मिंदा होंगे। उनके दिमाग में जो गंदगी है, वही इस शो के जरिए बाहर आई है।' बहरहाल, हालांकि, यह बात अलग है कि अदालत ने इस मामले में अतिरिक्त एफआईआर दर्ज करने पर रोक लगा दी। इस मामले में राज्य प्रशासन को उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने के आदेश भी दिए, लेकिन रणवीर को इस कार्यक्रम के प्रसारण के चंद घंटों के भीतर देश में भारी विरोध का सामना करना पड़ा। इसके लिए उन्हें न केवल सार्वजनिक रूप से माफी मांगनी पड़ी, बल्कि यूट्यूब से अपने कार्यक्रम के तमाम भागों को भी हटाना पड़ा। इतना ही नहीं, पाठकों को बताता चलूं कि अदालत की अनुमति के बिना वे विदेश नहीं जा सकेंगे। उन्हें अपना पासपोर्ट पुलिस स्टेशन में जमा करना होगा। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि इसी क्रम में शीर्ष अदालत ने उनके सह-आरोपी आशीष चंचलानी के खिलाफ गुवाहाटी में दर्ज एफआईआर को निरस्त करने/मुंबई ट्रांसफर करने की मांग करने वाली याचिका पर सुनवाई करते हुए असम और महाराष्ट्र सरकार को नोटिस जारी किया है। गौरतलब है कि अदालत ने चंचलानी की याचिका को रणवीर की याचिका के साथ टैग कर दिया है। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि आज सामाजिक मूल्यों का संरक्षण बहुत ही जरूरी है। यह ठीक है कि भारतीय संविधान का अनुच्छेद 19 भाषण की स्वतंत्रता प्रदान करता है, जो मौखिक/लिखित/इलेक्ट्रॉनिक/प्रसारण/प्रेस के माध्यम से बिना किसी डर के स्वतंत्र रूप से अपनी राय व्यक्त करने का अधिकार है।संविधान के अनुच्छेद 19(1)(क) के पीछे का दर्शन संविधान की प्रस्तावना में निहित है, जहाँ सभी नागरिकों को विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने का संकल्प दिया गया है। वास्तव में यह अधिकार हमारे सामाजिक कल्याण, आत्मविकास, लोकतान्त्रिक मूल्यों की रक्षा तथा बहुलवाद को प्रतिबिंबित एवं सुदृढ़ करने के लिए दिया गया है, लेकिन यह विडंबना ही है कि आज इसका दुरूपयोग किया जा रहा है और सभी सामाजिक, सांस्कृतिक सीमाओं को लांघकर अच्छी व सकारात्मक मानसिकता का परिचय नहीं दिया जा रहा है। वास्तव में, यूट्यूबर-पॉडकास्टर रणवीर इलाहाबादिया की अमर्यादित, अशालीन टिप्पणी से समाज शर्मशार हुआ है, लेकिन इस प्रकरण ने अभिव्यक्ति की आजादी की सीमाओं के नियमन की बहस को नये सिरे से शुरू कर दिया।बहरहाल, सहिष्णुता, समन्वय की भावना, गौरवशाली इतिहास, संस्कार, रीति-रिवाज और उच्च आदर्शों, उच्च मूल्यों, प्रतिमानों, के कारण भारतीय संस्कृति विश्व में सर्वश्रेष्ठ रही है। विवेक और ज्ञान भारतीय संस्कृति की आत्म भावना है। हमारी सनातन संस्कृति में सदाचार रूपी पवित्र संस्कारों की शिक्षा-दीक्षा दी जाती रही है, हमें यह चाहिए कि हम अपनी संस्कृति, संस्कारों, नैतिक मूल्यों, आदर्शों और परंपराओं की रक्षा करें, पारिवारिक जीवन मूल्यों का अतिक्रमण करने वाली टिप्पणियों पर रोक जरूरी है।देश की शीर्ष अदालत का मानना रहा है कि यूट्यूब जैसे मंचों पर सामग्री साझा करने पर नियंत्रण हेतु कानून निष्प्रभावी नजर आते हैं। इसलिए निश्चित रूप से संविधान प्रदत्त अभिव्यक्ति की आजादी के दुरुपयोग पर अंकुश लगाने की जरूरत है। कहना ग़लत नहीं होगा कि संस्कारों के द्वारा मानवीय मन को निर्मल, सन्तुलित एवं सुसंस्कृत बनाया जाता है। सच तो यह है कि जीवन में काम आने वाले सत्यवृत्तियों का बीजारोपण भी संस्कारों से ही होता है। संस्कृति और संस्कार हमारी भारतीय संस्कृति का मूल हैं और हमें यह चाहिए कि हम अपने मूल से न हटें और मर्यादाओं का पालन करें। पाश्चात्य संस्कृति की आड़ में हास्य के नाम पर कुछ भी परोसना किसी भी हाल और परिस्थितियों में जायज नहीं है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर,

पहाड़ों की सुंदरता पर कुछ और कविताएँ:

पहाड़ की पुकार

पहाड़ की पुकार सुनो,
चोटियों की ऊंचाई देखो।
हरियाली की चादर ओढ़ी,
प्राकृतिक सुंदरता का खजाना है।

पहाड़ की नदियाँ बहती हैं,
पानी की धारा संगीत बनाती हैं।
पेड़ों की शाखाएँ झूमती हैं,
प्राकृतिक सौंदर्य का अनुभव कराती हैं।

पहाड़ों की यादें

पहाड़ों की यादें ताज़ा हैं,
चोटियों की ऊंचाई दिल में बसी है।
हरियाली की चादर में लिपटकर,
प्राकृतिक सुंदरता का अनुभव किया है।

पहाड़ों की शांति मन को भाती है,
प्राकृतिक सुंदरता से दिल भर जाता है।
पहाड़ों की यादें हमेशा रहती हैं,
प्राकृतिक सौंदर्य का अनुभव हमेशा रहता हा।

पहाड़ की सुंदरता

पहाड़ की सुंदरता अनोखी है,
चोटियों की ऊंचाई अद्भुत है।
हरियाली की चादर ओढ़ी है,
प्राकृतिक सुंदरता का खजाना है।

पहाड़ की नदियाँ बहती हैं,
पानी की धारा संगीत बनाती हैं।
पेड़ों की शाखाएँ झूमती हैं,
प्राकृतिक सौंदर्य का अनुभव कराती हैं।

पहाड़ों का जादू

पहाड़ों का जादू देखो,
चोटियों की ऊंचाई में खो जाओ।
हरियाली की चादर में लिपटकर,
प्राकृतिक सुंदरता का अनुभव करो।

पहाड़ों की शांति मन को भाती है,
प्राकृतिक सुंदरता से दिल भर जाता है।
पहाड़ों की यादें हमेशा रहती हैं,
प्राकृतिक सौंदर्य का अनुभव हमेशा रहता है।

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह सहज हरदा मध्य

चुनौती है बढ़ता तापमान, बदलता वायुमंडलीय पैटर्न

प्रियंका सौरभ

पृथ्वी की जलवायु को नियंत्रित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक ध्रुवीय क्षेत्रों में तैरती समुद्री बर्फ की मात्रा है। हालाँकि, बदलते वायुमंडलीय पैटर्न और बढ़ते तापमान के कारण, यह घटकर 15-76 मिलियन वर्ग किमी के रिकॉर्ड निम्न स्तर पर आ गया है। वैश्विक तापमान में वृद्धि हो रही है, समुद्री धाराएँ अशांत हो रही हैं, तथा इस गिरावट के कारण चरम मौसम की घटनाएँ और भी बदतर हो गई हैं। दुनिया भर में चरम मौसम की घटनाएँ पृथ्वी की जलवायु में परिवर्तन से प्रभावित हो रही हैं। भीषण वन्य आग, वर्षों तक चलने वाला सूखा, भारी वर्षा, भयंकर बाढ़, भूमि और समुद्र में रिकॉर्ड तोड़ गर्मी की लहरें, तथा तूफानों के दौरान व्यापक बाढ़ की आवृत्ति और तीव्रता सभी बढ़ रही है। औद्योगिक क्रांति के बाद से, मानवीय गतिविधियों विशेष रूप से जीवाश्म ईंधनों के जलने के कारण ग्रीनहाउस गैसों की वायुमंडलीय सांद्रता में तीव्र वृद्धि हुई है। मीथेन, कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य गैसें एक कम्बल की तरह काम करती हैं, जो गर्मी को रोक लेती हैं और जैसे-जैसे उनकी सांद्रता बढ़ती है, पृथ्वी को गर्म करती हैं। परिणामस्वरूप पृथ्वी पर हवा और महासागर गर्म हो जाते हैं। भूमि पर बर्फ पिघलती है, मौसम का पैटर्न बदलता है, तथा जल चक्र इस तापमान वृद्धि से प्रभावित होता है, जिससे चरम मौसम की स्थिति और खराब हो जाती है। जलवायु परिवर्तन हमारे समाज को अनेक तरीकों से प्रभावित करता है।

सूखे से मानव स्वास्थ्य और खाद्य उत्पादन पर असर पड़ सकता है। बाढ़ से बुनियादी ढांचे और पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान पहुँच सकता है और बीमारी फैल सकती है। खाद्य उपलब्धता में परिवर्तन और श्रमिक उत्पादकता को सीमित करने के अलावा, सूखा, बाढ़ और अन्य मौसम सम्बंधी घटनाओं के कारण उत्पन्न मानव स्वास्थ्य समस्याएँ भी मृत्यु दर को बढ़ाती हैं। हमारी परिवहन और संचार प्रणालियों के भौतिक बुनियादी ढांचे में सड़कें, पुल, बंदरगाह, विद्युत ग्रिड, ब्रॉडबैंड इंटरनेट और अन्य घटक शामिल हैं। इसे अक्सर कई वर्षों तक चलने के लिए डिज़ाइन किया जाता है। इसलिए अधिकांश समुदायों में बुनियादी ढांचे का निर्माण जलवायु परिवर्तन पर विचार किए बिना किया गया था। वर्तमान बुनियादी ढांचा हवा, बर्फ, बाढ़, भारी बारिश या तापमान में उतार-चढ़ाव जैसी गंभीर मौसम स्थितियों को संभालने में सक्षम नहीं हो सकता है। इन घटनाओं के प्रभाव कई अलग-अलग रूप ले सकते हैं। उदाहरण के लिए, उच्च तापमान के कारण घर के अन्दर अधिक ठंडक की आवश्यकता होती है, जिससे ऊर्जा ग्रिड पर दबाव पड़ सकता है। अप्रत्याशित रूप से अत्यधिक वर्षा के कारण आने वाली बाढ़, जो तूफानी जल निकासी क्षमता से अधिक होती है, प्रमुख मार्गों, व्यवसायों और राजमार्गों को बंद कर सकती है।

समुद्र स्तर में वृद्धि के कारण तटीय अवसंरचना, जैसे जल आपूर्ति, सड़कें, पुल और बहुत कुछ, खतरे में हैं। चूंकि बहुत-सी आबादी तटीय क्षेत्रों में रहती है, अतः इससे होने वाले जोखिम से लाखों लोग प्रभावित होंगे। इसके अलावा, समुद्र स्तर में वृद्धि से तटीय कटाव और उच्च ज्वार के कारण बाढ़ आ सकती है। शोध से पता चलता है कि कुछ समुदाय वर्ष 2100 तक समुद्र तल पर या उससे नीचे पहुँच जाएंगे। अब यह उन पर निर्भर करेगा कि वे क्या करें। प्रबंधित वापसी नामक प्रक्रिया के दौरान, समुदाय संभवतः तटरेखा से दूर चले जाएंगे और अपने बुनियादी ढांचे में बदलाव करेंगे। समुद्री बर्फ में वैश्विक गिरावट के लिए मुख्य रूप से महासागरीय ऊष्मा परिवहन ज़िम्मेदार है। जब गर्म महासागरीय धाराएँ ध्रुवीय क्षेत्रों में प्रवेश करती हैं, तो समुद्री बर्फ आधार पर तेजी से पिघलती है। अटलांटिक मेरिडियनल ओवरटर्निंग सर्कुलेशन (एएमओसी) द्वारा गर्म पानी आर्कटिक में लाया जाता है, जो बर्फ की स्थिरता को कम करता है। ये जलवायु पैटर्न समुद्री और वायुमंडलीय स्थितियों के साथ-साथ बर्फ के निर्माण और पिघलने की दर को भी प्रभावित करते हैं। 2015-2016 की अल नीनो घटना ने समुद्र के तापमान में वृद्धि करके अंटार्कटिका के समुद्री बर्फ को रिकॉर्ड निम्न स्तर पर पहुँचा दिया। बड़े ज्वालामुखी विस्फोटों से एरोसोल निकलते हैं, जिनमें अस्थायी रूप से वायुमंडल को ठंडा करने की क्षमता होती है, लेकिन वे दीर्घकालिक रूप से महासागरों के गर्म होने में भी योगदान देने वाले कारक हो सकते हैं। 2022 के हंगा टोंगा विस्फोट से जल वाष्प समताप मंडल में छोड़ा गया, जिससे समय के साथ वार्मिंग प्रभाव में संभावित रूप से वृद्धि हुई। अधिक शक्तिशाली तूफानों के कारण नाज़ुक समुद्री बर्फ टूट जाती है, जिससे पिघलने और समुद्री धाराओं के कारण उसके प्रभावित होने की संभावना बढ़ जाती है। 2024 में बेरेंट्स और बेरिंग सागर में तूफानों के कारण बर्फ टूट जाएगी, जिसके परिणामस्वरूप आर्कटिक सागर में बर्फ का आवरण रिकॉर्ड निम्न स्तर पर पहुँच जाएगा। मीथेन औरकार्बन डाईऑक्साइड वायुमंडल में ऊष्मा को रोकते हैं, जिससे वैश्विक तापमान बढ़ता है और ध्रुवीय बर्फ पिघलने की प्रक्रिया तेज हो जाती है। औद्योगिक क्रांति के कारणकार्बन डाईऑक्साइड के स्तर में नाटकीय वृद्धि के कारण, आर्कटिक समुद्री बर्फ 1981 से प्रति दशक 12-2% की दर से घट रही है। महासागर का अम्लीकरण और वायुमंडलीय तापमान में वृद्धि कोयला, तेल और गैस के जलने से निकलने वाले प्रदूषकों के कारण होती है। आर्कटिक प्रवर्धन वह प्रक्रिया है जिसके तहत औद्योगिक गतिविधियों से उत्पन्न ऊष्मा-अवशोषित उत्सर्जन के कारण आर्कटिक वैश्विक औसत से चार गुना अधिक तेजी से गर्म हो जाता है। जब वन नष्ट होते हैं, तो कम कार्बन अवशोषित होता है और जब शहर बढ़ते हैं, तो अधिक गर्मी बरकरार रहती है, जो वायुमंडलीय परिसंचरण को प्रभावित करती है। समुद्री बर्फ का क्षरण और वैश्विक तापमान वृद्धि अप्रत्यक्ष रूप से अमेज़न में वनों की कटाई के कारण होती है, जिससे कार्बन अवशोषण में कमी आती है। आर्कटिक क्षेत्र में ड्रिलिंग और बढ़ती समुद्री गतिविधियाँ समुद्री बर्फ के पारिस्थितिकी तंत्र को बाधित करती हैं और प्रदूषण तथा गर्मी पैदा करती हैं, जो स्थानीय तापमान में वृद्धि में योगदान करती हैं। इस क्षेत्र में प्राकृतिक संसाधनों की खोज के बाद आर्कटिक क्षेत्र में हुई तीव्र गति से इस तंत्र को और अधिक बल मिलने के परिणामस्वरूप ध्रुवीय बर्फ को अधिक क्षति पहुँची है।

पृथ्वी पर समुद्री बर्फ कम होने पर महासागर अधिक गर्मी अवशोषित करते हैं, जिससे एल्बिडो या परावर्तकता कम हो जाती है, तथा तापमान और भी अधिक बढ़ जाता है। आर्कटिक के घटते एल्बिडो प्रभाव के कारण जलवायु परिवर्तन में तेजी आई है, जिसके कारण ध्रुवीय क्षेत्र शेष विश्व की तुलना में दोगुनी तेजी से गर्म हो रहे हैं। बर्फ पिघलने से निकलने वाला ताज़ा पानी लवणता को कम करता है और गहरे समुद्र में परिसंचरण को धीमा कर देता है, जिसका जलवायु विनियमन पर प्रभाव पड़ता है। कमजोर हो रहे अटलांटिक मेरिडियनल ओवरटर्निंग सर्कुलेशन (एएमओसी) से हिंद महासागर क्षेत्र, यूरोप और उत्तरी अमेरिका में मौसम के पैटर्न में बदलाव आने की संभावना है। अप्रत्यक्ष रूप से, समुद्री बर्फ पिघलने से भूमि आधारित बर्फ की चादरों के पिघलने की गति बढ़ जाती है, जिससे दुनिया भर में समुद्र का स्तर बढ़ जाता है। जब सारी बर्फ पिघल जाएगी, तो ग्रीनलैंड की बर्फ की चादर समुद्र के स्तर को लगभग 23 फीट तक बढ़ा देगी। तापमान में परिवर्तन के कारण तूफान, सूखा और गर्म लहरें बढ़ रही हैं, जिससे वायुमंडलीय परिसंचरण प्रभावित हो रहा है। जेट स्ट्रीम आर्कटिक बर्फ के पिघलने से प्रभावित होती है, जिसके कारण उत्तरी अमेरिका और यूरोप में लंबे समय तक गर्म लहरें चलती हैं। समुद्री बर्फ के पिघलने से खाद्य श्रृंखलाएँ गड़बड़ा जाती हैं, जिससे मत्स्य पालन और समुद्री जीवन खतरे में पड़ जाता है, जो ठंडे पानी के आवासों पर निर्भर रहते हैं। संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र प्रभावित हो रहा है, क्योंकि अंटार्कटिका में क्रिल की आबादी घट रही है तथा ध्रुवीय भालू और सील अपने शिकार के मैदान खो रहे हैं।

वैश्विक समुद्री बर्फ में खतरनाक गिरावट को रोकने के लिए जलवायु कार्यवाही निर्णायक होनी चाहिए। ध्रुवीय संहिता जैसे वैश्विक जलवायु संकल्पों को मज़बूत करके, स्वच्छ ऊर्जा परिवर्तन को बढ़ावा देकर तथा भू-इंजीनियरिंग पहलों को वित्तपोषित करके बर्फ की हानि को कम किया जा सकता है। अनुकूली नीतियों और बेहतर ध्रुवीय निगरानी से जलवायु लचीलापन बढ़ेगा। एक टिकाऊ भविष्य उत्सर्जन को कम करने और ग्रह के नाज़ुक क्रायोस्फीयर की रक्षा करने के लिए सभी के दृढ़ संकल्प पर निर्भर करता है। कई समुदायों में जलवायु परिवर्तन के खतरों से निपटने के लिए तैयारी का अभाव है। वैज्ञानिक इस बात पर शोध कर रहे हैं कि वर्तमान और भविष्य में जलवायु परिवर्तन से समुदायों पर किस प्रकार प्रभाव पड़ रहा है, तथा वे सर्वोत्तम तरीकों का सुझाव दे सकते हैं। भविष्य में जलवायु सम्बंधी जोखिमों को झेल सकने वाले लचीले बुनियादी ढांचे में निवेश करना समुदायों के लिए महत्वपूर्ण है। हमारे समाज के सभी सदस्यों, जिनमें शिक्षक, जोखिम संचारक, आपातकालीन प्रबंधक और नगर नियोजक शामिल हैं, को इस बारे पर्यावरणीय शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। पर्यावरणीय शिक्षा के माध्यम से कोई भी व्यक्ति सीख सकता है कि जलवायु परिवर्तन के लिए कैसे तैयार रहा जाए।

किस-किसकी झोली में समाया दुलार...!

सच, वो कैसे संभाल रही होंगी अपने आप को,
दिलों जान से छोड़ गया चाहने वाला साथ को।
ऐसे असमय जाना उन्हें कितना अख़रता होगा,
आँसूओं को छोड़ो मन कितना पिघलता होगा।
ज़िक्र हो, जवाब दे जाती होगी उनकी हिम्मत,
ऐसे तो न छूटना था साथ पर यहीं थीं किस्मत।

सच वह कैसे संभाल रही होंगी अपने आप को,
दिलों जान से छोड़ गया चाहने वाला साथ को।
ईश्वर इतनी जल्दी क्यों? बुलाया मेरे दोस्त को,
हम सबके हृदय में जगह बनाने वाले होस्ट को।
क्या? दोष दे अब हम आप व आपके यम को,
सारी ज़न्दिगीभर भूला ना सकेंगे इस ग़म को।

सच वह कैसे संभाल रही होंगी अपने आप को,
दिलों जान से छोड़ गया चाहने वाला साथ को।
ज़ब आती हैं याद तब कैसे संभलता होगा दिल,
रूह काँप उठी होगी, होता होगा उन्हें भी फील।
आनंद मेरे यार, तुम कितना छोड़ गए हो प्यार,
न जाने किस-किसकी झोली में समाया दुलार।
(सन्दर्भ : मित्र आनंद देशमुख को विनयांजलि)

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023